अनिल गर्ग
ये रात बड़ी कातिल है
jजासूस अनुज सिरीज़

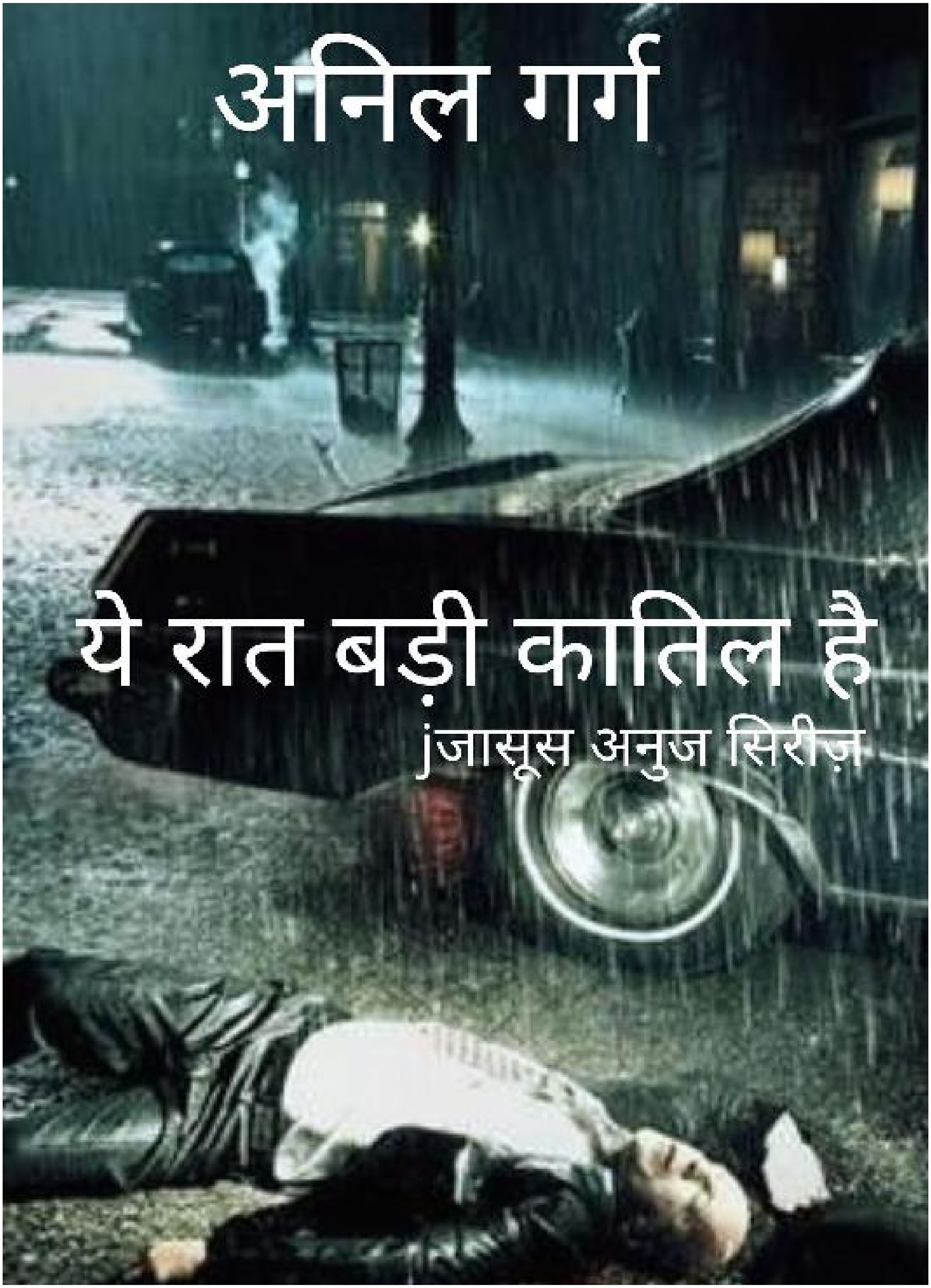
अनिल गर्ग
ये रात बड़ी कातिल है
jजासूस अनुज सिरीज़

अनिल गर्ग

ये रात बड़ी कातिल है

(जासूस अनुज सिरीज़)

Contents

बरसात की रात -1

अगली मनहूस सुबह -2

वो अनजानी लाश -3

रागिनी का आगमन -4

कुमार गौरव --5

सौम्या,देविका और मेघना -6

उलझती गुत्थी -7

पिस्टल का मिलना -8

थाने मे हाजिरी -9

देवप्रिय की छुट्टी -10

गुमशुदा गौरव -11

सौम्या से मुलाक़ात -12

कौन है सौम्या-13

कुमार गौरव की लाश -14

भगवान सिंह की बेरुखी-15

मुझे पुलिस हिरासत मे लिया गया -16

रागिनी का चेलेंज -17

तान्या-18

देविका,संध्या और गैंगस्टर -19

खबरी का आगमन -20

मुठभेड़ -21

सेंट्रल जेल-22

चन्दन की हत्या -23

एक और मुठभेड़ की तैयारी -24

धीरज बवानीया का सफाया-25

गुरु की पुलिस हिरासत से मुक्ति-26

फिर एक लाश-27
तान्या ने बताया की वो लाश किसकी थी-28
देविका और मेघना की हत्या-29
अपराधी कौन-30

बरसात की रात -1

रात 8 बजे!
इस बार दिल्ली की सर्दियों में बारिश अपना अलग ही स्यापा कर रही थी। कहने वाले तो कहने लगे थे कि,दिल्ली भी बारिश के मामले में अब मुम्बई बनती जा रही है। एक तो जनवरी के पहले सप्ताह की कड़ाके की सर्दी और उस पर ये बारिश का कहर। मैं उसी सर्दी की मार से बचने के लिए इस वक़्त अपने फ्लैट में अपने बेड पर और अपनी ही रजाई में लिपट कर अपनी सर्दी को दूर भगाने का प्रयास कर रहा था।
अब आप भी सोच रहे होंगे की ये कौन अहमक इंसान है,जो बेवजह दिल्ली के मौसम का आँखों देख़ा हाल सुना रहा है।वैसे तो अभी तक आपने अपने इस सेवक को पहचान ही लिया होगा,लेकिन फिर भी मैं आपको बता दूं कि मैं अनुज!दिल्ली में एक छोटा मोटा जासूसी का धंधा करता हूँ…न न मैं कोई रा का एजेंट नही हूँ,मैं तो एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ,जो सिर्फ कत्ल के केस में ही अपनी टांग घुसाता है। जासूसी के बाकी धंधो मसलन,शक धोखा,पीछा,तलाक जैसे सड़कछाप धंधों से मैं दूर ही रहता हूँ। बन्दे को बचपन से ही जासूसी उपन्यास पढ़ने का शौक इस कदर था,की जिस उम्र में मुझें स्कूल की किताबें पढ़नी चाहिए थी,उस उम्र में मैं दिन रात जासूसी किस्से कहानिया पढ़ा करता था। इसी वजह से अपुन का मन भी सिर्फ जासूसी में ही अपना मुकाम बनाने का करने लगा था।वैसे तो आपका ये सेवक जासूसी में दिल्ली से लेकर मेरठ आगरा,मुम्बई और राजस्थान तक अपने झंडे गाड़ चुका था,और आज किसी परिचय का मोहताज नही था,लेकिन मेरी एक नकचढ़ी सेक्रेटरी है,जिसका नाम रागिनी है,वो बन्दे की इस काबलियत की जरा भी कदर नही करती है,उसकी नजर में अपन आज भी घर की मुर्गी दाल बराबर है,लेकिन उसकी महिमा का बखान मैं बाद में करूँगा, इस वक़्त आपके इस जिल्ले इलाही के फ्लैट को कोई बुरी तरह से पिट रहा था। दरवाजा इतनी बेतरतीबी से पीटा जा रहा था कि, मानो कोई दरवाजा तोड़कर अंदर घुसना चाहता हो,मैं हड़बड़ा कर अपनी रजाई में से निकला और दराज में से अपनी पिस्टल निकाल कर अपने बरमूडा में फँसाई और तेज कदमो दरवाजे की ओर बढ़ा और दरवाजे के पास जाकर ठिठक गया।
"कौन है,क्यो दरवाजा तोड़ने पर आमादा हो"मैंने बन्द दरवाजे के पीछे से ही बोला।
"दरवाजा खोलो!मैं बहुत बड़ी मुसिबत में हूँ"ये किसी लड़की की घबराई हुई आवाज थी। अब एक तो लड़की और ऊपर से मुसीबतजदा,और ऊपर से गुहार भी उस इंसान से लगा रही थी,जो मुसीबतजदा लड़कियों का सबसे बड़ा खैरख्वाह था, तो अब दरवाजा खोलना तो बनता था,सो मैंने दरवाजा खोला और फोरन से पेश्तर खोला।दरवाजा खोलते ही मुझे यू लगा मानो कोई आंधी तूफान कमरे में घुस आया हो,वो लडकी डेढ़ सौ किलोमीटर की रफ्तार से कमरे में घुसी और सीधा मेरे बेड पर बैठ गई।मै किंकर्तव्यमूढ़ सा बस उस

लड़की की ओर देखता रहा,उस मोहतरमा में एक बार भी मुझ से अंदर आने के लिए पूछना गवांरा नही समझा था।
"दरवाजा बंद करो न,ऐसे क्या देख रहे हो,कभी कोई लडकी नही देखी क्या"उस लड़की की आवाज जैसे ही मेरे कानो में पड़ी,मैंने हड़बड़ा कर दरवाजे को बन्द कर दिया। दरवाजा बंद करते ही मेरी नजर उस लड़की पर पहली बार पूरी नजर पड़ी थी। लड़की उची लंबे कद की बेइंतेहा खूबसूरत थी। उसके कटीले नैन नक्श पर उसका मक्खन में सिंदूर मिला रंग तो कयामत ही ढा रहा था।उसे ध्यान से देखते ही मेरे दिल की घण्टिया किसी मंदिर के घड़ियाल की तरह से बजने लगी थी। पता नही साला ये अपनी उम्र का तकाजा था या अभी तक कुंवारा रहने का नतीजा था कि,आजकल अपुन को हर लड़की खूबसूरत लगती थी। मुझे इस तरह से कुत्ते की तरह से अपनी तरफ घूरते हुए देखकर वो लड़की अब बेचैनी से अपना पहलू बदलने लगी थी।
"हो गया हो तो,अब इधर भी आ जाओ"उस लड़की को शायद ऐसी कुत्ति निग़ाहों का अच्छा खासा तजुर्बा था। होता भी क्यो नही,जो जलवा उसकी खूबसूरती का था,उसके मद्देनजर तो जिसने भी डाली होगी मेरे जैसी कुत्ति नजर ही डाली होगी। लेकिन आपके इस सेवक ने लड़की के बोलते ही अपनी इस छिछोरी हरकत पर ब्रेक लगाई,और चहलकदमी करता हुआ उसके सामने आकर खड़ा हो गया। एक तो साला सर्दी का मौसम,ऊपर से कड़कड़ाती बरसात,और अब ये कहर बरपाती मेरे ही बेड पर बैठी हुई मोहतरमा,मेरी जगह कोई और होता तो अभी तक इस खूबसूरत बला के साथ पूरी रात की योजना अपने ख्यालों में बना चुका होता,लेकिन अपनी नजर भले ही कितनी भी कुत्ती हो,दिल शीशे की तरह से साफ है।
"कौन हो तुम,और इतनी बरसात में मेरे पास क्यो आई हो"मै अब उसकी सुंदरता के खुमार से कुछ कुछ निकलते हुए बोला।
"मेरी जान खतरे में है,मुझे कोई मारना चाहता है"उस लड़की की आवाज में फिर से घबराहट का पुट आ चुका था।
"लेकिन आपको मेरे बारे में किसने बताया कि मैं मुसीबतजदा हसीनाओं की मदद आधी रात को भी सिर के बल चल कर करता हूँ"मैं अब अपनी जासूस वाली फोम में आता जा रहा था।
"मैं आपको नही जानती,मेरे पीछे तो कुछ लोग लगे हुए थे,मैं तो उनसे बचने के लिए आपके फ्लैट का दरवाजा पीटने लगी थी"उन मोहतरमा ने जो बोला था,वो मेरे लिए अनपेक्षित था,ऐसे कोई जबकि सर्दियो के दिनों में आठ बजते ही आधी रात का आलम लगने लगता है,क्यो किसी अंजान के घर मे ऐसे घुसेगा और न सिर्फ घुसेगा बल्कि आकर आराम से आकर बेड पर भी बैठ जाएगा।

"आप हो कौन,और कौन लोग है जो आपकीं जान लेना चाहते है"मैंने एक स्वभाविक सवाल किया।
"मेरा नाम अनामिका है,मै यही आपके इलाके के सेक्टर ग्यारह में रहती हूँ,मैं इधर किसी काम से आई थी,लेकिन जब मैं घर वापिस जा रही थी, तो मैंने देखा कि चार लोग मेरा पीछा कर रहे थे,मैं उन्हें देख कर घबरा गई और भागने लगी, तभी आपके फ्लैट पर नजर पड़ी, आपकी लाइट भी जली हुई थी,तो आपके फ्लैट का दरवाजा पीटने लगी"अनामिका ने बोला।
"उन लोगो को आपने पहले भी कभी अपने पीछे आते हुए देखा है,या आज ही देखा था"मै अब उससे सवाल जवाब करने के मूड में आ गया था।
"उन लोगो को तो मैंने आज ही देखा था,लेकिन मुझे कई दिनों से लग रहा है कि कोई मेरा पीछा कर रहा है"अनामिका ने रहस्यमय तरीके से बोला।
"ऐसा लगने का कोई कारण भी तो होना चाहिए, क्या आपको किसी से अपनी जान का खतरा है"मैंने उसके जवाब में से ही सवाल ढूंढा।
"खतरा तो मेरी जान को बहुत है, मुझे नही पता कि मौत किस पल मेरा शिकार कर ले"अनामिका की आवाज से ही ये बोलते हुए उसका डर झलक रहा था।
"कौन लेना चाहता है तुम्हारी जान"मैंने फिर से उसी सवाल को घुमा फिराकर पूछा।
"धीरज!पूरा नाम उसका धीरज खत्री है"अनामिका ने मुझे उस बन्दे का नाम बताया।
"आप धीरज को कैसे जानती है"मेरा ये पूछना स्वभाविक था।
"किसी समय वो मेरा बॉयफ्रेंड था,लेकिन जल्दी ही मुझे ये एहसास ही गया कि मैंने गलत आदमी से प्यार कर लिया है,उसके बाद मैंने उससे अपने रिलेशन ख़त्म कर लिये,और दूसरी जगह शादी कर ली,उसके बाद से वो बन्दा मेरी जान का दुश्मन बना हुआ है"अनामिका ने पूरी बात बताई।
"देखिए मैं एक डिटेक्टिव हूँ…मेरा पाला हर रोज ऐसे लोगो से ही पड़ता है,आप मेरा ये कार्ड रख लीजिए,और कल मेरे आफिस आकर मुझे सभी कुछ डिटेल में बताइये,हो सकता है,इसके बाद आपका बॉयफ्रेंड फिर कभी आपको परेशान न करे"मैंने उसको विश्वास दिलवाने वाले शब्दो मे बोला।
"अगर आपने सच मे मेरा उस आदमी से पीछा छुड़ा दिया तो,आपको आपके वजन के बराबर नोट से तोल दूँगी"अनामिका ने उत्साहित स्वर में बोला।
"लेकिन मैडम इतना बता दीजिए कि वो नोट दस के होंगे या दो हजार के होंगे"मैंने उसकी बात का झोल पकड़ते हुए बोला।मेरी बात सुनकर वो नाजनीन न केवल मुस्कराई बल्कि खिलखिला कर हँस भी पड़ी।
"आप बहुत हाजिर जवाब हो अनुज साहब"अनामिका ने मेरा नाम मेरे विजिटिंग कार्ड पर पढ़ते हुए बोला।

"चलिये अब मैं आपको आपके घर छोड़ देता हूँ,वैसे भी रात अब गहरी होती जा रही है"मैंने अनामिका की तरफ देख कर बोला।
"काफी शरीफ आदमी मालूम पड़ते हो अनुज साहब,वरना मौसम तो आशिकाना है"उस जालिम ने एकाएक ऐसी बात बोलकर मेरे दिल के तारों को झंकृत कर दिया।
"इस मौसम की वजह से ही तो बोल रहा हूँ,आपके कपडे गीले हो चुके है,घर आपका पास में ही है,मैं अपको घर छोड़ देता हूँ,ताकि आप इन गीले कपड़ो से छुटकारा पा सको"मैंने अनामिका की बात को एक नया मोड़ दिया।
"लेकिन मैं अभी घर नही जाना चाहती हूँ,मेरे पति भी आज घर पर नही है,और मुझे ऐसे हालात में डर भी बहुत लगेगा"अनामिका अब सीधे सीधे मेरे गले पड़ रही थी।जबकि मेरी छटी इंद्री मुझे बार बार सचेत कर रही थी। मुझे न जाने क्यो ये लडकी खुद को जो बता रही थी,वो नही लग रही थी।लेकिन इस बार उसने जो बहाना बनाया था,उसने मुझे कुछ बोलने लायक नही छोड़ा था।
"लेकिन देवी जी,ये बन्दा यहां अकेला रहता है,कल को किसी को पता चलेगा तो आपकी बदनामी नही होगी"मैने वो बात बोली,जो आजकल के जमाने मे अपनी अहमियत खो चुकी थी। मेरी इस बात को अनामिका की हँसी ने सही भी साबित कर दिया था।
"किस जमाने मे जी रहे हो अनुज बाबू, आजकल किसके पास इतनी फुर्सत है कि कोई मेरी रातों का हिसाब रखें कि मैं अपनी रात कहाँ किसके साथ बिताकर आ रही हूँ..यार अब ये फालतू की बाते बन्द करो,और अगर एक कप कॉफी पिला सकते हो तो पिला दो"अनामिका मेरे गले पड़ने में कामयाब हो चुकी थी।मैं मरता क्या न करता के अंदाज में अपने किचन की ओर चल दिया। कॉफी की जरूरत तो मुझे भी थी। इसलिए मैंने कॉफी के लिये कोई आनाकानी नही की। मैंने अपने बरमूडा से अपनी पिस्टस्ल को निकाल कर दराज में डाला और कॉफी बनाने के वास्ते किचन की ओर चल दिया।मै कोई दस मिनट के बाद काफी बनाकर जब बैडरूम में पहुंचा तो अनामिका वहां नही थी। मैंने इधर उधर नजर दौड़ाई, लेकिन वो कहीं नजर नही आई।मैंने बाथरूम की तरफ देखा,उसका दरवाजा भी बाहर से ही लॉक था। मैने दरवाजे पर नजर डाली,दरवाजा इस वक़्त हल्का सा खुला हुआ था। मुझे तत्काल इस बात का ध्यान हो आया कि दरवाजा मैंने अनामिका के घर मे घुसते ही बन्द कर दिया था। अब दरवाजा खुला होने का मतलब था कि चिड़िया फुर्र हो चुकी थी। मैंने दोनो कॉफी के कप टेबल पर रखे,और अपने बेड पर धम्म से बैठ गया।
मेरी समझ मे नही आ रहा था की मेरे फ्लैट में आने का उसका मकसद क्या था,और वो जिस तरह से एकाएक गायब हुई है,उसके पीछे उसका उद्देश्य क्या था। अचानक ही मेरे दिमाग मे एक बिजली सी कौंधी और मै अपनी जगह से उछल कर खड़ा हो गया। मैंने तत्काल कमरे में अपनी नजर घुमाई। घर की सभी चीजें अपने स्थान पर यथावत थी। फिर

मैंने दराजो को खंगालना शुरू किया। दराज में नजर पड़ते ही मेरे होश फाख्ता हो चुके थे। आपके इस सेवक की पिस्टल दराज से गायब थी।

अगली मनहूस सुबह -2

मैं एक घँटे के अंदर ही इस वक़्त लोकल थाने में पहुंच गया था। जिस एसआई के पास मुझे ड्यूटी अफसर ने भेजा था,उसका नाम देवप्रिय था। मैंने अपनी आप बीती सुनाई और अपने पिस्टल का लाइसेंस भी उसके सम्मुख प्रस्ततु किया।
"आप बोल रहे हो कि ऐसे बरसात के मौसम में कोई अनजान लडकी आपके फ्लैट पर आई,आपने उसे इंसानियत के नाते पनाह दी,और वो आपके पिस्टल को चुरा कर भाग गई,मतलब आपको ही सेन्धी लगाकर चली गई"देवप्रिय ने मेरी ही बताई हुई बातो को दोहराया।
"जी"मैंने इस बार संक्षिप्त सा जवाब दिया।
"क्या जी!पुलिस को इतना अहमक समझा है क्या,जो आप कोई भी कहानी सुनाओगे और हम उस कहानी पर विश्वास कर लेंगे"देवप्रिय अप्रिय स्वर में बोला। मैंने आहत नजरो से उस पुलिसिये को देखा।
"आपको क्या लगता है कि मैं आपको कोई झुठी कहानी क्यो सुनाऊंगा"मैने उल्टा देवप्रिय से ही सवाल किया।
"या तो तुम उस पिस्टल से कोई कांड करके आये हो,या फिर करने की फिराक में होंगे, पिस्टल चोरी की रपट लिखवाने इसलिए आये हो कि,कल को जब तुम्हारा किया हुआ कांड हमारी नजर में आ जाये,तो आप हमारी ही लिखी हुई रपट को हमारे ही सामने अपनी बेगुनाही का सबूत बनाकर पेश कर सको"देवप्रिय जो भी बोल रहा था,एक पुलिसिया होने के नाते उसे वही बोलना चाहिए था। लेकिन हमेशा किसी भी बात को एक ही नजरिए से नही देखा जाना चाहिए, ऐसा मेरा निजी विचार था,और अब अपने इस विचार से देवप्रिय को अवगत करवाना जरूरी हो गया था।
"देखिए एक पुलिस वाले की हैसियत से आपका सोचना बिल्कुल जायज है,लेकिन हमेशा तस्वीर का एक ही पहलू नही देखना चाहिए, पुलिस की तो ड्यूटी होती है कि वो हर एंगल को देखे"मैंने ये सब देवप्रिय के चेहरे पर अपनी नजरे जमाकर बोला था। इसी वजह से मेरी बातों से जो अप्रिय भाव उसके चेहरे पर आए थे, उन्हें में ताड़ पाया था।
"तो अब आप हमें हमारी ड्यूटी भी सिखाओगे"देवप्रिय अब अपना पुलिसिया रोब झाड़ने पर उतारू हो चुका था।
"अगर जरूरत पड़ी तो सीखा भी सकता हूँ,मुझे लगता है तुमसे तो बात करना ही समय की बर्बादी है, ये बताओ माहेश्वरी साहब अपने रूम में है,या नही"मै उसकी फिजूल की पुलिसिया गिरी से आजिज होकर बोला।
"तो अब साहब लोगो का नाम लेकर भी हमे डराओगे"देवप्रिय पता नही क्यो मुझ से पंगा लेने पर उतारू था।

"मैं डरा नही रहा हूँ,मैं उनसे पूछना चाहता हूँ,की जिन लोगो को पब्लिक डीलिंग करनी नही आती,ऐसे लोगों के पास किसी फरियादी को भेजते ही क्यो हो"मै अब उसको उसकी ही स्टाइल में जवाब दे रहा था।
"मैंने आपसे क्या गलत व्यवहार किया,मैंने अपना वही शक जाहिर किया है,जो मेरी जगह खुद माहेश्वरी साहब होते तो वो भी करते"देवप्रिय ने मेरी बात का जवाब उसी अंदाज में दिया।
"तो अपने शक के चलते आप मेरे पक्ष को नही सुनोगे,या सिर्फ अपने शक की बुनियाद पर ही मुझे फाँसी पर चढ़ा दोगे"मेरी बात सुनकर देवप्रिय को सुझा ही नही की वो जवाब क्या दे।वो चुप्पी साधकर मेरी ओर देखता रहा।
"जनाब मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ,और थोड़े बहुत कानूनों की जानकारी मैं भी रखता हूँ"ये बोलकर अपना विज़िटिंग कार्ड मैंने उसके सामने उसकी टेबल पर रख दिया।उसने मेरा विजिटिंग कार्ड उठाकर गौर से पढ़ा।
"अब तो मेरे शक की बुनियाद और ज्यादा मजबूत हो गई अनुज बाबू, आप एक प्राइवेट डिटेक्टिव है और प्राइवेट डिटेक्टिव तो पैदाइशी खुरापाती होते है,अब सच बोल ही दो की क्या खुरापात कर चुके हों, या कौन सी खुरापात करने जा रहे हो"देवप्रिय एक कुटिल मुस्कान के साथ मुझ से रूबरू हुआ।
"मैं एक कानून का पालन करने वाला बाइज्ज्ज्त शहरी हूँ,जो हर साल बाकायदा सरकार को इनकम टैक्स भी देता है,आपको ये कुर्सी हम जैसे लोगो की मदद करने के लिए दी जाती है, न कि अपने ख्याली पुलाव पका कर किसी शरीफ शहरी को परेशान करनें के लिए दी जाती है,खैर मैं भी आप जैसे अहमक इंसान से क्यो अपना मूढ मार रहा हूँ,मैं अब माहेश्वरी साहब से ही सीधा मिल लेता हूँ,और हाँ आपके किसी के साथ बर्ताव करने के तौर तरीकों की शिकायत भी बाकायदा लिखित मे करूँगा"ये बोलकर मैं तेज कदमो से उसके कमरे से निकल गया,वो बन्दा मेरे पीछे आवाज लगाता हुआ रह गया, लेकिन मैं अब उसकी कोई बात सुनने के मूड में नही था।

****

माहेश्वरी साहब ने मेरी बात सुनते ही देवप्रिय को अपने कमरे में तलब कर लिया था। देवप्रिय कमरे में आकर सावधान की मुद्रा में अपने साहब के सामने खड़ा हो गया था।
"ये अनुज साहब है,कानून के बहुत बड़े मददगार है,और महकमे में काफी लोग इनका सम्मान करते है,इनकी जो भी शिकायत है,उसे दर्ज करके उसकी एक कॉपी इनको दो"माहेश्वरी साहब ने सीधे सपाट लहजें में देवप्रिय को बोला।
"जी जनाब!मैं इनकी शिकायत दर्ज ही कर रहा था,लेकिन शिकायत ऐसी है कि उसके मद्दनेजर मेरा इनसे पूछताछ करना जरूरी हो गया था"देवप्रिय ने मरे हुए स्वर में कहा।

"जब इनकी खोई हुई पिस्टल से हुई कोई वारदात हमारे सामने आ जाये,तब आप अच्छे से अपने सामने बैठा कर इनसे पूछताछ कर लेना,उस समय मैं भी आपके साथ इनसे ढेर सारे सवाल करूँगा,लेकिन अभी सूत न कपास और जुलाहे से लठ्ठमलठ्ठा होने की क्या जरूरत है"माहेश्वरी साहब ने अपनी देशी भाषा मे देवप्रिय को समझाया।
"जी जनाब!मैं इनकी शिकायत दर्ज कर लेता हूँ"ये बोलकर देवप्रिय ने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया। मैं माहेश्वरी साहब का शुक्रिया अदा करते हुए देवप्रिय के पीछे प्रस्थान कर गया

****

थाने से कोई मुझे एक घँटे के बाद निजात मिली थी मैंने घड़ी में समय देखा,रात के ग्यारह बज चुके थे। मैं वापिस अपने फ्लैट पर लौट आया। खुद को बिस्तर के हवाले करने के बाद भी अभी नींद आंखों से कोसो दूर थी। एक बिना वजह की आफत मेरे गले बैठे बिठाए आकर पड़ी थी। बैठें बिठाए नहीं बल्कि लेटे लिटाये पड़ी थी। जब वो आफत की पुड़िया आई थी उस वक़्त मैं खुद को बिस्तर के हवाले कर चुका था।
उस लड़की के बारे में मैं कुछ भी नही जानता था। लेकिन उसकी खोज खबर निकालना तो जरूरी था।मैने एक बार फिर से समय देखने के लिये अपनी दीवार घड़ी पर नजर डाली। साढ़े ग्यारह बज चुके थे। मुझे पक्का यकीन था कि रागिनी अभी सोई नही होंगी।मैंने आज की पूरी घटना रागिनी को भी बताना उचित समझा। मैंने तुरन्त रागिनी को फ़ोन मिला दिया। रागिनी ने फ़ोन को रिसीव किया तो उसकी अलसाई आवाज से पता लगा कि मोहतरमा को मैने नींद से जगा दिया था।
"क्या हुआ!अब रात को नींद नही आने की बीमारी भी हो गई क्या,जो शहर की सुंदर सुंदर लड़कियों को फोन करने लगे"रागिनी ने उठते ही तंज मारा।
"मेरी कॉलर लिस्ट में नाम भूतनी लिखा हुआ आ रहा हैं,सुंदर लड़कियो के नंबर तो मैं विश्व सुन्दरी के नाम सेव करता हूँ"मैंने रागिनी के नहले पर अपना दहला मारा।
"इस भूतनी से बच कर रहना,ये कभी कभी जिंदा इंसानों को भी हजम कर जाती है"रागिनी ने तपी हुई आवाज से बोला।
"चल अब मुझे हजम करने के सपने बाद में देखना और वो सुन जिसके लिये तुम्हे फोन किया है"मै अब बकलोली बन्द करके मतलब की बात पर आया।
"क्या हुआ"रागिनी भी अब किंचित गंभीर स्वर में बोली।मैं रागिनी को आज जो भी मेरे साथ घटना घटी,बताता चला गया।पूरी बात सुनने के बाद भी रागिनी कुछ देर खामोश ही रही।
"गुरु या तो अब शादी करके अपने गले में घँटी बांध लो,नही तो इस शहर की लड़कियां तुम्हे फांसी के फंदे पर जरूर लटकवा देगी"रागिनी ने नसीहत भरे स्वर में बोला।

"लेकिन मैं तो एक लड़की की मदद ही कर रहा था,सबसे बड़ी बात वो खुद चलकर मेरे घर तक आई थी,मैं उसे बुला कर नही लाया था,और जिस बदहवासी की हालत में थी,मेरी जगह कोई भी होता वो उसकी मदद करता"मैंने रागिनी के सामने अपनी सफाई दी।
"अब वो कर गई न तुम्हारी मदद!अब ये नही पता कि वो मैडम कोई चोरनी थी,जो कुछ चुराने के इरादे से घर मे घुसी थी,और जब उसे कुछ नही मिला तो,भागतें चोर की लंगोटी सही,इसलिए वो तुम्हारी पिस्टल ले गई"रागिनी ने अपनी सोच बताई।
"तुम बहुत सतही तरीके से सोच रही हो रागिनी,ये भी तो हो सकता है,की कोई लड़कियों के बारे में मेरी कमजोरी को जानता हो,और उसी का फायदा उठाकर उस लड़की को मेरे घर भेजा गया हो,अब वो किस इरादे से आई थी,ये तो तभी पता लगेगा,जब कभी हम उसे पकड़ पायेगे"मैंने रागिनी को बोला।
"मैं आपकी बात समझ गई गुरुदेव,ये बन्दी कल सुबह 9 बजे आपके घर पर उपस्थित हो जाएगी,उसके बाद देखते है क्या होता है"रागिनी ने मेरी बात का मतलब समझते हुए बोला।
"ठीक है मेरी प्राण प्रिये विश्व सुंदरी,मुझे अपने गरीबखाने में आपके आगमन का इंतजार रहेगा"मैंने उसकी शान में चिरौरी भरे शब्दो का प्रयोग किया।
"क्यो अब आपकी लिस्ट में इस भूतनी का नाम विश्व सुंदरी दिखाई देने लगा है"उधर से रागिनी का खिलखिलाता स्वर सुनाई पड़ा।
"अब रात को अगर भूतनी का ख्याल करके सोऊंगा,तो पूरी रात सपनो में कोई भूतनी ही डेरा डालकर रहेगी,इसलिए विश्वसुन्दरी को याद किया है,ताकि सपनो में ऐश्वर्य राय आये,कैटरीना कैफ आये"मैंने हँसते हुए रागिनी को बोला।
"क्यो दिल्ली की लड़कियों ने अब घास डालना बन्द कर दिया है क्या,जो आजकल फिल्मी हसीनाओं के सपने देखने लगे हो"रागिनी ने मेरा पानी उतारने में पलभर की भी देरी नही की थी।
"सोजा भूतनी!नही तो सुबह आने में ग्यारह बजाएगी"जब मुझे उसकी बात का कोई जवाब नही सूझा तो मैंने ये बोलकर फोन काटना ही सही समझा।मुझे पता था कि बातो में मैं रागिनी से नही जीत सकता था।एक वही थी,जिसके सामने अपन की गिनती न तीन में थी न तेरह में। एक बार फिर से मुझे उस कमजर्फ हसीना का ख्याल हो आया था,जो बारिश में भीगी हुई मेरे घर मे घुस गई थी,और मुझे दो लाख की पिस्टल का चूना लगा कर चली गई थी।मैं उसके बारे में ही सोचता हुआ नींद की आगोश में चला गया था।

****

सुबह होते ही मेरे फ्लैट की बेल किसी जहांगीरी घँटे की मानिंद बजने लगी थी। एक तो वैसे ही रात को देर से सोया था,उस पर से इतनी सर्दी में सुबह सुबह रजाई में से निकलने का सितम। मैंने एक नजर अपनी दीवार घड़ी पर डाली,अभी सुबह के सात ही बजे थे,रागिनी

ने तो नौ बजे आने के लिए बोला था,इस वक़्त इतनी सुबह कौन आया होगा,ये सोचते हुए मैं मन ही मन आने वाले को गलीनुमा उपमा से नवाजता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ गया। दरवाजा खोलते ही मुझे सुबह सुबह उस मनहूस पुलिसिये देवप्रिय की शक्ल नजर आई। मैंने कोतुहल से उसकी तरफ देखा। इतनी सुबह उसके आने का अभिप्राय मेरी समझ से बाहर था।उसने एक कुटिल मुस्कान से मेरी तरफ देखा।

"चलो!तुम्हे मेरे साथ चलना होगा,माहेश्वरी साहब भी तुम्हारा बहुत बेसब्री से इंतजार कर रहे है"देवप्रिय की वो मुस्कान बोलते हुए भी उसके चेहरे से लुप्त नही हुई थी।

"क्यो ऐसा क्या हो गया,जो इतनी सुबह सुबह पुलिस को इस नाचीज़ की याद आ गई"मैंने प्रत्यक्ष में देवप्रिय से पूछा।

"पुलिस को एक लड़की की लाश मिली है,और लड़की को गोली मारी गई है,तुम्हे उस लड़की की शिनाख्त करनी है कि क्या ये वही लड़की है,जो बकौल तुम्हारे,तुम्हारी पिस्टल चुरा कर भागी थी"देवप्रिय ने इस बार गंभीर स्वर में बोला था।

"ओह्ह लाश कहाँ पर मिली है"मैंने पूछा।

"अब सारे सवालों के जवाब यही पर खड़े हुए चाहिये क्या?साथ चलिये! सब पता चल जाएगा"देवप्रिय फिर से अपनी रात वाली पुलिसिया अकड़ पर उतर आया था।

"कपडे बदलने का मौका तो दीजिये,दो मिनट इंतजार कीजिये आप"ये बोलकर मैं वापिस अंदर की तरफ मुड़ गया। इस बार देवप्रिय ने कोई प्रतिवाद नही किया,और वही खड़े रहकर मेरे बाहर आने का इंतजार करने लगा। उसका ये इंतजार कोई दस मिनट चला। इन दस मिनट में मैंने अपने कपडे बदले,आधा अधूरा फ्रेश हुआ और बाहर निकल कर अपने फ्लैट का ताला लगाया। उसके बाद सुबह सुबह एक लाश की शिनाख्त करने जैसे मनहूस काम के लिये उस मनहूस इंसान के साथ रवाना हो गया।

वो अनजानी लाश -3

मैं एसआई देवप्रिय के साथ जिस जगह पर पहुंचा था,वो जगह सेक्टर 16 की एक पुलिया थी जो ईएसआई अस्पताल से थोड़ा सा आगे जाकर सेक्टर 16 को उस रोड से जोड़ती थी।
"बड़ी जल्दी आपकी जरूरत पड़ गयी अनुज बाबू"थाना इंचार्ज इंस्पेक्टर देवेंद्र माहेश्वरी ने मुझ पर नजर पड़ते ही बोला।
"कानून को जब भी इस बन्दे की दरकार होती है,बन्दा तो उसी वक़्त हाजिर हो जाता है"मैंने हल्की सी मुस्कान के साथ माहेश्वरी साहब को बोला।
"मेरे साथ आइए,और देखकर बताइये की कल रात को आपके घर मे घुसकर आपके पिस्टल को चुराने वाली यही लड़की थी क्या"माहेश्वरी साहब ने मेरी ओर देखकर बोला।मैं धड़कते दिल के साथ उन झाड़ियों की तरफ बढ़ा,जिन झाड़ियों में उस लड़की की लाश पड़ी हई थी। मैंने एक सरसरी नजर उस लड़की पर डाली और एक राहत की सांस ली।
"ये वो लड़की नही है जनाब"मैंने माहेश्वरी साहब की ओर देखकर घोषणा की।
"ध्यान से देखो,हो सकता है नींद की वजह से तुम्हारी आंखे अभी पूरी तरह से न खुली हो"माहेश्वरी साहब ने हल्के से विनोद भरे स्वर में बोला।
"जिस आदमी के दरवाजे को सुबह सुबह पुलिस खटखटाये,उस आदमी की नीदं खुलती नही है जनाब,बल्कि उड़ जाती है"मैंने माहेश्वरी साहब की बात का जवाब उन्ही के अंदाज में दिया।
"लेकिन जनाब मृतका के शरीर मे जो गोली का घाव नजर आ रहा है,वो बिल्कुल उसी पिस्टल से निकली गोली का हो सकता है,जिसकी गुमशुदगी की रपट अनुज साहब ने कल रात को ही लिखवाई है"देवप्रिय ने मेरी ओर अपनी शक्की निग़ाहों को डालते हुए बोला।
".32 बोर की पिस्टल क्या पूरे हिंदुस्तान में सिर्फ एक ही शख्स के पास हो सकती है क्या,और बिना पिस्टल की बरामदगी के तुम ये कैसे साबित करोगे की मृतका को लगी गोली उसी पिस्टल से निकली है"मैने उस लड़की के सीने में लगी गोली के घाव को देखते हुए बोला।
"यही बात तो हमारी शक की सुई तुम्हारी और घुमा रही है अनुज बाबू,आपने इस लड़की को मारने के लिये अपने जासूसी दिमाग का बखूबी इस्तेमाल किया है,पहले अपने पिस्टल के गुम होने की झूठी रिपोर्ट लिखवाई,और फिर उसी पिस्टल से इस लड़की को मारकर अब मासूम बनने का दिखावा कर रहे हो"देवप्रिय एक तरीके से मुझें क़ातिल साबित करने की पूरी थ्योरी बना चुका था।
"मैं खामख्वाह क्यो किसी लड़की को क्यो मारूंगा,मैं तो इस लड़की को जानता भी नही,मैं तो इस लड़की को पहली बार देख भी रहा हूँ तो इस मुर्दा हालत में"मैने देवप्रिय की बात का तुरन्त प्रतिवाद किया।

"तुम इस लड़की को जानते हो या नही,या इससे पहले इसे कभी देखा है या नहीं,ये सब अब हमारी जांच का विषय है अनुज बाबू"देवप्रिय अब अपने पुलिसिया हथकंडों पर उतर आया था।
"फिर जांच करके पहले साबित कीजिये,साबित कीजिये कि मैं इस लडक़ी को जानता हूँ,साबित कीजिये कि इसको मारने के पीछे मेरा क्या उद्देशय रहा होगा,उसके बाद आप मुझे फांसी पर लटका देना,अगर मुझे इस लड़की को मारना ही होता तो क्या मैं इतना बेवकूफ था,की जिस हथियार से इसे मारूंगा,उसी की गुम होने की रिपोर्ट लिखवाकर पहले से ही खुद को पुलिस की नजर में ले आऊं,आप बताइये,अगर मैं रात को आपके पास रिपोर्ट लिखवाने न आया होता तो क्या आप सुबह सुबह मेरे घर पर आ सकते थे,क्या आपको सपना आना था कि मैं इस लड़कीं को मारकर यहां डालकर अपने घर पर जाकर सो गया हूँ"मैं एक ही सांस में उस पुलिसिये की खबर लेता चला गया।उसके पास इस वक़्त मेरी एक भी बात का जवाब नही था।उसने आहत नजरो से अपने साहब की तरफ देखा।
"अनुज की बात में दम है देवप्रिय,पहले हमें इस लड़की के बारे में जानना चाहिए कि ये लड़की है कौन,यहां इसकों मारकर कौन डाल गया है"माहेश्वरी ने मेरा बचाव करते हुए कहा।
"लेकिन जनाब शक तो इस आदमी पर भी बनता ही है,इसे ऐसे ही कैसे जाने दे सकते है"देवप्रिय ने बुझे हुए स्वर में बोला।
"हम अनुज को कभी भी पूछताछ के लिए तलब कर सकते है,इन पर इतना भरोसा तो हम कर ही सकते है कि ये पुलिसिया पूछताछ से बचने के लिये कही गायब नही होंगे"माहेश्वरी साहब देवप्रिय से ज्यादा मेरे बारे में ज्यादा जानते थे।
"आप इस बात से निश्चिन्त रहिये सर!इस केस को सुलझाने के लिए मैं साये की तरह से आपके साथ रहूंगा,मेरे गायब होने की बात तो भूल ही जाइये,इलाके के बीसी को सिर्फ हफ्ते में एक बार थाने में हाजिरी देने के लिए बोला जाता हैं,मैं रोज आपके दरबार मे हाजिरी लगाऊंगा"मैने माहेश्वरी साहब की ओर देखकर बोला।
"ठीक है अब तो,ये रोज तुम्हारी नजरो के सामने रहेंगे,जिस दिन भी इस केस में इसके खिलाफ कुछ भी मिले,उसी दिन इसे पकड़कर लॉकअप में डाल देना"ये बोलकर माहेश्वरी साहब अभी देवप्रिय की तरफ देख ही रहे थें,की फोरेंसिक की टीम,फ़ोटोग्राफर और एम्बुलेंस तीनो एक साथ वहां अपनी आमद दर्ज करवा चुके थे। देवप्रिय मेरी और तीरछी निग़ाहों से घूरता हुआ,आगे की जरूरी कार्यवाही के लिये फोरेंसिक टीम की ओर बढ़ गया। मैं वही माहेश्वरी साहब के साथ एक कोने में जाकर खड़ा हो गया था।
"वैसे एक बात सच सच बोलो,वाकई ये लड़की वो नही है,जो कल रात को तुम्हारे घर मे घुसी थी"माहेश्वरी साहब ने ये पूछकर ये सिद्ध कर दिया था कि पुलिस वाला आख़िरकार पुलिसवाला ही होता है,उसकी वर्दी पर चाहे कितने सितारे टंगे हो।

"वो लड़की इससे कई हजार गुना सुंदर थी,और जब वो मेरे घर मे घुसी थी तब वो बुरी तरह से भीगी हुई थी,उसके भीगे हुए कपडो से मेरे बेड की वो जगह अभी तक गीली होगी,जहां पर आकर वो लड़की बैठी थी,जबकि ये लड़की तो किसी भी एंगल से नही लग रही है कि ये रात को बरसात में बुरी तरह से भीगी होगी"मैंने एक नई थ्योरी से भी माहेश्वरी साहब को अवगत करवाया।
"तुम अपनी जगह सही हो अनुज,लेकिन मेरा एक मशविरा है,जितनी जल्दी हो सके अपनी पिस्टल को बरामद कर लो,नही तो आने वाले समय मे कोई भी नई मुसीबत तुम्हारे सामने खड़ी हो सकती है,मैं हर बार अपने मातहत की बात को काटकर उसे नजरअंदाज नही कर सकता हूँ,अगर ये सब कर रहा हूँ तो,सिर्फ इसलिए,क्योकि मै तुम्हारे ट्रैक को अच्छी तरह से जानता हूँ"माहेश्वरी साहब ने मुझे मेरा हितेषी बनकर अपनी सलाह से नवाजा था।

****

फोरेंसिक वालो के विदा होते ही मैं भी वहां से अपने फ़्लैट पर आ गया। अभी दरवाजा खोलकर अंदर घुसा ही था कि रागिनी ने भी मेरे पीछे ही फ्लैट में प्रवेश किया।
"कहीं बाहर से आ रहे हो क्या"रागिनी ने अपना बैग टेबल पर रखते हुए बोला।
"सुबह सुबह एक लाश की शिनाख्त करके आ रहा हूँ,अब इस इलाके में जितने भी मर्डर होंगे,पुलिस सोचेगी की वो मेरी ही पिस्टल से हुए है,इसलिये अब जब तक मेरी पिस्टल नही मिल जाती,मुझे ऐसे ही परेशान करेगे"मैने तपे हुए स्वर में रागिनी को बोला।
"ये तो है,इसलिए पिस्टल को हमे जल्द से जल्द ढूंढना पड़ेगा"रागिनी भी चिंतित स्वर में बोली।
"लेकिन सवाल तो यही है कि कैसे ढूंढे"मैने रागिनी की ओर देखकर बोला।
"यहां आसपास कोई सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है क्या,क्या पता वो लड़की किसी कैमरे की पकड़ में आई हो"रागिनी ने सही दिशा में सोचा था।
"मैंने कभी ध्यान नही दिया है,लेकीन कैमरे आसपास लगे हुए तो जरूर होंगे"मैने रागिनी की बात से सहमती जताई।
"चलो फिर सबसे पहले उन कैमरों को ही ढूंढते है,फिर उनके मालिकों से उनकी फुटेज दिखाने की गुजारिश करते है"रागिनी ने अपनी जगह से उठते हुए बोला।
"अरे पहले कुछ खा पी तो लेने दो,सुबह सात बजे से भूखा प्यासा गया हुआ था"मैंने रागिनी को बोला।
"मैं लाई हूँ ब्रेकफास्ट घर से,तुम इतने फ्रेश हो जाओ,मैं तब तक काफी बनाती हूँ"रागिनी पहले से ही समझदारी वाला काम करके आई थी। मैंने एक मुस्कराहट भरी नजर रागिनी पर डाली,और बाथरूम में घुस गया।

****

पड़ोस के दो मकानों में ही हमे सीसीटीवी कैमरे लगे हुए नजर आ गए थे। उसके बाद थोड़ी सी आगे जाकर जिस भोजनालय से मेरा टिफिन आता था,उस के बाहर भी मुझे एक कैमरा लगा हुआ मिला। उन तीनों कैमरों को देखकर उस लड़की के बारे में जानने की कुछ उम्मीदों ने मन ही मन अंगड़ाई ली।सबसे पहले मैंने उस भोजनालय से ही शुरुआत की। भोजनालय के मालिक शर्मा जी मेरे अच्छे जानकार थे,इसलिए उन्होने अपने कैमरे की फुटेज दिखाने में कोई गुरेज नही किया।मैंने करीब 7 बजे से फुटेज को देखना शुरू किया था। रागिनी भी पूरी तल्लीनता से टीवी स्क्रीन पर अपनी नजर लगाये हुए बैठी थी। तकरीबन पौने आठ बजे के करीब एक नीले रंग की वलोनी कार आकर रुकी थी। उस कार से एक लड़की उतरी और बारिश से बचने के लिये मेरे फ्लैट की ओर तेजी से दौड़ी। मैने एक नजर रागिनी की ओर उठाकर देखा। रागिनी ने भी मेरी ओर देखा।
"बादशाहों ये गड्डी तो कल रात को मेरे होटल के बाहर काफी देर तक खडी रही थी"शर्मा जी ने हल्के से पंजाबी लहजें में बोला था।
"इस गाड़ी से जो लड़की उतर कर मेरे फ्लैट की तरफ दौड़ती हुई गई थी,उस पर नजर पड़ी थी,क्या आपकी"मैंने शर्मा जी से पूछा।
"ना भईया!पराई औरतों को देखने का कोई शौक नही रखता जी"शर्मा जी की ये बात सुनते ही रागिनी के चेहरे पर बरबस ही एक मुस्कान थिरक उठी थी।
"अब इस फुटेज को साढ़े आठ बजे के आसपास लेकर जाओ,इसी वक्त के आसपास वो लड़की मेरे फ्लैट से गायब हुई थी"मैंने रागिनी की मुस्कान से खिसिया कर उसे बोला।
"पूरी ही देख लेते है सर!क्या पता इस आधे घँटे में गाड़ी से भी कोई और बन्दा उतरा हो,या कोई और आया हो"रागिनी ने बोला तो मैंने भी सहमति में सिर को हिलाया।
"एक बात तो सिद्ध हों गई,की ये लड़की प्री प्लान आई थी,इसने अपनी जान पर खतरे की मुझें झूठी कहानी सुनाई,और किसी खास मकसद से उसने मेरी पिस्टल को भी चुराया"मैंने अभी तक की फुटेज को देखकर अपने आकलन बताया।
"इस बारे में घर पर चलकर बात करेगे"ये बोलकर रागिनी ने फिर से अपनी नजर स्क्रीन पर टिका दी। अगले चालीस मिनट हमारे बहुत ही बोरिंग गुजरे थे,न तो कोई उस गाड़ी के पास आकर फटका था,और न ही कोई उस गाड़ी से कोई उतरा था। कोई चालीस मिनट के बाद वहीं लड़की फिर से दौड़ती हुई आई और जैसे ही कार में बैठी,वैसे ही गाड़ी की हेडलाइट की रोशनी सड़क पर बिखर गई। जैसे ही गाड़ी आगे बढ़ी,गाड़ी की पिछली तरफ लगा हुआ नंबर प्लेट हमारे सामने नुमाया हो गया।जिसे मुझ से पहले ही रागिनी ने अपनी फोन की नोटबुक में लिख लिया। हमने उस गाड़ी के वहाँ से रवाना होते ही उस फुटेज को फिर से रिवाइंड किया और जिस जिस जगह वो लड़की फुटेज में दिख रही थी,उस जगह की अपने मोबाइल से फोटो खींच कर सेव कर ली।साथ ही उस पूरी फुटेज को डेटा केबल से अपने

मोबाइल में भी ले ली। उसके बाद हम शर्मा जी का धन्यवाद बोलकर उस भोजनालय से बाहर आ गए।
"चलो कोई तो सुराग मिला,उस लड़की का,कम से कम उसे ढूंढने की एक शुरुआत तो हो सकती है"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।
"हाँ चलो अब बाकी दोनो सीसीटीवी कैमरो की फुटेज भी देख लेते है"मैंने रागिनी को बोला,और उन घरों की ओर बढ गए,जिन पर वे कैमरे लगे हुए थे। लेकिन दोनो ही जगह से हमें ना उम्मीदी ही हाथ लगी थी।एक पड़ोसी ने तो अपना सीसीटीवी ही खराब बताया था,और दूसरे पड़ोसी दोनो ही मियां बीवी नौकरीपेशा थे,तो दोनो ही अपने काम पर जा चुके थे, और घर पर ताला लटका हुआ था।मैने निराशा से रागिनी की ओर देखा।
"कोई नही!अभी हमारे पास आगे बढ़ने के लिये उसकी गाड़ी नंबर का क्लू तो है ही!हम वही से शुरू करते है"रागिनी ने मेरी निराशा को भांपते हुए बोला।
"चलो फिर इस गाड़ी की डिटेल निकालते है,उसके बाद पकड़ते है इस लड़की को"ये बोलकर मै अब अपने फ्लैट की ओर बढ़ गया था। आजकल किसी गाड़ी की डिटेल निकालना कुछ मिनिटों का ही काम था। गूगल बाबा ने दुनिया के काफी कामो को आसान बना दिया था।लेकिन इस वक्त मुझे जिस बात ने ज्यादा बेचैन किया हुआ था,वो ये थी कि वो लड़की एक प्लान बनाकर मेरे घर मे घुसी थी।इस वक़्त कौन बनेगा करोड़पति से भी बड़ा सवाल मेरे सामने खड़ा हो गया था,की इस शहर में मेरा ऐसा कौन सा खैरख्वाह पैदा हो गया था,जिसने मेरे खिलाफ कोई साजिस रचने की पहल मेरे ही घर से की थीदा। वैसे आपके इस सेवक के दुश्मनों की तादाद बहुतायत में थी,अब इनमें से किसी एक दुश्मन को ढूंढना भूसे के ढेर में सुई ढूँढने के बराबर था।

रागिनी का आगमन -4

वो गाड़ी रोहिणी के ही सेक्टर ग्यारह के पते पर रजिस्टर्ड थी। गाड़ी किसी कुमार गौरव के नाम से रजिस्टर्ड थी। सेक्टर ग्यारह का पता देखते मेरी उम्मीदों के पंखों को नए परवान मिल चुके थे, क्योकि उस अनामिका नाम की लड़की ने मुझे यही बताया था कि वो रोहिणी के सेक्टर ग्यारह में ही रहती थी। उस पते के मिलने के बाद हमारा सबसे पहला काम अब उस पते पर पहुंचने का ही था। इस वक़्त आपका सेवक रागिनी के साथ उसी पते पर खड़ा था।रागिनी ने उस घर की बेल बजाई।दरवाजा किसी नौकरानी ने खोला था।मैंने उसे कुमार गौरव को बुलाने के लिए बोला तो,वो बिना कुछ बोले ही वापिस अंदर मुड़ गई। कुछ देर में ही एक कोई तीस वर्षीय जवान मेरे सामने खड़ा था। बन्दे की बॉडी देखकर लग रहा था कि वो जिम में जमकर पसीना बहा रहा है,और जमकर सप्लीमेंट के डिब्बे पर डिब्बे खाली किये जा रहा है।
"जी कहिये,कहाँ से आये है आप"उस शख्स ने मेरी ओर अनजान निगाहों से देखते हुए पूछा।
"आप ही कुमार गौरव है"मैने उसकी तरफ देखते हुए पूछा।
"जी मै ही कुमार गौरव हूँ,आपको मुझ से क्या काम है"उसने जिज्ञासा भरे स्वर में पूछा।
"वो नीले रंग की वेलिनो आप ही कि गाड़ी है"इस बार रागिनी ने पूछा।
"जी नीले रंग की वेलिनो मेरी ही गाड़ी है,आप जानते हो कुछ मेरी गाड़ी के बारे में"उसके इस सवाल ने मानो हमारे ऊपर कोई वज्रपात सा किया हो।
"जानते हो मतलब?"ये सवाल आपके सेवक ने किया।
"कल शाम से मेरी गाड़ी गायब है भाई,रात को थाने में रपट भी लिखवा कर आया हूँ,लेकिन अभी तक गाड़ी का कोई अता पता नही है"कुमार गौरव ने रुआंसे स्वर में बोला। हमारी उम्मीदों पर तुषारापात हो चुका था।
"क्या हम लोग अंदर बैठकर बात कर सकतें है"तभी रागिनी ने बोला।
"जी!लेकिन आपने अभी तक नही बताया कि आप कौन हो"कुमार गौरव के लिए ये भी मुसीबत थी कि वो ऐसे ही किसी अनजान लोगों को अपने घर के अंदर नही घुसा सकता था। मैने अपना कार्ड निकाल कर उसके हाथ मे दिया।
"आप डिटेक्टिव है,आप मेरी गाड़ी के बारे में कुछ जानते है क्या"कुमार साहब ने मेरा परिचय जानते ही पूछा।
"हमने आपकी गाड़ी में एक लड़की को कल रात को एक सीसीटीवी की फुटेज में देखा है"इस बार फिर से रागिनी ने बोला।
"आप लोग अंदर आइए"ये बोलकर कुमार साहब ने हमारे लिए दरवाजा छोड़ दिया। हम उसके पीछे ही अंदर की तरफ बढ़ गए। कुछ ही पलों में हम उसके ड्राइंग रूम में बैठे हुए

थे।ड्राइंग रूम में सन अस्सी के दशक के चॉकलेटी हीरो कुमार गौरव की उसकी फ़िल्म "लव स्टोरी"की एक बड़ी सी तस्वीर लगी हुई थी।मैं उस तस्वीर को देखकर मुस्करा दिया। इस बन्दे की एकमात्र यही फ़िल्म थी,जिसने सिनेमा जगत में तहलका मचा दिया था,और रातों रात ये बन्दा उस समय की नवयौवनाओं की दिलो की धड़कन बन गया था,लेकिन इस एक फ़िल्म के बाद ही इस बन्दे के सितारे डूबते चले गए।
"लगता है कुमार गौरव के बड़े जबरा फैन हो,जो नाम भी उनका रखा हुआ है और ड्राइंग रूम भी उन्ही की तस्वीरों से सजा रखा है"मै और रागिनी इस वक़्त दिलचस्प निग़ाहों से उस तस्वीर को देख रहे थे।
"जी मै नही मेरी मम्मी इनकी बड़ी जबरा फैन है,उन्ही ने मेरा नाम भी कुमार गौरव रखा था"कुमार साहब ने मुस्करा कर जवाब दिया।
"सही बोल रहे हो,वैसे आप तो बॉडी से तो सनी देओल के फैन लगते हो"मैने अपनी भूल सुधार की।मेरी बात उसे पसंद आई थी,तभी वो ठठाकर हँस पड़ा था।
"आप जरा इस लड़की को देखिए!ये लड़की कल रात को आपकी गाड़ी में देखी गई है"मैने अपने मोबाइल की फोटो गैलरी खोलकर उसे पहले से ली गई फ़ोटो को दिखाया।कुमार बाबू गौर से उस तस्वीर को देखने लगे।
"ये लड़की तो मल्लिका जैसी लग रही है"कुमार की बोली हुई इस बात ने मेरे कान खड़े कर दिए थे।
"आप जानते हो इस लड़की को"मैंने गौर से कुमार के चेहरे को देखते हुए पूछा।
"हाँ!एक नंबर की फ्रॉड लड़की है,लेकिन ये तो जेल में थी,ये बाहर कब आई"कुमार ने अचंभित स्वर में बोला।
"जरा इसके बारे में खुलकर बताओ,ये कल रात को मेरे घर से एक कांड करके भागी है"मैंने उतावले स्वर में बोला।
"क्या कांड कर दिया इसने,वैसे ये कुछ भी कर सकती है,यहां तक कि किसी का खून भी"कुमार एक के बाद एक धमाके इस लड़की के बारे में किये जा रहा था।
"ये कल रात को तकरीबन आठ बजे के करीब मेरे फ़्लैट पर बदहवासी की हालत में आई,इसने मुझे बोला कि इसके पीछे कुछ लोग पड़े हुए है,और इसे जान से मारना चाहते है,मैने इंसानियत के नाते अपने घर मे इसे शरण दे दी,लेकिन ये तो मुझे ही सेन्धी लगाकर मेरे घर से फरार हो गई"मैने देखा की मेरी इंसानियत वाली बात पर रागिनी अपनी हँसी रोकने की नाकाम कोशिश कर रही थी।
"क्या सेन्धी लगा दी इसने"कुमार बाबू अब अपनी कहने से ज्यादा मेरी सुनने के लिए ज्यादा लालायित थे।
"ये मेरी पिस्टल चुराकर भाग गई है,मैं कल रात से ही इस लड़की को ढूंढ रहा हूँ"मैंने अपनी पूरी आपबीती बता दी।

"मतलब इस खतरनाक लड़की के कब्जे में मेरी गाड़ी और आपकी पिस्टल है"कुमार मानो खुद से ही बोल रहा हो।
"और आज सुबह ही एक लड़की की लाश भी बरामद की है पुलिस ने,अभी ये नही पता चल पाया है कि उस लड़की को किसने मारा है"मैने कुमार की बात में अपनी बात जोड़ी।
"क्या पता उस लड़की को भी इसी मल्लिका ने मारा हो,मैने बताया न वो कुछ भी कर सकती है"कुमार उस लड़की से कुछ ज्यादा ही डरा हुआ था।
"कुमार!आपकी बातो से लग रहा है,की आप इस लड़की को काफी करीब से जानतें हो,जो कुछ भी इस लड़की के बारे में जानतें हो,वो हमें बता दो,ताकि हम इसे जल्दी से जल्दी पकड़ सके,नही तो पता नही ये किस किस की जान लेगी"रागिनी ने हमारी बातचीत के सिलसिले को तोड़ा।
"ये लड़की पहले मेरी ही कंपनी में काम करती थी, ये गजब की खूबसूरत लड़की है,इसकी खूबसूरती ही इसका सबसे बड़ा हथियार है,जो कोई इसे पहली बार देखता है,वो इसकी ओर खींचा जाता है,मैं भी उसके इस रूपजाल में फंस गया था,और ये मेरी गर्ल फ्रेंड बन गई थी"कुमार ने सुनी आंखों से शून्य में निहारते हुए बोला।
"फिर तो इसके बारे में सब कुछ गहराई से जानते होंगे"रागिनी ने अब पूछताछ की कमान अपने हाथ मे ले ली थी।
"ज्यादा नही जानता,इतना जानता हूँ कि मॉडल टाउन में रहती थी,इसने मुझे मेरी गर्ल फ्रेंड बनकर मुझे लाखों का चूना लगाया,और जब मैंने इसे पैसे देने से इनकार किया तो इसने मेरे साथ अपना ब्रेकअप कर लिया,बाद में मुझे पता चला कि उसका तो ये बिज़नेस है,हर कंपनी का मालिक उसका बॉयफ्रेंड होता है,और जब तक वो उस पर पैसे लुटाता रहता है,वो इस लड़की की गुडबुक में रहता है,उसको पूरी तरह से चूसने के बाद ये उसको टाटा बाई बाई करके उसकी जिन्दगी से निकल कर अपने नए शिकार की तलाश में निकल जाती है,बस इसमे एक ही अच्छी बात थी,की ये किसी को उसकी जिंदगी से जाने के बाद ब्लेकमेल नही करती"कुमार ने जो भी बताया था,वो काफी दिलचस्प था। एक बात और थी कि इस लड़की को पकड़ने में चक्कर मे अभी कुमार जैसे कई लुटे पिटे आशिकों से मुलाकात होने वाली थी। वो किसी के लिये अनामिका थी और किसी के लिये मल्लिका थी। न जाने कितने नाम और रूप थे,इस लड़की के,...बहरहाल इतना तो कुमार की बातों से स्पष्ट था कि लड़की बहुत खतरनाक थी।लेकिन इस खतरनाक लड़की ने इस बार एक गलती कर दी थी,की इसने अनजाने में अनुज दी ग्रेट से पंगा ले लिया था। लेकिन क्या सच मे उसने अनजाने में मुझ से पंगा लिया था,सुबह तो मैं और रागिनी इस नतीजे पर पहुंचे थे,की वो लड़की प्री प्लान बनाकर मेरे घर में घुसी थी।वो जानती थी कि मैं भी उसकी खूबसूरती में उलझ जाऊंगा।अभी मैं अपने तस्सवुर में उस लड़की के बारे में सोच ही रहा

था,की कुमार का फोन बज उठा था।कुमार ने फोरन से पेश्तर फोन को उठाया। उसने कुछ देर फोन पर एक तरफ जाकर बात की,फिर तेज कदमों से हमारी तरफ आया।
"पुलिस को गाड़ी मिल गई है"कुमार ने उत्साहित स्वर में बोला।
"कहाँ पर"मेरा और रागिनी का सम्मिलित स्वर वहां गूंजा था।
"यही सैक्टर 6 में,अंबेडकर होस्पिटल की पीछे वाली रोड पर मिली है पुलिस को"कुमार ने मेरी ओर देखकर जवाब दिया।
"चलो फिर!आप हमारे साथ आओ,क्या पता आपकी गाड़ी से ही आगे के कोई सुराग मिल जाये।मेरी बात सुनकर कुमार ने साथ चलने में कोई भी हिलाहवाली नही की,और हमारे साथ बाहर की ओर चल पड़ा।

****

अंबेडकर हॉस्पिटल के पिछले गेट से थोड़ी सी दूरी पर ही कुमार की वही नीले रंग की वेलिनो खड़ी हुई थी। इस वक़्त उस गाड़ी को तीन चार पुलिस वाले घेर कर खड़े हुए थे,और कुछ लोग उस गाड़ी की जाँच में लगे हुए थे। मै उन लोगों के हावभाव से ही पहचान गया था कि वे फोरेंसिक डिपार्टमेंट के लोग है। गाड़ी के पास ही एसआई देवप्रिय भी मुस्तैदी के साथ खड़ा हुआ था। हमें कुमार के साथ देखते ही उसकी न केवल भवे तन गई थी,बल्कि उसकी पेशानी पर बल भी पड़ चुके थे।
"क्या बात है,पूरा गैंग ही एक साथ घूम रहा हैं"पता नही इस बन्दे का नाम देवप्रिय किसने रखा था,न बरखुरदार की शक्ल अच्छी थी,और न ही बाते ऐसी करता था,की किसी को भी प्रिय लगे।
"गैंग से क्या मतलब है आपका"मुझ से पहले ही रागिनी ने देवप्रिय से उसकी बात का मतलब पूछ लिया था।
"आप मे से एक बन्दे की गाड़ी चोरी हुई है,और उस गाड़ी में किसी के ताजा खून के धब्बे और निशान पाए जाते है,एक बन्दे की पिस्टल गायब है,और वैसी ही पिस्टल से निकली एक गोली किसी की जान भी ले चुकी होती है,और फिर भी आप लोग इसलिये मासूम बनकर पुलिस के सामने पेश आते है,क्याकि इन लोगो ने पहले से ही अपनी गाड़ी और पिस्टल की चोरी की रपट पुलिस में लिखवाई हुई होती है"देवप्रिय हम लोगों को एक साथ देखते ही अपने नतीजे पर पहुंच भी चुका था।
"आपको तो इस इलाके का डीसीपी होना चाहिए था देवप्रिय जी,आप की प्रतिभा के साथ तो बहुत बड़ा अन्याय है कि आप अभी तक सिर्फ एसआई की पोस्ट तक ही पहुंचे हो"मैने तंज भरे स्वर में देवप्रिय को बोला तो उसने खा जाने वाली नजरो से मुझे देखा।
"क्यो क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूँ"देवप्रिय जले भूने स्वर में बोला।
"आप बताइए कल रात से मेरी पिस्टल की चोरी होने की रपट पर आपने अभी तक क्या कार्यवाही की है,उसे ढूंढने की कोई एक भी कोशिश की है तो,जरा मेरी जानकारी में भी ला

दो,और जब हम अपने प्रयासों से अपनी चोरी हुई चीज को ढूंढने की कोशिश में इस बन्दे तक पहुंचते है,जिसकी गाड़ी चुराकर वो लड़की मेरे घर तक आई थी,तो ये सब आपको हमारी मिलीभगत लगती है,आप पर तो सचमुच बलिहारी होने का दिल कर रहा है,आपका नाम तो राष्ट्रपति के पास गोल्ड मेडल देने के लिए दिल्ली पुलिस को भेजना चाहिए"मेरी बात सुनकर देवप्रिय के कांटो तो खून नही था,वो समझ नही पा रहा था,की क्या कोई उसकी पुलिसिया वर्दी का खौफ खाये बिना भी उससे इस लहजें मे भी बात कर सकता है।
"ज्यादा हवा में उड़ो मत जासूस साहब,बिना पुलिस की मदद के तुम किसी केस की तरफ पैर करके भी नही सो सकते हो,उसे सुलझाने की बात तो बहुत दूर की बात है,रही बात आपकी पिस्टल चोरी होने की रपट पर कार्यवाही की,तो सिर्फ एक यही काम नही रह गया है हमारे पास,सुबह से ही एक लड़की के कत्ल के केस में उलझे हुए है,जो कि आपकी पिस्टल को ढूंढने से ज्यादा बड़ा और जरूरी काम है"देवप्रिय ने मेरी ओर देखकर कुटिलता से बोला।
"अगर आप प्राथमिकता के आधार पर रात को ही मेरी पिस्टल को ढूंढने का प्रयास करते तो शायद इस कत्ल को होने से आप रोक पाते देवप्रिय जी"मैंने ये बोलकर अपने मोबाइल में उस लड़की का फोटो निकाल कर देवप्रिय के सामने रख दिया।वो गहराई से नजर गड़ाकर उस फ़ोटो को देख रहा था।
"कौन हैं ये"देवप्रिय ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।
"ये वही लड़की है,जिसने पहले इनकी गाड़ी चुराई,फिर उस गाड़ी में बैठकर मेरे घर तक आई,फिर मेरे घर से मेरी पिस्टल को चुराकर फरार हो गई"मैने देवप्रिय को बोला।
"लेकिन ये है कौन"देवप्रिय ने फिर से पूछा।
"एक सजायाफ्ता मुजरिम!जिसके बारे में जानकारी आप हमसे ज्यादा जुटा सकते हो"मैने बोला तो देवप्रिय मेरी और हक्काबक्का सा मेरी ओर देखता रह गया।

कुमार गौरव --5

इस वक़्त हम रोहिणी के थाने में बैठे हुए थे।कुमार गौरव के बताए हुए मल्लिका नाम के अनुसार उसका पुलिस रिकॉर्ड खंगाला जा रहा था। लेकिन मल्लिका के नाम से कोई भी डेटा पुलिस के डेटा में नहीं मिल रहा था।
"आप फ़ोटो की पहचान से इस लड़की को ढूँढिये!शायद इस लड़की को क्योकि हर जगह सिर्फ फ्रॉड करना होता है,तो ये हर जगह अपना नाम गलत ही बताती हो"मैने देवप्रिय की तरफ देखकर बोला। देवप्रिय के सुर अब सुधर चुके थे,क्योकि उसने देख लिया था कि पुलिस की बंधी बंधाई लकीर को पीटने से कुछ हासिल नही होने वाला था,बल्कि जो सवाल उससे मैने किये थे,उन सवालों को उससे कोई भी समझदार पुलिस अधिकारी कर सकता था।
"लेकिन तुम्हारे पास जो फ़ोटो है,वो बहुत धुंधली है,शायद डेटा उसे पकड़ न पाए"देवप्रिय की इस बात में दम था।
"कुमार साहब तुम्हारी तो वो लड़की गर्ल फ्रेंड और एम्पलॉई दोनो ही रह चुकी है,तुम्हारे पास तो उसकी कोई फ़ोटो जरूर होनी चाहिये"रागिनी ने कुमार से मुखातिब होकर बोला।
"मैने उससे संबंधित सारा कुछ अपने मोबाइल से डिलीट कर दिया था,इसलिए मुश्किल है मेरे मोबाइल में कुछ मिलना"कुमार ने फंसे हुए स्वर में कहा।
"देखिए!एक बार मोबाइल को अच्छे से चेक कर लीजिए,नही तो मुझे आपका मोबाइल लैब में भेजना पड़ेगा,वहां पर आपका सभी डेटा रिकवर हो जाएगा"देवप्रिय ने उसे समझदारी से समझाया।
"कुमार आप डिलीट हिस्ट्री में जाओ,अगर तुमने फोन का डेटा रिबूट नही किया होगा तो डिलीट हिस्ट्री में सब मिल जाएगा"रागिनी ने कुमार को बोला।
"हाँ फ़ोन तो रिबूट नही किया हैं मैंने,मैं अभी देखता हूँ"मोबाइल को लैब में भेजने की बात सुनते ही जो चेहरा बुझ गया था,वह अब फिर से रोशन हो चुका था।कुमार अब पूरी तल्लीनता से मोबाइल में घुस चुका था।कोई पांच मिनट के बाद ही एक विजयी मुस्कान के साथ वो मोबाइल से अपनी नजरो को उठाया।
"मिल गई एक फोटो तो मिल गई"कुमार ने सिर उठाते ही घोषणा की।उसके बाद उसने अपना मोबाइल मेरे आगे किया। उस लड़की की फ़ोटो पर नजर पड़ते ही मैंने भी इस बात की तस्दीक कर दी कि ये वही लड़की है,जो कल रात को मेरे घर मे आई थी।देवप्रिय ने उस मोबाइल को डेटा केबल से जोड़ा और तुरन्त उस फ़ोटो को अपने कंप्यूटर में ट्रांसफर करने लगा।फ़ोटो ट्रांसफर करनें के बाद उसने मोबाइल को कुमार को वापिस लौटा दिया। अब देवप्रिय के लिये उसकी तलाश आसान होने वाली थी। देवप्रिय अब अपने पुलिस रिकॉर्ड के सजायाफ्ता मुजरिमो के फोटो सेक्शन में जाकर फ़ोटो ट्रेस कर रहा था। कुछ ही पलों में

उसका परिणाम हमारे सामने था। लड़की का नाम देविका था,और वो दो करोड़ की धोखाधड़ी के केस में छह माह पहले ही जेल में गई थी।अब वो जमानत पर बाहर थी।
"मुझे उस केस की डिटेल मिल सकती है,की किस कंपनी के साथ ये धोखाधड़ी करके जेल पहुंची थी,और इसने क्या धोखाधड़ी की थी"मैंने देवप्रिय की ओर देखते हुए एक हल्की सी मुस्कान के साथ पूछा।देवप्रिय ने अजीब सी नजरो से मेरी और देखा।
"ये बंसल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज की किसी डेटा संग्रहण कंपनी में थी,जहां पर इसने कम्पनी के कंज्यूमर डेटा को ही उनकी किसी प्रतिस्पर्धी कंपनी को दो करोड़ में बेच दिया था"देवप्रिय ने न जाने क्या सोचकर मुझे केस डिटेल देने में कोई आनाकानी नही की थी।
"बस इतना काफी है सर!बाकी बंसल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज से मेरे अच्छे तालुक्कात है,मुझे इस लड़की की वहां से पूरी कुंडली मिल जाएगी"मैने देवप्रिय को बोला,तो देवप्रिय ने अजीब सी निग़ाहों से मेरी ओर देखा।
"भाई किस दुनिया में हो,जानते भी हो कितनी बड़ी कंपनी है ये,महीनों तक तो मिलने तक का अपॉइंटमेंट नही मिलता,इस कंपनी के मालिकों से"देवप्रिय ने बिना किसी जानकारी के ही हवा हवाई बात बोली।
"जनाब इस कंपनी की सिर्फ एक ही मालकिन है,सौम्या बंसल! इनके पति राजीव बंसल अपने पिता और अपनी सौतेली माँ की हत्या के जुर्म में मेरी मेहरबानी से ही इस वक़्त उम्रकैद की सजा काट रहे है"मैंने ग्रुप ऑफ बंसल इंडस्ट्रीज की पूरी जन्म कुंडली देवप्रिय के सामने रख दी।
"तुम्ही वो प्राइवेट डिटेक्टिव हो जिसने इस केस को सॉल्व करने में डिपार्टमेंट की मदद की थी"देवप्रिय बदले हुए सुर में बोला।
"हाँ!मैं ही हूँ वो आपका सेवक,अनुज दी ग्रेट!"मैने हल्का सा अपना सिर नवाकर देवप्रिय को बोला।
"तभी मैं सोचूं की किसी पुलिस वाले से बात करने का इतना सलीका तुम में कैसे है"देवप्रिय अब खिसियाए से स्वर में बोला।
"चलिये जनाब!अब तक जो हुआ सो हुआ,मिट्टी डालिये उन बातों पर,अब आप इस केस पर अपने हिसाब से काम कीजिये,क्योकि मुझे इस केस पर एक अलग नजरिये से काम करना है,लेकिन दोनो ही सूरत में हम दोनों का मकसद असल अपराधी को पकड़ना ही होगा"मैने देवप्रिय से अब अपने संबंध सामान्य बनाने के लिये ये पहल की। वैसे भी पानी मे रहकर ज्यादा दिन तक आप मगरमच्छ से बैर नही रख सकते है। क्योकि बिना पुलिसिया मदद के एक प्राइवेट डिटेक्टिव चाह कर भी कोई तीर नही चला सकता था।हम देवप्रिय से विदा लेकर थाने से बाहर आ चुके थे,कुमार की गाड़ी अभी पुलिस के कब्जे में ही थी,क्योकि एक मर्डर के केस में वो गाड़ी अब बतौर सबूत पुलिस की प्रोपर्टी थी।लिहाजा हमे अभी कुमार गौरव को भी उसके घर पर ड्राप करना था। इस केस में अब सौम्या बंसल

से एक बार फिर से मुलाकात करनें का मौका मिलने वाला था।शायद साल भर के बाद उससे मिलने का मौका आने वाला था। इसलिए सबसे पहले तो उसकी शिकायतों का पुलिंदा ही मुझे सुनना था।

****

कुमार को उसके घर पर छोड़कर हम फिर से मेरे फ्लैट पर आ गए थे। दोपहर का समय होने को आया था,इसलिए मैंने उसी भोजनालय को अपने और रागिनी के लिए लंच आर्डर कर दिया था।

"देविका को हमारे खिलाफ कौन प्लांट कर सकता है"मैने रागिनी की ओर देखते हुए बोला।

"दिल्ली की तिहाड़ में तो आपके भेजे हुए बहुत सारे चाहने वाले है,सौम्या का हस्बैंड राजीव बंसल भी वही हैं,तुम्हारी चहेती मेघना भी वही है,इसके अलावा और भी बहुत लोग है"रागिनी ने मेरी बात का जवाब दिया।

"लेकिन देविका तो लड़की है तो वो तो महिला जेल में होगी"मैंने रागिनी को याद दिलाया।

"महिला जेल में उसकी मुलाकात मेघना के साथ हो सकती है,दोनो की बैकग्राउंड भी एक ही कंपनी के लिये काम करना है,तो दोनो में दोस्ती भी जल्दी हो गई होगी"रागिनी ने तुरन्त दो जमा दो बराबंर चार वाला फॉर्मूला जोड़ा।

"मुझे लगता तो नही की मेघना मुझ से बदला लेने के लिए ऐसा कुछ प्लान कर सकती है"मै रागिनी की इस बात को मानने के लिए तैयार नही था।

"क्यो!वो तुम्हारी वजह से आज जेल में सड़ रही है,तो कभी तो तुम्हे भी किसी जाल में फ़साने का दिमाग में आया ही होगा"रागिनी की इस बात में दम था।

"एक काम करते है,खाना ख़ाकर तुम सौम्या से बात करो,फिर उससे मिलने चलते है,इस देविका की भी अब पूरी कुंडली निकालना जरुरी है"रागिनी ने लंच की थाली को मेरे सामने रखते हुए बोला।लेकिन मैं रागिनी के बोलने से पहले ही सौम्या को फोन मिला चुका था। उधर से तीसरी बेल बजने के बाद सौम्या ने फोन उठाया।

"मैं तो आज धन्य हो गई"उधर से सौम्या ने फोन उठाते ही बोला।

"मैं भी कृतार्थ हो गया,इतनी खूबसूरत लड़की की इतनी मधुर आवाज को सुनकर"मै जानता था कि सौम्या फोन उठाते ही ऐसा ही कुछ बोलने वाली थी।

"तुम्हे अगर मेरी सुंदरता की जरा भी कदर होती तो कम से कम रात को सोने से पहले एक फ़ोन तो रोज करते तुम मुझे"सौम्या ने शिकायती लहजें में बोला।

"तुम फोन करनें की बात कर रही हो मेरी जान,मैं तो तुमसे मिलने के लिए बेताब हुए जा रहा हूँ,ये बताओ अभी कहाँ मिल सकती हो"मैंने तुरंत बात बनाई।

"बिना किसी काम के तो तुम मेरे पास आने से रहे,इसलिए पहले काम बताओ,फिर बताऊंगी मैं कहाँ हूँ"सौम्या भी अब बातो को भांपना सीख गई थी।

"सिर्फ तुम्हारे हसीन मुखड़े के दर्शन करने है,और तुम्हारें साथ कॉफी पीनी है,और रागिनी भी मेरे साथ आना चाहती है"मैंने सौम्या को बोला।
"रागिनी भी साथ आ रही है,तो पक्का किसी काम से ही आ रहे हो तुम,चलो तुम मेरे पास आ रहे हो,इतना ही काफी है,राजेन्द्र प्लेस वाले आफिस में हूँ,यही आ जाओ,छह बजे तक यही हूँ"सौम्या ने मुझे बोला।
"ठीक हैं मेरी गुले गुलजार,तुम्हारा ये बिछड़ा हुआ प्यार,सिर के बल दौड़ता हुआ आ रहा है"मेरी बात सुनकर सौम्या की एक जोर की हँसी गूँजी और फिर फोन रखने की आवाज सुनाई दी। फोन रखते ही मैने देखा कि रागिनी मेरी ओर ही देखे जा रही थी।
"तो तुम सौम्या मैडम का बिछड़ा हुआ प्यार हो"रागिनी ने तंज भरे स्वर में कहा।
"अभी चल रही हो न मेरे साथ,तुम खुद देखना की वो मुझ से ऐसे चिपक कर मिलेगी,जैसे हम कई जन्मों से बिछड़े हुए प्रेमी हो"मैंने रागिनी को बोला।
"देखते है! कितना मरे जा रही है वो तुमसे मिलने के लिये,जल्दी से खाना खा लो,कही लेट हो गए तो वो सुसाइड न कर ले"रागिनी ने एक कुटील मुस्कान के साथ बोला।
"कुछ जलने की बू आ रही हैं,इस ढाबे वाले ने भी लगता है जली हुई सब्जी भेज दी"ये बोलकर मैने एक सब्जी की कटोरी उठाकर उसकी महक सूंघने लगा।
"औए मिस्टर!जले मेरी जूती,अपना जलवा भी कोई कम नही है"रागिनी ने मुझे हूल दी। मुझे कई बार रागिनी की इन बातों पर बड़ा मजा आता था।लेकिन मैं इस बहस को अब अपनी गाड़ी में सफर के दौरान बचाकर रखना चाहता था,इसलिए मैंने अपना पूरा ध्यान अपने खाने में लगा दिया था।

****

चार बजे तक हम लोग सौम्या के राजेंदर प्लेस वाले आफिस में उसके केबिन में मौजूद थे। सौम्या ने अपनी कुर्सी से उठकर बाकायदा गले लगाकर स्वागत किया था,जब सौम्या मुझे गले से लगा रही थी तो मैने रागिनी को इशारा करके अपना जलवा दिखाया था।जवाब में रागिनी ने बड़ी अजीब सी हरकत की थी,उसने चिढ़ाने वाले अंदाज में अपनी जीभ को हल्का सा बाहर निकाला था।
"यार तुम्हे कभी मेरी याद आती है या नही,या हमारे रिलेशन सिर्फ प्रोफेशनल है"सौम्या ने मुझें मेरी कुर्सी पर बिठाते हुए कहा।
"नही सौम्या!तुम्हे तो मैने हमेशा अपना माना है,इसलिए हक से तुम्हारे पास चला आता हूँ"मैंने सौम्या के हाथ को अपने हाथ मे लेते हुए कहा।
"अगर अपना मानते तो आज इतने महीनों के बाद मिलने नही आते,और मुझे आज भी यकीन है कि तुम बिना काम के तो नही आये होंगे"सौम्या ने कुर्सी पर बैठते हुए बोला।
"काम के सिलसिले में ये नही आये है,सौम्या मैडम,काम के सिलसिले में मैं आपसे मिलने आई हूँ"तभी रागिनी ने मुझे धर्मसंकट से निकाला।क्योकि सौम्या की ऐसी अपन्त्व भरी

शिकायत सुनकर अब मेरा साहस नही हो रहा था कि मैं उसे बोल पाऊं की मै आज भी तुमसे काम की वजह से ही मिलने आया हूँ।
"क्यो अनुज की डिटेक्टिव एजेंसी बन्द हो रही है क्या,जो तुम्हे काम के लिये मेरे पास आना पड़ा,चिन्ता मत करो,मैं अनुज की एजेंसी बन्द नही होने दूँगी,जब तक मैं जीवित हूँ"सौम्या ने मुस्कराते हुए बोला।
"नही!सौम्या तुम्हे गलतफहमी हो रही है,मैं एक केस के सिलसिले में तुमसे मिलने आई हूँ"रागिनी ने सौम्या के उस मजाक का जवाब दिया।
"इसका मतलब तुमने अपनी एक अलग डिटेक्टिव एजेंसी खोल ली है,यार ये तो बड़ा झोल कर दिया तुमने,अब कल को कोई केस देना होगा तो मैं किसको दूँगी,एक मेरी छोटी बहन है और एक मेरा प्रिंस चार्मिंग है"सौम्या ये बोलकर फिर से मुस्कराई। रागिनी ने आहत नजरों से सौम्या की ओर देख़ा।
"सौम्या!पहले कॉफी मंगवा लो,क्योकि आज तुम बहुत फनी मूड में लग रही हो"रागिनी ने सौम्या को मुस्कराते हुए बोला।
"चलो कॉफी तो पिलाऊंगी ही,पहले ये बताओ क्या काम है तुम्हे" इस बार सौम्या ने किंचित गंभीर स्वर में बोला।
"तुम्हारी कंपनी में एक देविका नाम की लड़की काम करती थी,जिसने कंपनी के साथ दो करोड़ का फ्रॉड किया था"रागिनी ने ये बोलकर सौम्या की तरफ देखा।
"हाँ!लेकिन उसे तो हमने जेल भिजवा दिया था"सौम्या को उस लड़की के बारे में याद था।
"वो लड़की इस वक़्त जेल से बाहर है,शायद जमानत पर आई हो,कल रात को वो लड़की अनुज के घर पर आई और अनुज का पिस्टल चुराकर वहाँ से भाग गई"रागिनी ही सौम्या को सब बता रही थी।
"क्या?अनुज के रहते हुए अनुज का पिस्टल लेकर भाग गई,आई कान्ट बिलीव"सौम्या ने सिर से रागिनी की बात को नकारा।
"ये सच है,इसमे थोड़ी सी मेरी बेवकूफी थी,जिस वजह से वो पिस्टल ले जाने में कामयाब हो गई"इस बार मैंने सौम्या को यकीन दिलाया।सौम्या अवाक सी मेरी ओर देखती रह गई। तभी चपरासी ने कॉफी और स्नैक्स की ट्रे के साथ केबिन में प्रवेश किया।

सौम्या,देविका और मेघना -6

"तुम जरूर उसकी खूबसूरती पर मर मिटे होंगे,वो ज़ालिम चीज ही ऐसी है"सौम्या अजीब सी मुस्कान के साथ बोली।
"इन जनाब की यही आदत एक दिन या तो तिहाड़ भिजवायेगी,या फिर हमेशा के लिए कहीं और का टिकट करवाएगी,किसी भी खूबसूरत लड़की को देखते ही ये साहब दिमाग की बजाय किसी और तरीके से ही सोचने लग जाते है"रागिनी ने मेरे कुछ बोलने से पहले ही सौम्या के सामने भाजीपाड़ा कर दिया था। मैने आहत नजरों से रागिनी की तरफ देखा। लेकिन रागिनी के हावभाव में कोई परिवर्तन नही आया था।
"ये बात तो रागिनी सही कह रही है अनुज,तुम कई बार बहुत लापरवाही करते हो,बस किस्मत के धनी हो जो हर बार मुसीबतों से निकल जाते हो"सौम्या और रागिनी नाम की ये दोनों खूबसूरत बालाएं जो भी बोल रही थी,वो मेरे भले के लिए ही बोल रही थी।इसलिये मैं चाह कर भी उनकी बातों का विरोध नही कर पा रहा था,लेकिन अब मेरा उन दोनो की बात का रुख मोड़ना जरूरी हो गया था,नही तो अभी इन का ये 'अनुज पुराण'ख़त्म होने का नाम नही लेने वाला था।
"मेरे ख्याल से हम यहां देविका के बारे में बात करने आये थे,न कि मेरे बारे में वार्तालाप करने आये थे"मैंने हल्का सा मुस्कराते हुए बोला।
"देविका के बारे में बताने के लिये ज्यादा कुछ नही है,लेकिन वो जिंदगी जीने के लिए हर हथकंडे अपनाने में यकीन रखती थी।
"हमे उसके बैकग्राउंड के बारे में जानना है,जिससे हमें ये पता लग सके कि वो कहां कहां पाई जा सकती है"इस बार रागिनी ने बात को आगे बढ़ाया।
"वो सब जानकारी तो उसके बायोडाटा में मिल जायेगी,लेकिन उसमे उसकी कोई व्यक्तिगत जानकारी नही होगी,सब प्रोफेशनल ही होगी"सौम्या ने कुछ सोचते हुए बोला।
"मुझे धोखाधड़ी के उस केस की फ़ाइल मिल सकती है,जो तुमने उस पर किया था।
"वो तो तुम हमारी लीगल सेल से ले सकते हो,वहां रोशनी नाम की एडवोकेट मिलेगी,मैं उन्हें बोल दूँगी,लेकिन वो बहुत चालाक लड़की है,उसने गिने चुने दिनों में ही मेरी कमजोरी का पता लगा लिया था,उसके बाद उसने मुझें मेरे घर तक अप्रोच किया था,लेकिन जब से मेघना वाला केस हुआ है,मैं अब आफिस के स्टाफ को घर तक नही लेकर जाती हूँ,लेकिन वो दो तीन बार मुझे होटल के कमरे में मिली थी,तब उसके बारे में कुछ उसकी निजी बाते पता चली थी"ये बोलकर सौम्या एक पल को चुप हो गई थी।सौम्या की कमजोरी कई बार उसके लिए बहुत घातक सिद्ध हो चुकी थी।सौम्या एक अजीबो गरीब बीमारी से पीड़ित थी,वो बीमारी थी उसका निम्फोमानियाक होना!इस बीमारी में इंसान के जिस्म की हवस कभी पूरी नही होती थी,इसी वजह से सौम्या चाहें पुरुष हो या औरत,किसी के साथ भी

शारीरिक सम्बंध बनाने में गुरेज नही करती थी।उसकी इसी लत के चलते उसके पति राजीव बंसल ने अपने पिता और अपनी सौतेली माँ के कत्ल के साथ साथ सौम्या को भी ठिकाने लगाने का सोच लिया था,वो तो आपके इस खाकसार की बदौलत सौम्या की जान बच गई थी,अन्यथा राजीव बंसल अपने इरादों में लगभग कामयाब हो ही गया था,(सौम्या के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढिये"मुर्दे की जान खतरे में") राजीव बंसल के बाद सौम्या के आफिस में ही काम करने वाली लड़की मेघना ने भी सौम्या की इसी आदत का फायदा उठाया और सौम्या के घर मे ही डेरा जमा लिया,मेघना ने भी सौम्या की जान लेनें की साजिस रची थी,लेकिन इस बार भी आपके इस अदना से सेवक ने वक़्त रहते मेघना की साजिस पर से पर्दा हटा दिया था,जिस वजह से सौम्या एक बार फिर बाल बाल बची! (मेघना और सौम्या की इस कहानी को जानने के लिये पढिये"वो हवस भरी लड़की")

"मुझे पता नही उसने मुझे जो कुछ बताया था,वो सच है या झूठ,लेकिन अगर वो जानकारी तुम लोगो के कुछ काम आ सके तो मैं तुम लोगों को बता सकती हूँ"सौम्या ने ये बोलकर हमारी और देखा।

"उससे जुड़ी हर जानकारी हमारे काम की हो सकती है,अब उसने सच बोला है या झूठ ये तो हमारी जांच में पता चल ही जायेगा"मैने सौम्या की ओर देखते हुए बोला।

"जब वो दूसरी बार मुझे संग्रीला में मिली थी तो उसने मुझें बताया था कि कोई आदमी उसे ब्लैकमेल कर रहा हैं,और वो उसे अब तक दो लाख रु दे चुकी हैं,उसके बावजूद अब वो एक साथ दस लाख की डिमांड कर रहा है,उसने इस बारे में मुझ से मदद मांगी थी,लेकिन मैने उसे ठीक उसी प्रकार से मना कर दिया था,जिस प्रकार से मैने मेघना को पांच लाख देने से मना कर दिया था"सौम्या ने मुझे बताया।

"फिर जैसे मेघना ने उस बात से नाराज होकर तुम्हारी हत्या की साजिस रची थी,ठीक वैसे ही इस बन्दी ने दूसरा रास्ता अख्तियार किया और तुम्हारे डेटा को ही तुम्हारी राइवल कंपनी को बेच दिया"रागिनी ने सौम्या को बोला।

"रागिनी कॉर्पोरेट में ये सब चलता रहता है,डेटा चोरी करवाना,टेंडर के बारे में किसी लू पोल को जानना,यहां तक कि किसी सरकारी टेंडर के बाद तो विरोधी पार्टियों से धरने प्रदर्शन करवाना तक राइवल कंपनियों के हथकंडे होते है,कॉर्पोरेट की जासूसी में आ जाओ,यहां ज्यादा मज़ा है"सौम्या ने रागिनी की ओर देखकर बोला।

"जिस दिन शहर में मर्डर होने बन्द हो जायेगे,उस दिन कॉरपोरेट के लिए जासूसी करने लगूंगी"रागिनी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"तुम्हे देविका ने सिर्फ ब्लेकमेलिंग के बारे में ही बताया था,या ब्लेकमेलर के बारे में भी बताया था"मैंने बातचीत को फिर से देविका के बारे में लाने के लिए बोला।

"पूरा नाम नही जानती मैं,बस किसी कुमार के बारे में बार बार बोल रही थी,उस दिन उसने कुछ ज्यादा ही पी ली थी,इसलिए पूरी रात वो उस कुमार को ही गाली देती रही थी"सौम्या

ने जब कुमार के नाम का जिक्र किया था तो मेरी नजरो के आगे कुमार गौरव का चेहरा घूम गया था।
"देविका की जानकारी के एक कुमार को तो हम भी जानते है"रागिनी भी उसी कुमार गौरव के बारे में सोच रही थी।
"वो कुमार जिंदा है,अभी तक,वो तो उस दिन नशे में उसे बार बार मार डालने की बात कर रही थी"सौम्या ने आश्चर्य से बोला।
"उसी बन्दे की गाड़ी उसने कल रात को चुराई थी,उसी गाड़ी में बैठकर वो मेरे घर आई,और फिर उसी गाड़ी में किसी के खून के धब्बे आज पुलिस को मिले है"मैने सौम्या को बोला।
"ये तो कोई खतरनाक खेल,खेल रही है,एक तीर से कई शिकार करना चाह रही है"सौम्या ने मेरी ओर हैरानी से देखते हुए कहा।
"लेकिन लाख टके का सवाल ये है सौम्या की वो मेरा शिकार क्यो करना चाहती हैं,मेरी उससे क्या दुश्मनी है"मैंने सौम्या की ओर देखकर बोला।
"शायद कोई जेल में बन्द कोई तुम्हारा सताया हुआ इंसान तुम्हे किसी झमेले में फंसा कर तुमसे बदला लेना चाहता हो"सौम्या ने भी वही सोचा जो अभी तक हम भी सोच रहे थे।
"ठीक है सौम्या!ऐसे सताए हुए इंसान को भी जल्दी ही ढूंढ लूँगा मै,अभी तो तुम मुझे उस फ्रॉड केस की फ़ाइल दिलवाओ,और देविका का बॉयोडाटा भी दो"मै अब वहां से चलने के उपक्रम में था।
"कहीं जाने का इरादा है क्या,आज तुम दोनो मेरे साथ मेरे घर चलो,साथ मे डिनर करेगे"सौम्या ने आग्रह पूर्वक कहा।
"डिनर के लिये फिर कभी आयेगे सौम्या!अभी तो हमे उस कुमार को दोबारा टटोलना पड़ेगा,जिसके बारे में अभी तुमने बताया है"मैंने सौम्या को बोला।
"फिर कभी तो तुम साल भर के बाद ही आओगे,मेरी एक बात समझ नही आती की तुम मुझ से इतना दूर दूर क्यो भागतें हो"सौम्या ने शिकायती लहजें में बोला।
"यार मैं तो हुश्न का शैदाई इंसान हूँ,मैं क्यो तुमसे दूर भागूँगा,बस अभी तक हमारे सितारे नही मिले है"मैने ये बोलकर सौम्या को टालने का प्रयास किया।
"ठीक है अनुज,मैं तुम्हे ज्यादा नही कहूंगी,लेकिन उस केस फ़ाइल को लेने के लिए तुम्हे फिर से आना पड़ेगा,मैं अभी एच आर डिपार्टमेंट से देविका का बॉयोडाटा मंगवा देती हूँ"ये बोलकर सौम्या ने इंटरकॉम पर किसी को कुछ हिदायत दी।उसके बाद हम लोग देविका का बॉयोडाटा आने का इंतजार करने लगे।

****

जब सौम्या के आफिस से निकले तो शाम के सात बज चुके थे। मैंने गाड़ी में बैठते ही रागिनी की तरफ देखा।
"तुम्हे घर छोड़ दूं क्या"मैने रागिनी को बोला।

"मेरी गाड़ी तुम्हारे फ्लैट पर खड़ी है,मैं वहां से गाड़ी लेकर ही घर चली जाउंगी"रागिनी की बात सुनकर मैने गाड़ी को अपने घर की और दौडा दिया।मैं अभी मधुबन चौक से सीधा अंबेडकर हॉस्पिटल की तरफ जा रहा था। सेक्टर आठ के मेट्रो स्टेशन को पार करते ही एक लाल बत्ती पर मैने अपनी गाड़ी को रोका। तभी एक गाड़ी बिल्कुल मेरे करीब आकर रुकी।अचानक से मेरी उस गाड़ी की तरफ नजर पड़ी तो जो लड़की मेरी ओर देखकर मुस्करा रही थी,उसे देखकर मेरे होश उड़ गए थे। वो मेघना थी।वो मुझे देखकर लगातार मुस्कराए जा रही थी।मैंने एक गहरी नजर भरकर उसे देखा।मेरी ये समझ मे नही आ रहा था,की वो जेल से बाहर कब आई।
"घर जा रहे हो"तभी मेघना ने मेरी ओर देखकर बोला।
"हां!अभी तो मेरा इरादन घर जाने का ही था,लेकिन अब तुम्हे देखकर इरादा बदल दिया है,अब आज की शाम तुम्हारे साथ बिताने का इरादा है"अभी मैने बोला ही था कि वो तीन मिनट की लालबत्ती अब हरीबत्ती में बदल चुकी थी,और मेघना ने गाड़ी को तेजी से आगे बढ़ा दिया था। मैंने भी उसके पीछे गाड़ी को दौड़ाया,लेकिन उसका इरादा मुझे देखकर भागने का नही था,उसने थोड़ी सी आगे जाकर गाड़ी को साइड में लगा दिया। मैने भी उसके पीछे ही गाड़ी को रोका और अपनी गाड़ी से उतरकर मेघना की गाड़ी की ओर लपका। रागिनी लपक कर ड्राइविंग सीट पर आ गई थी। उसने मेरे साथ बाहर आने का कोई प्रयास नही किया था।मैं मेघना की गाड़ी के पास उसकी ड्राइविंग सीट की तरफ पहुंचा।
"तुम मेरे साथ गाड़ी में आओ अनुज,रागिनी को बोलो वो हमारे पीछे पीछे आ जाये,तुमसे कुछ बहुत जरुरी बात करनी है"मेघना ने मेरी और देखकर बोला।
"बाते तो मुझे भी तुमसे बहुत सारी करनी है,मैं आता हूँ अभी"ये बोलकर मैं रागिनी के पास जाकर उसे गाड़ी को पीछे लेकर आने के लिए बोला और वापिस आकर मैं मेघना की गाड़ी में आकर बैठ गया।
"जेल से कब बाहर आई तुम"मैंने गाड़ी में बैठते ही मेघना से पूछा।
"थोड़ी सेटिंग करके जमानत लेकर आई हूँ"मेघना ने संक्षेप में उत्तर दिया।
"यहां कैसे!इतेफाक से मिली हो,या फिर पीछा कर रही हो"मैंने हल्की सी मुस्कान के साथ पूछा।
"समझ लो पीछा ही कर रही हूँ! एक जरुरी काम था तुमसे"मेघना ने मेरी ओर देखकर बोला।
"मुझ से क्या काम आ गया तुम्हे,और मेरा पीछा क्या सौम्या के आफिस से ही कर रही हो"मैने उसकी तरफ देखकर बोला।
"हाँ!जब तुम सौम्या के आफिस में जा रहे थे,तो मैं भी सौम्या से मिलने के लिए ही जा रही थी,लेकिन तुम्हे वहां जाते हुए देखकर मैं वापिस पार्किंग में आकर अपनी गाड़ी में बैठ गई

थी"मेघना का व्यवहार मेरी समझ में नही आ रहा था।
"तुम्हे मुझ से क्या काम है"मैने अब उससे काम पूछना ही सही समझा।
"मेरी एक फ्रेंड मुसीबत में है,उसे तुम्हारी मदद चाहिए अनुज"मेघना ने मेरी ओर कातर दृष्टि से देखते हुए बोला।
"तुम्हारी कौन सी फ्रेंड मुसीबत में है"मैंने असमंजस में उसकी ओर देखा।
"मैं उसी से मिलवाने के लिए तुम्हे लेकर जा रही हूँ"मैने देखा कि मेघना रिठाला का मेट्रो स्टेशन भी पार करके सेक्टर चौबीस की ओर अपनी गाड़ी को मोड़ चुकी थी।मैने एक बार घूमकर देखा। रागिनी बदस्तूर हमारे पीछे ही आ रही थी। कोई दस मिनट उस सेक्टर में ही गाड़ी को घुमाने के बाद उसने एक फ्लैट के बाहर गाड़ी रोक दी।
"इसी फ्लैट के फर्स्ट फ्लोर पर जाना है"मेघना ने गाड़ी के दरवाजे ओपन करते हुए बोला। मैंने देखा कि रागिनी भी मेघना की गाड़ी के पीछे गाड़ी लगा चुकी थी,और गाड़ी से उतरकर मेरे नजदीक आकर खड़ी हो गई थी।मेघना ने भी अपनी गाड़ी को लॉक किया और उस फ्लैट की पहली मंजिल की ओर बढ़ गई। हम दोनों भी उसी के नक्शेकदम पर चल पड़े थे। पहली मंजिल पर पहुंच कर मेघना ने बेल बजाई। कोई दो मिनट के बाद एक जोडी कदमो की आवाज दरवाजे के करीब आती हुई सुनाई दी। दरवाजा खुला और दरवाजे पर इस वक़्त मेरी नजर में अनामिका,कुमार गौरव की नजर में मल्लिका और पुलिस फ़ाइल में देविका के नाम से पाई जाने वाली वही खूबसूरत जानिसार,नरगिस ए मस्ताना खड़ी हुई थी,और मेरी ओर देखकर मंद मंद मुस्करा थी।उसे वहां देखकर मेरे होठो पर भी एक कुटिल मुस्कान थिरकने लगी थी।

उलझती गुत्थी -7

देविका की वो मुस्कान कुछ ही पल में लुप्त हो गई और उसने हमारे अन्दर आने के लिए रास्ता छोड़ दिया।मैं लगातार उसी को घूरते हुए सोफे पर जाकर बैठ गया। उसकी वही कातिल मुस्कान एक बार फिर से उसके होठो पर थिरकने लगी थी।
"तुम दोनो एक दूसरे को पहले से जानते हो क्या,ये देविका तुम्हे देखकर बहुत मुस्करा रही है"मेघना ने अनजान स्वर में बोला।
"ये तो यही मोहतरमा बतायेगी की ये मुझे कैसे जानती है,लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ,की ये लड़की मुझे बेवकूफ बनाकर मेरे घर से मेरा पिस्टल चुरा कर भागी है"मैने मेघना की ओर देखते हुए ही,ये बोला ही था कि रागिनी अपनी जगह से उठी और अपनी पिस्टल को उसने देविका की कनपटी पर लगा दिया।
"वो पिस्टल निकाल कर लाओ,जहां भी उसे छुपाकर रखा है,वरना यकीन मानो गोली चलाते हुए मेरा हाथ कदापि नही कांपता"रागिनी का इस तरीके से उसके पिस्टल लगाने का उद्देश्य मैं समझ गया था,ये देविका के ऊपर एक मनोवैज्ञानिक दवाव बनाने का तरीका था।
"ये तुम क्या कर रही हो रागिनी,आराम से बैठकर बात करो,अगर सच मे इसके पास अनुज की पिस्टल है,तो मैं उसे वापिस दिलवा दूँगी"मेघना ने घबराए हुए स्वर में कहा। वैसे भी मेघना ने रागिनी के जलवो को अपनी आंखों से देखा हुआ था।
"आराम से बात तभी होंगी मेघना,जब ये पहले अनुज सर का पिस्टल हमारे हवाले कर देगी,और साथ मे ये भी बतायेगी की उस पिस्टल को चुराने के पीछे इसका क्या मन्तव्य था"रागिनी मेघना की बात सुनने के कतई मूड में नही थी।
"मैने कोई पिस्टल नही चुराई,हाँ ये सच है कि मैं उस दिन अनुज के फ्लैट में गई थी,लेकिन मैं उस वक़्त अपनी जान बचाने के लिए वहाँ घुसी थी"देविका ने सिरे से झूठ बोला।
"मैंने तुम्हारे सामने अपनी पिस्टल को अपनी दराज में डाला था,तुमने मुझे कॉफी बनाने के लिए बोला,जब मैं तुम्हारे लिए कॉफी बनाने के लिए गया तो तुम मुझे बिना बताए वहां से जा चुकी थी,तब मैंने सोचा कि शायद तुम कोई चोर थी,और कुछ चुराने के लिए मेरे घर में घुसी थी,फिर मैंने अपना सामान चेक किया तो दराज में से मुझे अपनी पिस्टल गायब मिली थी"मैने उसे उस रात का एक एक वाक्य याद दिलाया।
"लेकिन अगर मैंने पिस्टल चुराई होती तो मैं खुद तुम्हें अपने घर पर क्यो बुलाती,पूछ लो मेघना से,मैने ही मेघना को तुमसे मिलवाने के लिए फ़ोर्स किया था"देविका ने अपनी बेगुनाही का तर्क रखा।
"तुम दोनो ही सौम्या की कंपनी में काम करती थी,दोनो ने ही सौम्या के साथ कुछ न कुछ गलत किया है,जेल में तुम दोनो ने जरूर सौम्या के खिलाफ कोई नई खिचड़ी पकाई

होगी!,अब क्योकि मेघना तो अच्छी तरह से जानती है कि अगर सौम्या किसी मुसीबत में फंसती है तो वो अनुज को जरूर याद करेगी,इसलिए तुम लोगो ने पहले अनुज को ही रास्ते से हटाने का प्लान बनाया होगा"सोच के मामले में रागिनी इस वक़्त मुझ से भी चार कदम आगे चल रही थी।
"यार मैं अपने मामले में अनुज को कोई गुनाहगार मानती ही नही हूँ,मेरे ही कर्म गलत थे,तो मुझे तो सजा मिलनी ही थी,लेकिन मैं हमेशा अनुज को अपना सबसे अच्छा दोस्त ही समझती हूँ,तभी मैने जेल में भी किसी को कोई मदद की जरूरत होती है तो,अनुज का नाम ही सभी को बताती हूँ"मेघना ने मेरी दोस्ती का दम भरा।लेकिन फिलहाल की परिस्थितयो में उसकी इस दोस्ती के दम में कोई दम नही था।
"मैने तुम्हारे सामने अपना पिस्टल अपनी दराज में रखा था,तुम्हारे सामने किसी और आदमी ने मेरे फ्लैट में कदम नही रखा था,न तुम्हारे जाने के बाद कोई और मेरे फ़्लैट में आया,फिर अगर मेरी पिस्टल को तुम नही लेकर गई तो उसे जमीन निगल गयी या आसमान खा गया"मैने क्षुब्ध स्वर में बोला।
"तुमने ध्यान से चेक किया है कि वो पिस्टल तुम्हारे घर मे नही है"इस बार मेघना बीच मे बोली।
"इतना बड़ा बेवकूफ तो हूं नही की बिना घर मे चेक किए ही मैं थाने तक मे जाकर रिपोर्ट लिखवा दूंगा"मैने हल्के से गुस्से में मेघना की ओर देखकर बोला।
"एक बार हम लोग जाकर तुम्हारे घर पर ही उस पिस्टल को ढूंढ़े,हो सकता है,पिस्टल वही पर हो और तुम बिना वजह इधर उधर मारे फिर रहे हो"ये बात देविका ने बोली।मेरे साथ साथ रागिनी ने भी उसे हैरानी से देखा।
"यार इस पिस्टल को हटा लो,इस पिस्टल को देख देख कर मेरी हार्टबीट बढ़ रही है,कहीं ये बेगुनाह बेमौत न मारी जाए"मेघना ने रागिनी की ओर देखते हुए बोला।इस बार मेघना की रिक्वेस्ट भरी आवाज सुनकर रागिनी ने भी अपनी पिस्टल को देविका की खोपड़ी से हटा लिया।
"अनुज सर!एक बार इसकी तमन्ना भी इसके सामने अपने घर की तलाशी करवाकर पूरी कर दो,पिस्टल अगर वहाँ नही मिलती है तो,इसको उसी समय पुलिस के हवाले कर दो"रागिनी ने अब देविका के पास से मेरी ओर आते हुए कहा।
"ये तरीका सही रहेगा"मैंने रागिनी की बात से सहमति जताई।
"लेकिन मुझे पुलिस के हवाले क्यो करोगे,तुम मेरी तलाशी ले लो,मेरे पूरे घर की तलाशी ले लो,जब मैंने कुछ किया ही नही तो मैं फिर से जेल क्यो जाऊं"देविका ने पुलिस बुलाने की बात का पुरजोर विरोध किया।
"लेकिन तुम्हारी हिस्ट्री के बारे में अभी तक जो सुना है,उस हिसाब से तो तुम आदतन अपराधी हो"मैने देविका को हिक़ारत से देखते हुए बोला।

"सिर्फ सुना है न,कभी अपनी आंखों से मेरे खिलाफ कोई सबूत देखा है"देविका ने विश्वास भरी दृष्टि से मेरी ओर देखा।
"हमारी गुड बुक में तो अब आई हो तुम देविका,तो अब सबूत भी ढूंढ लेगे"रागिनी ने उसी के अंदाज में उसे जवाब दिया।
"कुछ तो तुम्हारे बारे में कुमार गौरव ने बताया है,कुछ पुलिस फ़ाइल से पता चला है,बाकी बचा खुचा सौम्या ने बता दिया,इसके बाद भी तुम सबूत की बात कर रही हो"मैने हैरानी से देविका को देखा।
"इसी कुमार गौरव के बारे में ही तो तुमसे बात करने के लिए मेघना के जरिये,तुम्हे यहाँ बुलाया है अनुज,मैं तो खुद उस कुमार की सताई हुई हूँ!मैं तो खुद पीड़िता हूँ,जिसे एक योजनाबद्ध तरीक़े से हर किसी की नजर में गुनाहगार बना दिया है"देविका ने विक्टिम कार्ड खेला।लेकिन अब मेरी दिलचस्पी उसकी बातों में जाग चुकी थी।मैं अब उसका भी सच उसके मुंह से सुनना चाहता था।
"बोलो!तुम क्या बोलना चाहती हो!लेकिन कुछ भी बोलने से पहले एक बात का ध्यान रखना की कोई भी झूठ मेरे सामने ज्यादा देर तक ठहरता नही है"मैने देविका को चेतावनी भरें लहजें में बोला।
"मैं खुद कुमार गौरव की ब्लेकमेलिंग का शिकार हूँ,उसने न केवल मुझे ब्लेकमेल करके अपना काम लोगों से निकलवाया,बल्कि जब मैंने उसके लिए और ज्यादा इस्तेमाल होने से इनकार किया तो उसने एक झूठा केस बनवा कर मुझे जेल भिजवा दिया"देविका बोल रही थी कि कुमार उसे ब्लैकमेल कर रहा था,जबकि कुमार उसकी और ही पिक्चर मुझे दिखा चुका था।
"लेकिन कुमार ने हमे ये तो कभी नही बोला कि तुम उसे ब्लैकमेल कर रही थी,उसने तो हमे इतना बताया था कि तुम अपने हुश्न के जाल में लोगो को फंसा कर उसके पैसे पर जब तक अय्याशी करती थी,जब तक वो बन्दा तुम पर अपने पैसे लुटाता था,उसके बाद जब वो पैसे लुटाना बन्द कर देता था,तो तुम कोई नया बकरा हलाल करने के लिए ढूंढ लेती थी"मैंने कड़े शब्दों में साफगोई से वही बोला,जो मुझे कुमार ने बोला।
"उससे ये भी तो पूछते की उस पैसे के बदले में वो मेरा क्या लूटते थे, उसको अपना पैसा नजर आ गया,लेकिन मेरी लूटी हुई इज्जत उसे नजर नही आई,सिर्फ इस कुमार ने ही अपने फायदे के लिए मुझे दस से ज्यादा लोगो के साथ सुलाया,सिर्फ मेरे जिस्म का इस्तेमाल करके इस हरामी ने कुंडली,और बवाना जैसे इंडस्ट्रियल इलाको में पांच सौ गज में बड़ी बड़ी फैक्ट्री बना ली,और उन्ही पैसो के दम पर मुझें जेल तक भिजवा दिया"देविका ने मेरी ओर देखकर बोला।
"लेकिन जेल तो तुम्हे सौम्या ने भिजवाया था,फ्रॉड तो तुमने सौम्या के साथ किया था"तभी रागिनी ने वाजिब सवाल किया।

"सौम्या को सिर्फ कुमार ने अपने मोहरे के तौर पर इस्तेमाल किया था,मेरी ईमेल और आईडी के इस्तेमाल से मेरे ही खिलाफ ऐसी साजिस रची की उसके कर्मो की सजा भुगतने के लिए मुझे जेल जाना पड़ा,और अभी भी जमानत पर हूँ"देविका ने बोला।
"कुमार ने क्या किया"मैंने देविका से पूछा।
"कुमार ने 'ऐनी डेस्क'का इस्तेमाल करके मुझ से सौम्या की कंपनी की डेटा फ़ाइल अपने कंप्यूटर में खुलवा ली,और उन फाइलों को अपने कंप्यूटर में सेव कर लिया,फिर मेरी ईमेल आईडी से उन फ़ाइल को उन लोगों को भेज दिया,जिनसे उसने उस डेटा को बेचने का सौदा किया था,और फिर खुद ही सौम्या को गुमनाम काल करके इस फ्रॉड की जानकारी दे दी,अब क्योकि डेटा भेजने में मेरी ईमेल आईडी का इस्तेमाल हुआ था,तो मुझे ही दोषी माना गया"देविका ने अपनी कहानी सुनाई।
"तुम्हारी कहानी में बहत्तर छेद है देविका,जब ये केस पुलिस में गया होगा,तब पुलिस ने उस सर्वर को भी तलाश किया होगा,जिस कंप्यूटर से वो मेल की गई थी,उस स्थिति में कुमार भी तो उस केस में तुम्हारा सहअभियुक्त बनता"रागिनी ने फिर से एक और वाजिब सवाल देविका से किया।
"पुलिस के आगे मैंने कुमार के बारे में बोला था,लेकिन मैंने बोला न कि पैसा बोलता है,पुलिस ने मेरी बातों पर कोई तवज्जो ही नही दी,सिर्फ उस ईमेल आई डी की बुनियाद पर ही मुझ पर केस बना दिया"देविका ने जो बोला था,मैं उससे इंकार नही कर सकता था। पुलिस में बहुत लोग ऐसे मिल जायेंगे जो पैसा मिलने के बाद रस्सी का सांप और सांप को रस्सी बनाने में माहिर थे।
"चलो मैं एक मिनट को तुम्हारी कहानी पर विश्वास भी कर लूं,तो मैं अभी तक ये नही समझ पाया कि कल रात को तुम मेरे ही घर मे क्यो घुसी,और कुमार की गाड़ी तुम्हारे पास कहां से आ गई,सबसे बड़ी बात,जब तुम गाड़ी से उतरी तो तुम भागते हुए मेरे घर की ओर ही क्यो गई,जबकि सामने ही ढाबा खुला हुआ था,अगर सच मे तुम्हारी जान को खतरा था,तो सबसे पहले तो तुम्हे ढाबे में ही जाना चाहिए था"मैने एक साथ कई सवालो की झड़ी लगा दी थी।
"उस गाड़ी में उस समय भी कुमार अंदर था,वो पिछली सीट पर बैठा हुआ था,जब मैं वापिस आई तब वहां से आगे जानें के बाद उसने उस गाड़ी को अपने कब्जे में दोबारा ले लिया था,उसके बाद उसने मुझें मेरे घर पर छोड़ा और फिर उसी गाड़ी से वापस गया,लेकिन उस गाड़ी के चोरी होने की रिपोर्ट वो शाम को ही थाने में दर्ज करवा चुका था"देविका ने जो बताया,वो कोई बहुत शातिर दिमाग आदमी ही कर सकता था।
"लेकिन मेरा सवाल अभी फिर से वही है कि मेरा पिस्टल कौन लेकर गया,मैने कुमार की उस गाड़ी के आने से लेकर जाने तक की उस ढाबे के सीसीटीवी कैमरे की पूरी फुटेज चेक

करी है,लेकिन मुझें तुम्हारे अलावा कोई और शख्स नजर नही आया,जो मेरे घर की तरफ गया हो"मैंने फिर से अपनी बात को दोहराया।
"मैं फिर बोल रही हूँ कि,मैं कोई पिस्टल आपके यहाँ से उठाकर नही लाई हूँ,अब एक बार फिर से अपने घर को अच्छे से चेक कीजिये"देविका अभी भी अपनी बात पर अडिग थी। मैं अब उसकी बात पर बुरी तरह से झल्ला चुका था।
"इस वक़्त अगर तुम्हें मौका मिले की तुम कुमार को मार सको,तो उसे मार डालोगी न"तभी रागिनी ने एक अजीब सा सवाल देविका से किया।
"बिल्कुल मार दूँगी"देविका ने बेहिचक जवाब दिया।
"ऐसे में जब तुमने अनुज को अपनी पिस्टल को दराज में रखते हुए देखा,तो स्वभाविक तौर पर तुम्हारे मन में ये ख्याल आया होगा कि काश ये पिस्टल मेरे पास हो तो मैं कुमार की जान ले लू"रागिनी ने उसकी मनस्थिति के बारे में बताया।
"लेकिन ये सब सोचकर अगर मैं पिस्टल लेकर जाती तो,कुमार तो गाड़ी में ही बैठा हुआ था,मैं पहली फुर्सत में ही उसे गोली मार देती"देविका ने रागिनी के सवाल का जवाब दिया।
"उस वक़्त तो नही मार सकती थी,क्योकि सामने तो ढाबा था,ऐसे सबके सामने गोली मारती तो तुम पकड़ी जाती"रागिनी ने फिर से उसके जवाब की हवा निकाली।
"लेकिन अगर मुझे कुमार को मारना ही होता तो मैं आज अनुज को अपने घर क्यो बुलाती,मैंने अनुज को इसलिए बुलाया है कि मेघना ने जेल में मुझें अनुज की काबलियत के बारे में बताया था,और इसने बोला था कि अगर मेरी सच्चाई पर अनुज को विश्वास हो गया तो,अनुज सौम्या को भी कन्विंस कर लेगा,क्योकि सौम्या अनुज की बात कभी नही टाल सकती"देविका के पास हर सवाल का जवाब था।लेकिन अब जो सवाल मै पूछने जा रहा था,उस सवाल का जवाब शायद उसके पास नही होता।
"चलो तुम्हारी सारी बात मैने मान ली,तुम अब मेरे सिर्फ एक सवाल का जवाब दे दो,जब तुम खुद कुमार के साथ मेरे घर तक आई थी,तो तुमने अपनी जान में खतरे होने की झूठी क्यो सुनाई, और मेरे घर पर आने का तुम्हरा मकसद क्या था"मैने ये सवाल पूछ कर अपनी तीक्ष्ण निग़ाहों को उसके डूबते हुए सूरज की लालिमा बिखेरते चेहरे जमा दिया। उस लालिमा भरे चेहरे पर पसीने की बूंदे उभर आई थी। उसकी चुप्पी से कमरे में सन्नाटा पसर चुका था।

पिस्टल का मिलना -8
"जवाब दो मेरी बात का मेरी लख्तेजिगर"मैने देविका को अपने चिरपरिचित अंदाज में फिर से बोलकर वहां छाये हुए सन्नाटे का अंत किया।
"मैंने झूठ बोला था कि,मुझें जान का खतरा था,मैं बस तुमसे एक बार मिलना चाहती थी,क्योकि मेघना ने तुम्हारी मेरे सामने बहुत तारीफ की थी,इसलिए मैं तुम्हारा टेस्ट ले रही थी"देविका ने लगे हाथो एक नई कहानी बनाई।
"क्या टेस्ट लेना चाहती थी"मैने पूछा।
"मैं देखना चाहती थी कि तुम सच मे ही इतने हरफनमौला इंसान हो या मेघना बेवजह तुमसे इम्प्रेस है"देविका ने अचानक से उस कमरे के माहौल को एक दम तीन सौ साठ डिग्री के कोण पर घुमा दिया था।
"लगता है तुम्हे कहानियां बनाने में महारत हासिल है देविका,तुम ये बेकार के धंधे छोड़कर उपन्यास लिखना शुरू कर दो,जल्दी पॉपुलर हो जाओगी"रागिनी ने इस बार एक कुटिल मुस्कान के साथ देविका को बोला था।
"मैं कोई कहानी नही बना रही हूँ रागिनी, मेरी बात का यकीन मानो!"देविका ने मुरझाये हुए स्वर में बोला।
"अगर कहानी नही है तो बताओ,तुमने अनुज का पिस्टल क्यो गायब किया"रागिनी को एक प्रतिशत भी उसकी बात पर विश्वास नही था।
"मैं बार बार बोल रही हूँ,की मैंने आपका पिस्टल गायब नही किया है"देविका ने एक बार फिर पुरजोर लहजें में बोला।
"अनुज! तुम एक बार देविका के सामने ही अपने घर पर फिर से क्यो नही चेक कर लेते"मेघना ने बीच का रास्ता सुझाया।
"अब तो यही करना पड़ेगा,चलो तुम मेरे साथ मेरी गाड़ी में चलो,और रागिनी मेघना के साथ आ जाएगी"मैने उन सभी की तरफ देखते हुए बोला। मेरी बात सुनते ही वे तीनो भी सोफे से उठ खड़े हुए।कुछ ही देर में हम अपनी अपनी गाड़ियों से मेरे घर की ओर उड़े जा रहा थे।

****

घर पहुंचने में हमे सिर्फ दस मिनट लगे,देविका के घर से मेरे घर का रास्ता महज दस मिनट का ही था,और पिछले दस मिनट से ही हम अपने घर का चप्पा चप्पा छान रहे थे।लेकिन अभी तक देविका का दावा फेल होता हुआ हो नजर आ रहा था। रागिनी इस वक़्त मेघना के साथ मेरे किचन में पिस्टल की तलाश में गई हुई थी। क्योकि हमारी बातो की रोशनी में ये बात उभर कर आ चुकी थी कि,मैं देविका से बात करते हुए ही किचन में गया था। कोई पांच मिनट के बाद ही रागिनी की आवाज मेरे कानों में गूंज चुकी थी।
"तुम्हारा पिस्टल तो यहां है अनुज"उसकी बात सुनते ही मैं किचन की ओर दौड़ा।

"रुको इसे हाथ मत लगाना"मैंने रागिनी को उस पिस्टल को हाथ लगाने से रोका। रागिनी तुरन्त मेरी बात को समझ गई थी।
"हम आज दिन में भी इस किचन में आये थे,तब तो ये पिस्टल यहां नही थी"पिस्टल को वहां देखकर मेरा दिमाग चक्करघिन्नी खा चुका था।
"तुमने ध्यान नही दिया होगा,ये हमे इस गैस के चूल्हे के नीचे से मिला है"मेघना ने रागिनी से पहले बोला। मैने रागिनी की तरफ देखा,उसने भी सहमती में अपने सिर को हिलाया।
"मैं एसआई देवप्रिय को बुला रहा हूँ,इस पिस्टल के लास्ट फिंगर प्रिंट हर हाल में लेने होगे,क्योकि मुझे अच्छी तरह से याद है कि मैंने कल रात को कॉफी बनाने के लिये किचन में जाते हुए पिस्टल को अपनी बेड की दराज में ही रखा था"मैं अभी भी अपनी बात पर कायम था।
"यही सही रहेगा!हमे पुलिस को वैसे भी इस पिस्टल की बरामदगी के बारे में तो सूचना देनी ही होगी"रागिनी ने मेरी तरफ देखते हुए बोला।
"अब तो पिस्टल मिल गई है तुम्हें!अब पुलिस को बुलाने की क्या जरूरत है"देविका को पुलिस का कुछ ज्यादा ही खौफ था।सुनने में तो यही आया था कि जेल जाने के बाद लोगों के दिलो से पुलिस का खौफ दूर हो जाता है,लेकिन यहां देविका के मामले में दूसरा ही सीन नजर आ रहा था।
"तुम क्यो इतना घबरा रही हो देविका,जब पुलिस में किसी वस्तु के खोने की सूचना दर्ज करवाई जाती है,तो उसके मिलने पर उसकी सूचना देना भी हर नागरिक का दायित्व होता है"रागिनी ने स्पष्ट शब्दों में देविका को समझाया।
"रागिनी सही कह रही हैं देविका,जब तुमने कुछ नही किया है तो,तुम्हे पुलिस के आने से क्या परेशानी है"इस बार मेघना भी देविका को समझाने वाले स्वर में बोला।मैं एक बात शुरू से ही नोट कर रहा था।मेघना खुद को शुरू से ही खुद को देविका से अलग दिखाने की चेष्टा कर रही थी,उसे अभी तक एक भी बार देविका का पक्ष लेते हुए मैने नही देखा था।खैर मैंने अभी अपना ध्यान मेघना के ऊपर से हटाया और देवप्रिय को फोन मिलाने लगा।मैने उसे पांच मिनट तक सारी बातों को समझाया। उसने तत्काल मेरे घर पहुंचने का आश्वासन दिया।।धीरे धीरे रात अब गहराती जा रही थी। कल की रात भी ये देविका नाम की जालिम लोशन मेरे घर में थी,और आज की रात तो इन मोहतरमा के साथ दो और हसीनाएं मेरे घर को रोशन कर रही थी। रागिनी की खूबसूरती भी कोई देविका के मुकाबले में कहीं से भी कम नही थी। मेघना भी इन दोनों से कहीं भी उन्नीस नही थी। मैं भी इस वक़्त पता नही क्यो इन तीनो के हुश्न की तुलना करने बैठ गया था। ऊपरवाले कि बनाई हुई किसी भी कलाकृति का तुलनात्मक अध्धयन करने वाला मैं कौन होता हूँ। मैं इस वक़्त बेताबी से देवप्रिय के आने का इंतजार कर रहा था।एक बार पिस्टल के फोरेंसिक जांच के लिए जाने के बाद मैं इन सभी को अपने फ्लैट से रुखसत कर सकता था।

"अनुज एक बार मेरी मुलाकत सौम्या से करवा दो न,मैं उससे अपने गुनाहों की माफी मांगना चाहती हूँ"तभी मेघना ने मेरी ओर देखकर बोला।
"सौम्या से मिलने के लिए मेरी क्या जरूरत है मेघना! उससे तो तुम खुद भी जाकर मिल सकती हो"मैंने मेघना की ओर देखते हुए बोला।
"मैं कोशिश कर चुकी हूँ अनुज,लेकिन वो मेरा फोन ही नही उठा रही है"मेघना ने रुआंसे स्वर में कहा।
"उसे मालूम है क्या की तुम जेल से बाहर आ चुकी हो"मैने मेघना से पूछा।
"नही!मै उसे नए नम्बर से मिला रही थी,उसने तब भी फोन नही उठाया,उसके बाद मैंने आफिस के नंबर पर भी फोन मिलाया,लेकिन उसने लाइन पर आने से मना कर दिया"मेघना ने निराशा से बोला।मैं अभी उसकी बात का जवाब देने ही जा रहा था,की मेरे फ्लैट की बेल बज गई।

****

आने वाला शख्स एसआई देवप्रिय ही था।उसने एक नज़र मुझ पर डाली और एक नजर मेरे कमरे में लगे हुए हसीनाओं के मेले पर डाली। मैंने बिना कोई भूमिका बांधे ही देवप्रिया को किचन में ले जाकर पिस्टल दिखाया।
"पिस्टल यही पर रखा है,जब से तुमने देखा"देवप्रिया ने मेरी तरफ देखते हुए बोला।
"मुझ से पहले पिस्टल रागिनी ने और मेघना ने देखा था,उन्हें ये पिस्टल इस गैस चूल्हे के नीचे दिखाई दिया था"मैने रागिनी की ओर देखते हुए बोला।
"मुझ से पहले मेघना ने इस पिस्टल को देखा था,क्योकि मैं तो एक सरसरी नजर डालकर देख रही थी,लेकिन मेघना हर सामान को हटाकर अच्छे से देख रही थी"रागिनी ने भी तुरन्त बोला।
"ये मोहतरमा वही है क्या,जिन पर कल आपने पिस्टल चोरी करके ले जाने का इल्जाम लगाया था"देवप्रिय ने मेघना पर नजर डालते हुए मुझ से पूछा।
"नही वो मैडम तो ये है,देविका!अभी दो दिन पहले ही जमानत पर बाहर आई है"मैंने देविका की ओर इशारा किया।
"मैने पहले ही कहा था कि जासूस हो तो कोई न कोई झोल तो तुम्हारी कहानी में जरूर मिलेगा,पिस्टल आपके घर मे मौजूद है और कल रात से आपने जीना हमारा हराम किया हुआ है"देवप्रिय ने मेरी तरफ देखते हुए बोला।
"कहानी में झोल तो इन मैडम के आने से हो गया है जनाब!"मैने देविका की ओर इशारा करते हुए बोला।
"लेकिन अगर यही पिस्टल लेकर गई होती तो,अभी इस वक़्त ये पिस्टल आपके घर से ही कैसे मिल गया"देवप्रिया ने अनुराग भरी दृष्टि से देवप्रिया की ओर देखा। खूबसूरती का यही फायदा होता है,सामने वाली बन्दी कितनी भी शातिर दिमाग क्यो न हो,लेकिन दिखने मे

लगती मासूम ही है,पता नही किस बेवकूफ ने ये कहावत बनाई है कि खूबसूरत औरत का दिमाग उसके घुटनो में होता है,आपके इस सेवक का तो मानना था कि खूबसूरत औरत को देखकर अच्छे भले इंसान का दिमाग उसके टखनों में चला जाता है। कुछ यही हाल इस वक़्त हमारे जनाब एसआई देवप्रिया का था जो,अभी तक देविका को उसी अनुराग भरी दृष्टि से निहार रहे थे।

"जी मैं अब भी ये समझ नही पा रहा हूँ कि मैने इन मोहतरमा के सामने अपना पिस्टल अपने बेड की दराज में रखा था,फिर आज ये पिस्टल मेरे किचन में कैसे मिला"मैंने असमंजस भरे स्वर में कहा।

"मैं बताता हूँ की ये सब कैसे हुआ!बरसात की रात में जब कोई इन जैसी बला की खूबसूरत लड़की एकाएक सामने आकर खड़ी हो जाये और वो भी आपके बैडरूम में तो अच्छे खासे बन्दे के होशोहवास न केवल गुम हो जाते है,बल्कि वो कल्पनाओं के सागर में गोते लगाते हुए किसी हिल स्टेशन पर अपने हनीमून की भी प्लानिंग करनें लगता है,ऐसा ही कुछ आपके साथ हुआ है,उसी कल्पनालोक में विचरते हुए आप उस पिस्टल को हाथ मे लिए हुए ही किचन में पहुंच गए,वहां बकौल आपके आपने इन मोहतरमा की फरमाइश पर कॉफी बनाई,अब कॉफी आपने हाथ मे पिस्टल लेकर तो बनाई नही होगी,आपने उस पिस्टल को वही किचन में गैस के पास रखा होगा,जो किसी चीज़ के लगने की वजह से सरक कर चूल्हे के नीचे चली गई होगी"देवप्रिय एक मिनट में ही अपनी कल्पना शक्ति का पूरा प्रदर्शन कर चुका था,और अपनी बात खत्म करने के बाद बन्दे ने देविका की ओर एक विजयी मुस्कान के साथ देखा। देविका ने भी मुरीद नजरो से देवप्रिय की ओर देखा। आखिर देखती भी क्यो नही,जनाब ने सिर्फ दो मिनट में मैडम को हर आरोप से बरी जो कर दिया था।

"लेकिन जनाब मैं इतना भुलक्कड़ नही हूँ कि पिस्टल जैसी चीज को लेकर मैं इतना लापरवाह हो जाऊंगा और उसके गुम हो जाने की रिपोर्ट लिखवाने थाने तक चला जाऊँगा"मैने देवप्रिय की बात का पुरजोर विरोध किया।

"लेकिन मैंने तो सुना है कि आप काफी दिलफेंक किस्म के इंसान है,और लड़कियों के मामले में जहाँ देखी तवा परात,वही गुजारी सारी रात वाली कहावत में यकीन रखते है"देवप्रिय ने बड़ी ही अप्रिय सी लगने वाली बात को मुस्कराते हुए बोल डाला था।

"नही सर!अनुज के बारे में ये बोलना सही नही है,बल्कि बहुत सी लड़कियां है,जो अनुज को पसंद करती है,लेकिन अनुज बाबू थोड़ा फ़्लर्ट जरूर करते है,लेकिन आज तक कभी फिसले नही है"इस बार मेघना ने इस मामले में मेरी पुरजोर वकालत की। मै ऐसे आड़े वक़्त में मेघना का मेरा बचाव करते हुए देखकर उसकी और मुरीद नजरो से देखने लगा।

"चलिये!मै यहां पर कोई आपका चरित्र प्रमाणपत्र बनाने के लिए नही आया हूँ,अब मुद्दे की बात कर लेते है,सबसे पहले तो मामला आपके ही खिलाफ बनता है कि,आपने चोरी की

झूठी रपट लिखवाई,अब इसके पीछे आपका उद्देश्य क्या था,जरा उस पर भी रोशनी डाल दो"देवप्रिय ने मेरी ओर देखते हुए बोला।
"देखिए सर!ये एक बहुत बड़ी साजिस है,जिसमे अनुज सर को फंसाया जा रहा है"रागिनी ने काफी देर के बाद हमारी बातो में दखल दिया था।
"उस साजिस को साबित करनें के लिए आपको थाने आना पड़ेगा!रागिनी जी,अभी रात बहुत हो चुकी है और मैं पिछले छत्तीस घँटे से लगातार ड्यूटी पर हूँ"देवप्रिय ने रागिनी की तरफ़ देखते हुए बोला।
"मतलब आपने इन मैडम को बिल्कुल क्लीन चिट दे दी,आप इनसे इस बारे में कोई पुछताछ नही करेगें,की ये मैडम कल रात को यहां पर करने क्या आई थी,इसका यहाँ आने का उद्देश्य क्या था"रागिनी ने तल्ख स्वर में देवप्रिय से पूछा।
"देखिए मैडम!आप हर बार मुझे, मेरा काम सिखाने की कोशिश मत कीजिये,अनुज साहब ने रिपोर्ट लिखवाई की पिस्टल इनके घर से चोरी हुआ है,और पिस्टल मिला भी अनुज साहब के घर से ही है,तो इसका मतलब तो चोरी की रिपोर्ट ही झूठी ही थी,तो पूछताछ इन मोहतरमा से नही बल्कि अनुज साहब से करना बनता है,ये तो मेरी शराफत समझिए कि मैं इन्हें अभी अपने साथ थाने लेकर नही जा रहा हूँ,आप लोग सुबह आ जाइए,वहाँ पूछताछ भी हो जायेगी और सारे सवालों के जवाब भी मिल जाएंगे"देवप्रिय ने भी उसी तल्ख़ी के साथ रागिनी की बात का जवाब दिया।
"ठीक है माईबाप,बन्दा कल सुबह आपके दरबार मे हाजिर हो जाएगा,लेकिन जाने से पहले इस गरीब की एक इल्तिजा पर भी गौर फरमा लीजिये'मैने देवप्रिय को प्रिय लगने वाले शब्दो से नवाजा।
"कैसी इल्तिजा"देवप्रिया ने मेरी आँखों मे झाँकते हुए बोला।
"इस पिस्टल को फोरेंसिक जांच के लिए अपने साथ ले जाइए,क्योकि पूरे चौबीस घँटे ये बेजुबान मेरी आंखों से ओझल रहा हैं,बेचारे के साथ पता नही इस दरम्यान क्या क्या बीती होगी,किन किन हाथो ने इसके कानो को उमेठा होगा,तो मेरे हुजूर!इस पिस्टल की फॉरेन्सिक जांच करवा दीजिये"मैने नाटकीय अंदाज में देवप्रिय को बोला।
"तुमने क्या मुझे इतना अहमक समझा है कि मैं इस पिस्टल को तुम्हारे पास ऐसे ही छोड़ जाऊंगा,फोरेंसिक जाँच से ही तो अगर कोई कारनामा तुमने किया होगा,वो सामने आयेगा"देवप्रिय ने पूरी कमीनगी दिखाते हुए बोला।
"हुजूर एक बात और पूछनी थी,कल थाने में
सिर्फ मुझे ही आना है या,इन तीन देवीयो को भी बुलाओगे"मैंने एक कुटिल मुस्कान के साथ देवप्रिय की कमीनगी का जवाब दिया।
"आ जाना आप भी तीनो देवियों,वरना साहब को लगेगा कि मैं किसी को बचाने की कोशिश कर रहा हूँ,और साहब की जानकारी हमारे महकमे के बड़े बड़े हाकिमों से है,तो

हमे तो वैसे भी बार कदम फूंक फूंक कर उठाना पड़ेगा"ये बोलकर देवप्रिय किचन की तरफ पिस्टल को लेने के लिए बढ़ गया।

थाने मे हाजिरी -9

अगले दिन मैं थोड़ी देर से सोकर उठा था।पता नही रागिनी को मेरे जागने की शायद कोई महक आ गई थी कि,मेरे आँख खोलते ही उसका नंबर मेरे मोबाइल पर चमकने लगा था। मैंने तुरन्त रागिनी का फोन उठाया।
"तुम्हे एक बात बतानी थी,मेघना मुझ से कोई बीस सेकेण्ड पहले किचन में घुसी थी,मेरे साथ नही!मुझे लगता है मेघना ने ही उस पिस्टल को उस चूल्हे के नीचे प्लांट किया था"रागिनी जो मुझे अब बता रही थी,इसका अंदेशा मुझे रात को ही हो चुका था।
"मुझे भी इसी बात का शक है"मैने रागिनी की बात का समर्थन किया।
"मेघना शायद किसी बड़ी फिराक में है,मत भूलो की ये राजीव बंसल के साथ सौम्या को रास्ते से हटाकर शादी करने की फिराक में भी थी"रागिनी ने मुझें पुरानी बात याद दिलाई।
"तुम सही कह रही हो,इसका मतलब है,ये उस पिस्टल से कोई वारदात कर चुके है,और अब कभी भी उस वारदात को सामने लाकर मुझे फ़साने का इंतजाम कर सकते है"मैने एक और अपनी आशंका जाहिर की।
"बिल्कुल सही सोच रहे हो,लेकिन हमे सबसे पहले इस बात का पता लगाना होगा कि इनके निशाने पर कौन हो सकता है,और अभी उसकी क्या हालत है"रागिनी का दिमाग भी जापान की बुलेट ट्रैन से तेज चल रहा था।
"मुझे ऐसा भी लग रहा है कि ये दोनों पहले ही उस देवप्रिय को भी चुग्गा डाल चुकी है,तभी वो कल रात को देविका की ही भाषा बोल रहा था"मैंने रागिनी को बोला।
"मुझे इस वक़्त सौम्या की सबसे ज्यादा चिंता हो रही हैं,कही ये जेल से उसे ही ठिकाने लगाने के इरादे से तो बाहर नही आई है"मैने एक बार फिर अपना अंदेशा जाहिर किया।
"मुझे सौम्या के साथ साथ कुमार गौरव भी इनके निशाने पर लगता है"रागिनी ने अपना शक जाहिर करके शक के दायरे का और विस्तार कर दिया था।
"मैं एक बार सौम्या की खोज ख़बर ले लेता हूँ,तुम सीधा यही आ जाओ,फिर कुमार के घर पर भी चलते है,और उस देवप्रिय की भी तो हाजिरी बजानी है"मैने आज के सारे काम रागिनी को गिनवा दिए।
"ठीक है मै दस बजे तक पहुंचती हूँ,तब तक तुम भी तैयार हो जाओ"ये बोलकर रागिनी ने तेजी से फोन काट दिया। मैं उसे अपने घर से नाश्ता बनाकर लाने के लिए बोलने वाला था,लेकिन अपनी इच्छा तो दिल की दिल मे ही रह गईं थी।
मैने रागिनी के फोन काटते ही सौम्या को फोन लगा दिया था।
"इतनी सुबह सुबह कैसे याद कर लिया मेरे जेम्सबोंड"सौम्या ने चहकती हुई आवाज में बोला।
"बस तुम्हारी खैरियत जानने के लिए फोन किया था,तुम ठीक हो न"मैंने सौम्या को बोला।

"हाँ मैं ठीक हूँ!क्यो मुझे कुछ होने वाला था क्या, जो तुम इतने चिंताजनक लहजें में पूछ रहे हो"सौम्या ने मेरी आवाज की घबराहट को पहचान लिया था।
"वो तुम्हारी हमप्याली,हमनिवाली मेघना भी जेल से बाहर आई हुई है जमानत पर,और देविका के साथ ही है वो,अभी उनके कुछ कुछ मंसूबे तो पता चल चुके है,लेकिन अभी पूरे मंसूबे नही जान पाया हूँ"मैने सौम्या के साथ पहेलियां बुझाई।
"वो क्या मेरी जान लेने के इरादे से जेल से बाहर आये है क्या"अब सौम्या के स्वर में भी उसकी चिंता झलक रही थी।
"मैने तुम्हे अपनी पिस्टल के गायब होने की बात बताई थी न,वो पिस्टल काफी ड्रामेटिक तरीके से मेरे ही घर से मिल गई है,और वो भी मेघना और देविका की उपस्थिति में"मेरी बात सुनते ही सौम्या की तरफ एक खामोशी पसर गई।
"तुम मेरी बात सुन रही हो न"मैने जब काफी देर तक सौम्या की कोई आवाज नही आई तो पूछा।
"मैं सुन रही हूँ!तुम मुझे पूरी बात बताओ"सौम्या ने बोला तो मैं उसे कल शाम को उसके आफिस से निकलने के बाद से कल रात तक का पूरा वाक्या बताता चला गया।
"दो दिन से मेरे मोबाइल पर अनजान नंबर से काल तो आ रही थी,लेकिन मैंने रिसीव नही किये थे,आफिस के फोन पर जब फोन आया होगा तो शायद मैं उस समय आफिस में नही होउंगी"सौम्या ने मेरी पूरी बात सुनने के बाद बोला।
"वैसे मेरी सलाह है कि मेघना या देविका तुम से मिलने की कोशिश करे तो उनसे मिलना मत,और तुम्हारी सिक्युरिटी की क्या व्यवस्था है"मैने आखिर में सौम्या से पूछा।
"चार बाउंसर रहते है मेरे साथ,जिनमे से दो के पास पिस्टल भी होती है"सौम्या ने मुझे बताया।
"उन लोगो को अलर्ट पर रखना,इस वक़्त तुम्हारी सुरक्षा में कोई चूक नही होनी चाहिए"मैने सौम्या को चेताया।
"आज एक बार तुम भी मेरे पास आ जाओ,मुझे देविका के बारे में और भी कुछ बात करनी है"सौम्या ने मुझे बोला तो मैंने शाम के समय आने की हामी भरके फोन को काट दिया।मैने फोन काटते ही फोन को एक तरफ उछाला और सुबह के नित्यकर्म से निर्वित होने के लिए बाथरूम की ओर बढ़ा ही था कि फोन एक बार फिर से बज उठा था।फोन थाने से देवप्रिय का था।
"ग्यारह बजे तक थाने आ जाओ,वो दोनो लडकिया भी तब तक थाने पहुंच जाएगी"देवप्रिय ने आदेशात्मक स्वर में बोला।
"जो आज्ञा जनाब,बन्दा समय पर हाजिर हो जायेगा"मैंने देवप्रिय को बोला।
"रागिनी मैडम को साथ लेकर आना,वो भी कल रात की घटना की चश्मदीद है"देवप्रिय ने फिर से बोला।

"जी वो भी आ रही है,उसे मैने सुबह ही फोन कर दिया था।
"ठीक है"ये बोलकर उसने फोन काल की इतिश्री कर दी।इस बार मैंने कुछ पल फोन को घूरा,..मुझे अंदेशा था की कहीं बाथरूम की तरफ जाते हुए इसका पुलिस सायरन फिर से न बज उठे।लेकिन जब फोन खामोशी से मेरा मुंह चिढ़ाता रहा तो मैंने फोन को अपने बिस्तर में उछाला बाथरूम में घुस गया।घँटे भर के भीतर ही बन्दा चकाचक होकर खुद को शीशे में निहार रहा था। तभी दरवाजे की बेल बजी,मैने घड़ी की ओर देखा। ये वक़्त रागिनी के आने का था। मैने जाकर दरवाजा खोला तो रागिनी अपनी क़ातिल मुस्कान बिखेरती हुई मेरी ओर ही देख रही थी।
"आ गई हुजूरे आला"मैंने रागिनी के सम्मान में अपने सिर को हल्का सा नवाते हुए बोला।
"आप बुलाये और हम न आये,ऐसी गुस्ताखी करके कम से कम मै अपनी सैलरी तो खतरे में नही डाल सकती हूँ"रागिनी की आते ही बकलोली शुरू हो चुकी थी।
"अच्छा किस महीने तेरी सैलरी नही मिली"मैने दिखावटी गुस्से में बोला।
"वो तो मैं कही से कोई भी पेमेंट आती है,तो अपनी सैलरी पहले ही काट कर बाकी पेमेंट तुम्हे देती हूँ,नही तो हर महीने ही मेरी सैलरी नही आती"रागिनी ने मुझे चिढ़ाने वाले अंदाज में बोला।
"ये तुम बोल रही हो"मैने आहत निग़ाहों से उसकी और देखा।मेरे इस तरह बोलने से रागिनी ने शरारती नजरो से मेरी ओर देखा।
"मैं तो तुम्हे अपनी कंपनी के साथ साथ अपने घर की भी मालकिन बनाने की सोच रहा था"मैने उसकी शरारती मुस्कान को देखकर बोला।
"क्यो दुनिया से सन्यास लेकर क्या हिमालय पर जाना है तपस्या करने,जो सब कुछ मेरे नाम करके जाना चाहते हो"रागिनी ने नासमझ बनते हुए बोला।
"घर की मालकिन कोई तभी बनता है क्या,जब कोई अपना घर किसी के नाम करके सन्यासी बन जाता है"मैने हल्के से खीज भरे स्वर में बोला। मै जानता था कि वो इस वक़्त मेरे मजे ले रही है,लेकिन मैं भी कुछ सोचकर उसे मजे लेने देने रहा था।
"हाँ!मैने तो यही सुना है कि घर के मालिक तो ऐसे ही बनते है"रागिनी ने मुस्करा कर बोला।
"एक तरीका और है घर की मालकिन बनने का"इस बार मैं भी जवाब में मुस्कराया।
"अच्छा बताओ फिर,और कौन सा तरीका है"रागिनी ने मुझे तकते हुए पूछा।
"लड़की शादी करके भी किसी के घर की मालकिन बन सकती है"मैने मुस्कराते हुए बोला।
"हाये दैया!तो तुम इस रास्ते से चलती गाड़ी में चढ़ने की कोशिश कर रहे हो"रागिनी ने अचानक से अपने तेवर बदलते हुए बोला।
"क्या मतलब"मैं उसकी प्रतिक्रिया से बौखला सा गया था।

"मतलब ये की माना कि सुबह उठकर आज तुम नहा लिए हो,लेकिन अभी भी चेहरे पर वो चमक नही आई कि रागिनी दौड़कर तुम्हारे गले मे वरमाला डाल दे,चाहो तो एक बार फिर से शीशे में अपने चेहरे की चमक को चेक कर लो"रागिनी की बात सुनकर मैं न रोने में था न हँसने में,एक तरीके से वो घुमा फिरा कर बोल रही थी,की जाकर अपनी शक्ल आईने में देखकर आओ,ये मुंह और मसूर की दाल,खैर इस हालात पर कहावतें तो ढेर सारी याद आ रही थी,लेकिन हर कहावत को याद करके खुद पर ही जूते पड़ते हुए महसूस होते।
"बेटा कुंवारी ही रहेगी पूरी उम्र,जिसने अनुज की कद्र नही की उसकी कद्र कभी इस जमाने ने भी की"मैने झल्लाकर बोला तो रागिनी खिलखिला कर हँस पड़ी।
"मेरे बैग में से नाश्ता निकालो!मैं भी करके नही आई हूँ!इतने मैं कॉफ़ी बनाकर लाती हूँ"ये बोलकर वो बकलोल बिना मेरी तरफ देखे ही किचन में घुस गई।मै नाश्ते की बात सुनकर मुस्करा दिया था।जो बात मैं सुबह उसे फोन पर नही कह सका था,वो इच्छा उसने बिना बोले ही पूरी कर दी थी।

****

मैं इस वक़्त कुमार गौरव के फ्लैट की घँटी बजा रहा था। दरवाजा कोई पांच मिनट के बाद एक लगभग पचपन साल की महिला ने खोला।जो कि अपनी सूरत से ही बता रही थी कि वे कुमार की माता जी है!असली कुमार गौरव की जबरा फैन। उन्होंने दरवाजा खोलते ही हमारी और सवालिया निगाहों से देखा।
"कुमार साहब से मिलना था"उनके कुछ पूछने से पहले ही मैं बोल पड़ा था।
"वो तो बेटा कल से घर पर नही लौटा है,अपनी बवाना वाली फैक्ट्री में गया था,अक्सर जब काम ज्यादा होता है तो रात को वही रुक जाता है"कुमार की माताजी ने एक ही बार मे पूरी कैफियत दे डाली थी।
"कल से आपकी उनकी फोन पर कोई बात हुई है"मैने साधारण भाव से पूछा।
"बेटा बात तो नही हुई उससे,एक बार रात को मैंने फोन भी किया था,लेकिन उस वक़्त फोन स्विच ऑफ आ रहा था"माताजी ने उसी साधारण भाव मे जवाब दिया।
"ठीक है माताजी!अगर कुमार साहब आये तो उन्हें बोलना की वो एक बार अनुज को फोन कर ले"ये बोलकर मैं उन्हें नमस्कार करके उनके दरवाजे से रुखसत होकर अपनी गाड़ी में जाकर बैठ गया। जैसे ही रागिनी गाड़ी में सवार हुई,मैने कुमार का नंबर अपने मोबाइल से मिला दिया। फोन इस वक़्त आउट ऑफ कवरेज एरिया बता रहा था।मैने एक बार रागिनी की ओर देखा।रागिनी के चेहरे पर भी इस वक़्त कई सवालों की रेखाएं देखी जा सकती थी।
"कुमार के साथ कुछ गलत न हुआ हो"रागिनी के मुंह से बरबस ही निकला।
"शायद वही हो रहा है जो हम लोग सोच रहे थे"मैंने हल्की सी चिंता भरे स्वर में बोला।
"शायद उससे भी कुछ ज्यादा बड़ा होने वाला है"रागिनी मेरी तरफ देखकर बोली।

"चलो थाने चलते है,देवप्रिय से भी मिलना है"मैने रागिनी की ओर देखते हुए बोला।
"नही! मेघना और देविका ने देवप्रिय के साथ मिलकर ये जाल बुना है,थाने जाने से पहले हमें शर्मा जी को एक बार पूरी बात बता देनी चाहिए,और शर्मा जी से बात करने के बाद हमे सबसे पहले कुमार को ढूंढना होगा"रागिनी ने अपने दिमाग के सारे घोड़े खोल दिये थे।
"दिमाग तो आला दर्जे का लगाया है इन दोनों कुड़ियो ने,लेकिन वो भूल गए कि उनका पाला अनुज से पड़ा है"मेरी बात सुनकर रागिनी ने अपना गला खंखारा। मानो कह रही हो कि सिर्फ तुम ही तुम नही हो,हम भी साथ मे है,पाला हमसे भी पड़ा है। मै उसकी इस अदा को देखकर हल्का सा मुस्करा दिया। मैने उसी समय एसीपी निरंजन शर्मा का नम्बर अपने फोन से डायल कर दिया।तभी काल वेटिंग में देवप्रिय का नंबर भी चमकने लगा था।लेकिन तभी शर्मा जी ने मेरा फोन रिसीव कर लिया था।
"कहो अनुज कैसे याद किया"शर्मा जी ने आत्मीयता भरें स्वर में पूछा।
"आपकी रहमुनाई की जरूरत पड़ गयी है जनाब,आपसे मिलना है,बहुत जरुरी"मैने शर्मा जी को बोला।
"मिलना है तो आ जाओ,अब तुम्हारे इलाके में ही आ गया हूँ,यही पुलिस लाइन में आ जाओ,मैं शाम तक यही हूँ"शर्मा जी ने मुझे बोला।
"जी जनाब मैं कुछ देर में हाजिर होता हूँ"ये बोलकर मैने फोन काटा ही था कि देवप्रिय का फ़ोन नंबर फिर से चमक उठा।इस बार मैंने फोन उठाने में कोई कोताही नही की।
"तुम्हे ग्यारह बजे आने को बोला था,तुम अभी तक आये नही,और फोन भी नही उठा रहे हो"उसने गुस्से भरे स्वर में बोला।
"जिस वक्त आपका फोन कॉल वेटिंग में बज रहा था,इस समय आपके हाकिम एसीपी निरंजन शर्मा का फोन आया हुआ था,उन्हें मुझ से कोई जरूरी काम है,इसलिए अभी मुझें शर्मा जी के पास पुलिस लाइंस जाना पड़ रहा है,वहां से फ्री होते ही आपके दरबार मे हाजिर होता हूँ"मैंने जान बूझकर शर्मा जी का नाम उसके सामने लिया था।
"ठीक है यार!जैसे ही वहाँ से फ्री होते हो,सीधा मेरे पास ही आना"देवप्रिय के तेवर एक दम से किसी झाग की मानिंद बैठ चुके थे।
"बिल्कुल हाजिर होता हूँ जनाब!तब तक आप उन दोनों दस्यु सुंदरियों के साथ चाय कॉफी का शगन मेला करो"ये बोलकर मैने फोन काट दिया। मैंने देखा कि रागिनी मेरी तरफ ही देखकर मन्द मन्द मुस्करा रही थी।

देवप्रिय की छुट्टी -10

पुलिस लाइन पहुंचने में हमे कोई आधा घन्टा लगा था।वजह थी सुबह मिलने वाला ट्रैफिक जाम,जो अब दिल्ली की सड़कों पर हमेशा ही मिलने लगा था। एसीपी निरंजन शर्मा जी ने मेरे पहुंचते ही अपने कक्ष में मुझें बुलवा लिया था। मुझे ये कहने में कोई संकोच नही है कि मैंने तो शर्मा जी की सिर्फ एक बंसल मर्डर केस में मदद की थी,जिसकी वजह से शर्मा जी तरक्की पाकर अपने इंस्पेक्टर के ओहदे से एसीपी की कुर्सी तक पहुंच गए थे,लेकिन उसके बाद शर्मा जी ने मेरी अनेक मौकों पर मदद की।जब जब भी मुझे उनकी जरूरत पड़ी,उन्होंने मेरी मदद करने में कभी आनाकानी नही की।वो अपने महकमे के काम मे कितने ही मसरूफ क्यो न हो,वो इस नाचीज़ के लिए हमेशा वक्त निकाल लेते थे।इस वक़्त मैं शर्मा जी को अपनी पूरी आपबीती सुना चुका था,और शर्मा जी पूरी गंभीरता से मेरी बात को सुनकर मेरी ओर ही देख रहे थे।

"तुम्हारी कहानी तो मुझे समझ मे आ रही है,लेकिन सबसे बड़ा पेंच इसमे यही फँसा है कि पिस्टल की गुमशुदगी की रिपोर्ट पुलिस में करवाने के बाद पिस्टल का तुम्हारे ही घर से बरामद होना! अब अगर इस पिस्टल से कोई वारदात हो चुकी है तो,पहली फुर्सत में पुलिस तुम्हे ही गिरफ्तार करेगी"शर्मा जी ने साफ शब्दों में बोला।

"लेकिन मालिक मैं तो बेकसूर हूँ,आपके रहते हुए आपके ही इलाके में एक बेकसूर इंसान को फांसी चढ़ाने का इंतजाम कैसे किया जाता है"मैने विनय भरे स्वर में शर्मा जी की ओर देखते हुए बोला।

"वर्तमान हालात में मैं अपने किसी मातहत को तुम्हारे खिलाफ कोई कार्यवाही करने से तो नही रोक सकता,लेकिन इतना जरूर कर सकता हूँ,की इस कार्यवाही में मैं समय लगवा दू,लेकिन उस समय का सदुपयोग तुम्हे खुद की बेगुनाही साबित करने में करना होगा"शर्मा जी ने पहेली सी बुझाई।

"क्या मतलब"मै और खुलकर समझना चाहता था।

"मतलब ये की इस केस में तुम्हे अपनी मदद खुद ही करनी होगी,फिर रागिनी तो है ही तुम्हारे साथ,मुझें पूरी उम्मीद है कि तुम इस मुसीबत से भी बाहर आ जाओगे"शर्मा जी ने इस बार रागिनी पर नजर डालते हुए बोला।

"लेकिन देवप्रिय तो पहली फुर्सत में मुझे उठाकर जेल में ठूंस देगा,फिर मैं अपनी मदद कैसे कर पाऊंगा"मैंने शर्मा जो को बोला।

"तुम थाने जाओ,तुम्हारे वहां पहुंचने तक तुम्हारे केस में वहां का पूरा निजाम बदल चुका होगा,कोई भी तुम्हे नाहक परेशान नही करेगा,तुम्हारी तत्काल गिरफ्तारी को जब तक मेरे बस में होगा,मैं रोकने की कोशिश करूंगा,फिलवक्त इससे ज्यादा मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा"शर्मा जी ने अपनी मजबूरी बताई।लेकिन वो ये बोलकर सिर्फ यही जता रहे थे कि वे मेरी ज्यादा मदद करने में असमर्थ है,लेकिन मैं जानता था कि उनकी ये मदद मेरे

लिये कितनी बड़ी मददगार होने वाली थी।मैं जेल से बाहर रहकर तो रागिनी के साथ मिलकर अपने खिलाफ बड़ी से बड़ी साजिस को बेनकाब कर सकता था,लेकिन जेल में जाने के बाद मैं कुछ भी करनें में असमर्थ था।मुझे गिरफ्तारी से बचाए रखना ही इस वक़्त मेरे लिए वरदान साबित होने वाली थी। मैने शर्मा जी का तहेदिल से शुक्रिया अदा किया और वहां से विदा ली। अब मैं पहले थाने जाकर देवप्रिय का ही सामना करना चाहता था।

****

लगभग आधे घँटे के बाद ही हम रोहिणी के थाने में पहुंच चुके थे।थाने में घुसते ही हेल्प डेस्क पर बैठी हुई मैडम से मैंने देवप्रिय के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि देवप्रिय दूसरी मंजिल पर अपने कमरे में ही था। मैं और रागिनी दो सीढिया एक साथ फर्लांगते हुए जल्दी से ऊपर पहुँचे। देवप्रिय इस वक़्त अकेला ही अपनी कुर्सी पर अधलेटी अवस्था में अपने सामने एक और कुर्सी लगाकर उस पर अपने पांव टिकाए हुए छत की ओर घूरते हुए किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था। जैसे ही हमने कमरे में कदम रखा उसका ध्यान भंग हुआ और उसकी नजर हम दोनों पर पड़ गई।मुझ पर नजर पड़ते ही उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान ख़िल उठी।
"तुम्हारा इकोसिस्टम तो बहुत मजबूत है बॉस,मुझे अपने केस से ही हटवा दिया,ताकि तुम जेल जाने से बच जाओ"मेरे लिये ये खबर खुद नई थी,लेकिन तभी मेरे कान में शर्मा जी के वे शब्द गूंज उठे थे,जिसमे उन्होने बोला था कि मेरे थाने पहुंचने तक मेरे केस में सारा निजाम बदल चुका होगा।अब मुस्कराने की और उसे उसका इकोसिस्टम समझाने की बारी मेरी थी।
"जब सामने वाले का सामना किसी जंग खाये हुए सिस्टम से हो तो,फिर अपने इकोसिस्टम का प्रयोग करना ही पड़ता हैं"मैने कुटिल स्वर में उसे बोला।
"कहना क्या चाहते हो,साफ साफ बोलो"देवप्रिय को मेरी बात समझ नही आई थी।
"तुम्हे कैसे पता कि तुम मुझे जेल ही भेजोगे,उन दोनों लड़कियों से मिलकर कौन सी खिचड़ी पका रहे हो,मुझे सब पता है,कल रात को मेरे घर से निकल कर वे दोनो लडकिया कहाँ गई थी,और आप कहाँ गए थे"मैंने ऐसे ही अँधेरे में तीर छोड़ा।लेकिन मेरी बात सुनकर जिस प्रकार से सकपकाया था,उससे मुझें तीर निशाने पर लगने का एहसास हो गया था।मैंने तुरन्त उसे दूसरी चोट दी।
"जनाब!जासूस हूँ कोई घसियारा नही हूँ,नाम अनुज है मेरा सबकी ख़बर रखता हूँ,और आप क्या समझते हो वो सजा याफ्ता मुजरिम लडकिया आपसे वफादारी निभाएगी क्या,इसलिए उनके साथ मिलकर मुझे किसी झूठे केस में फंसाने की कोशिश करने से बाज आ जाओ,नही तो अनुज इस प्लेटिनम का वो दसवां ग्रह है,जो अगर किसी की कुंडली में आकर बैठ गया न,तो उस इंसान की कुंडली के सारे ग्रह एक साथ उल्टी चाल चलने लगते है"ये बोलकर मैं उसके कमरे में रुका नही,क्योकि मै जानता था कि इस वक़्त उसके बस में

बाकी कुछ था नही और अपनी पुलिसिया धौंस में वो बस मुझ पर झपट ही सकता था। लेकिन मैं अभी इस पुलिसिये के साथ बात को ज्यादा नही बढ़ाना चाहता था,क्योकि मै नही चाहता था,की एक पुलिसिये के चक्कर में थाने का पूरा स्टाफ ही मेरे खिलाफ हो जाये। कुछ भी था,अभी गर्दन तो मेरी फंसी ही हुई थी।मैं वहां से निकल कर सीढियो से तेजी से उतरते हुए थाने के इंचार्ज माहेश्वरी साहब के कमरे में घुस चुका था। इस वक़्त वो एक फ़ाइल में बड़ी गहराई से उलझे हुए थे।मुझ पर नजर पड़ते ही उन्होने अपने सामने पड़ी हुई कुर्सियों पर हमे बैठने का इशारा किया।उनका इशारा मिलते ही मैं और रागिनी उन कुर्सियों पर विराजमान हो गए।माहेश्वरी साहब ने भी कुछ ही पलों में अपनी नजर फ़ाइल से हटा ली थी।
"अपने केस के सिलसिले में तुम भगवान सिंह से मिल लो,अब वो तुम्हारे उस पिस्टल की गुत्थी को सुलझाएंगे"माहेश्वरी साहब ने केस देवप्रिय से लेकर भगवान सिंह को दे दिया था।
"ठीक है सर! मैं मिल लेता हूँ भगवान सिंह से,और उन्हें पूरे केस के बारे में शुरू से अवगत करवा देता हूँ"मैंने कुर्सी से उठने का उपक्रम किया।
"एक बात का ध्यान रखो अनुज!अगर तुम बेकसूर हो तो तुम्हारे साथ इस थाने का कोई भी स्टाफ गलत नही कर सकता,उसकी जिम्मेदारी मैं लेता हूँ,मुझें इस बात का इल्म है कि इस शहर में तुम्हारे धंधे की वजह से तुम्हारे दुश्मनों की कोई कमी नही होगी,और वे लोग तुम्हारे साथ कुछ गलत करने की भी फिराक में होंगे,लेकिन यकीन मानो हम तुम्हारी स्थिति को भी ध्यान में रखकर ही कोई कार्यवाही करेगे"माहेश्वरी साहब ने मुझें भरोसा दिया।
"ठीक है सर! मैं जानता हूँ कि आपके रहते हुए मेरे साथ कुछ भी गलत नही हो सकता है"मैं बोलते हुए अपनी सीट छोड़ चुका था।
"चलिये!उम्मीद है की अगली बार कोई शिकायत हुई तो पहले सीधा मेरे पास आओगे"ये बोलकर माहेश्वरी साहब ने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया,जिसे मैंने तत्काल अपने हाथ से थामा और गर्मजोशी से हाथ मिलाकर वहां से रुखसत हो गया।
भगवान सिंह का कमरा नीचे ही थोड़ा सा अंदर जाकर था। जिस वक्त मैं उनके कमरे में पहुंचा,उस वक्त वे भी किसी केस की चार्जशीट तैयार करने में व्यस्त थे।
"आप ही भगवान सिंह है जनाब"मैंने जानते बुझते भी उनसे पूछा।
"मैं ही भगवान सिंह हूँ!आप कौन है"भगवान सिंह ने मेरे साथ साथ रागिनी पर भी नजर डालते हुए पूछा।
"जी मेरा नाम अनुज है और माहेश्वरी जी ने मुझें आपके पास भेजा है"मैंने भगवान सिंह को पूरी इज्जत बख्शते हुए बोला।
"आजा भाई अनुज बैठ जा,मैं तो कब से तुम्हारे आने का इंतजार कर रहा था"भगवान सिंह अब अपने हाथ के कागजों को एक तरफ रखकर मुझ से पूरी तरह से मुखातिब हो चुका था।

"जी आपसे ही मिलने के लिए आया हूँ"मैंने जवाब दिया।
"जितना मुझे हमारे साथी देव ने तुम्हारे केस के बारे में बताया है,उस हिसाब से तो आप पर अभी तो कोई केस बनता नही है,अब पिस्टल आपके घर से गुम हुई और आपके ही घर से बरामद हो गई,इस गुमशुदगी के पीरियड में अगर उस पिस्टल से कोई वारदात नही हुई है तो,तुम लंबी तानकर सोना,लेकिन भाई अगर कुछ गड़बड़ हो गई तो फिर पुलिस के सवालो के घेरे में तो तुम आ ही जाओगे"भगवान सिंह ने पूरी साफगोई से वही बोला,जो उसे बोलना चाहिये था।
"जी ये तो मैं भी जानता हूँ,लेकिन मेरी पिस्टल के गायब होने से लेकर उसके मेरे ही घर से बरामद होने तक में एक लड़की की संदिग्ध भूमिका है,उस लड़की के साथ एक लड़की और शामिल है,जिसे मैंने इसी थाने में एक केस में जेल भिजवाया था,उन दोनों लड़कियों ने मुझे फ़साने के लिए कोई साजिश रची है,अगर उन दोनों लड़कियों से अच्छी तरह से पूछताछ हो जाये तो इस पूरे मामले से पर्दा उठ सकता है"मैने भगवान सिंह को बोला।
"उन लड़कियों से मैं मिल चुका हूँ,आपकी पिस्टल की एक बार फोरेंसिक रिपोर्ट आ जाये,और उस पिस्टल पर उनमे से किसी के भी फिंगरप्रिंट मिल जाये,मैं एक मिनट नही लगाऊंगा,उनको घर से उठाने में,अब सिर्फ शक की बिना पर भी मैं जब तक उन दोनों से कोई पूछताछ नही कर सकता,जब तक उस पिस्टल से की हुई कोई वारदात सांमने नही आ जाती"भगवान सिंह एक एक बात बहुत नापतौल कर बोल रहा था।मेरे पास अभी तक उसकी किसी भी बात से असहमत होने का कोई कारण नही था। तभी दरवाजे से आती हुई एक आवाज ने मुझे चौंका दिया था। हम तीनों की निगाहें एक साथ ही दरवाजे की ओर उठी थी। दरवाजे पर कुमार की माताजी एक दूसरे लड़के के साथ खड़ी होकर अंदर आने की इजाजत मांग रही थी।उनको वहां देखते ही मेरा मन आशंकाओं के बादलों से घिर चुका था।
"आ जाइये मैडम"तब तक भगवान सिंह उन्हें अंदर आने के लिये बोल चुका था।वे दोनो अंदर आकर हमारे बगल वाली कुर्सियों पर ही बैठ चुके थे।उन माताजी ने बैठते ही कुछ पलों तक मुझे और रागिनी को घूरा।
"तुम तो वही हो न बेटा जो आज दिन में मेरे बेटे गौरव को पूछने के लिए आये थे"माताजी ने मेरी तरफ देखते हुए बोला।
"हां माताजी!मैं वही हूँ!क्या हुआ अभी तक गौरव घर पर नही आया क्या"मैने आशंकित स्वर में पूछा।
"बेटा न तो उसका फोन ही मिल रहा है और न ही वो अपनी बवाना वाली फैक्ट्री में है,मैं तो उसी की रिपोर्ट लिखवाने आई हूँ"माताजी ने बोला।
"क्या माजरा है,तुम जानते हो इन्हें अनुज साहब"भगवान सिंह ने मुझ से पूछा,जो अभी तक मूक दर्शक बना हुआ हमे देख रहा था।मैंने इस बार कुमार के बारे में तफशील से

भगवान सिंह को समझाया।
"ठीक है मैडम!आप अपने बेटे का एक फ़ोटो और उसका कहाँ और किन लोगों के साथ उठना बैठना है,वो सब एक पेपर पर लिख कर दीजिए,साथ में उनका मोबाइल नंबर भी दीजिये,मैं उसके फोन की लोकेशन ट्रेस करवाने की कोशिश करता हूँ"भगवान सिंह ने एक ही बार मे सब कुछ बोल दिया था।
"जी मै अभी आपको सब लिखकर दे देता हूँ,आप बस मेरे कजिन को जल्द से जल्द ढूंढ दीजिये"माताजी के साथ आये हुए उस किशोर उम्र के लड़के ने अधीर स्वर में बोला।
"चिंता मत करो बच्चे,हम तुम्हारे भाई को ढूंढने में जी जान लगा देंगे"भगवान सिंह ने उस लड़के को सांत्वना भरे स्वर में बोला।तभी भगवान सिंह के फोन की घँटी बज उठी।भगवान सिंह ने फोन सुनते हुए ही अजीब सी नजरो से हम सभी की ओर देखा।उसके बाद उसने फोन रखते ही उस कमरे में धमाका कर दिया।
"एक युवक की लाश मिली है,आप सभी को मेरे साथ चलना होगा,उस युवक की शिनाख्त करने के लिये"भगवान सिंह ने अचानक से बोला ही था कि कुर्सी पर बैठी हुई माताजी एकदम गश ख़ाकर कुर्सी से नीचे गिर पड़ी। मै जल्दी से माताजी को सम्हालने के लिए झुका,तब तक भगवान सिंह भी माताजी को उठाने की कोशिश करने लगा था।रागिनी भगवान सिंह की टेबल पर रखा हुआ पानी के जग को उठाकर उससे पानी के छींटे माताजी के चेहरे पर मारने लगी थी।

गुमशुदा गौरव -11

कुमार की माताजी को, चेहरे पर पानी पड़ते ही तत्काल होश आ गया था,रागिनी ने उनका सिर अपनी गोद मे ले लिया था।
"मैं किसी महिला सिपाही की ड्यूटी इनकी देखभाल के लिए लगाता हूँ,बेटा तुम हमारे साथ चलना"भगवान सिंह ने माताजी के साथ आये हुए उस लड़के को बोला।
"आंटी जी आप घबराए मत!भगवान ने करे कि कुमार के साथ कुछ बुरा हुआ हो,वो कोई और भी तो हो सकता है,आप हौसला मत हारिये"रागिनी ने माताजी को दिलासा देते हुए बोला।माताजी होश में जरूर आ गई थी,किंतु अभी तक उनके मुंह से कोई आवाज नही निकली थी,वे बस सूनी आँखों से सभी को निहारे जा रही थी।तभी भगवान सिंह ने एक महिला सिपाही के साथ कमरे में प्रवेश किया।
"संतोष!जब तक हम वापिस नही आ जाते,तब तक इन माताजी की देखभाल करना,और इनके लिए कुछ ठंडा वगेरह मंगवा कर इन्हें पिला देना,हम लोग एक कॉल पर जा रहे है"भगवान सिंह ने उन संतोष नाम की सिपाही को बोला।
"जी जनाब!आप बेफिक्र होकर जाइये,मैं मैडम का पूरा ध्यान रखूंगी"संतोष ने भगवान सिंह की बात का जवाब दिया।उसके बाद हम सभी लोग जल्दी से उस जगह के लिए निकल गए जहां किसी युवक की लाश मिलने की कॉल भगवान सिंह के फोन पर आई थी।

****

कोई बीस मिनट के बाद हम लोग सेक्टर 28 के पास एक वीरान इलाके में पहुंचे थे। इस एरिया में अभी लोगो की बसावट काफी कम थी। लेकिन यहां पर दिल्ली के वाहनों के लाइसेंस बनने की वजह से वाहनो की आवाजाही लगी रहती थी। दूर से ही हमारी नजर एक जगह पर लोगो की भीड़ पर पड़ चुकी थी। भगवान सिंह ने अपनी गाड़ी को उसी भीड़ के पास जाकर रोका था।।हमने भी अपनी गाड़ी को भगवान सिंह की गाड़ी के पीछे ही पार्क किया और भगवान सिंह के साथ ही उस भीड़ की तरफ बढ़ गए। भगवान सिंह के साथ थाने से चार कांसटेबल भी थे।पुलिस को देखते ही भीड़ ने अब तीतर बितर होना शुरू कर दिया था। वो एक खाली प्लाट था,जिसमे काफी झाड़ झंखाड़ उग आए थे,ऐसी ही एक झाड़ियों के पीछे से एक युवक के दोनो पाँव बाहर की तरफ नजर आ रहे थे। दिल की धड़कने सिर्फ गौरव के भाई की ही नही मेरी भी बड़ी हुई थी। अगर ये लाश गौरव की हुई तो अपनी भी व्हाट लगना निश्चित था।लेकिन पाँव को जब मैंने गौर से देखा तो मुझे वे पाँव गौरव के डीलडौल से जुदा प्रतीत हुए।लेकिन तब तक भगवान सिंह और उसके साथ एक कांस्टेबल उस लाश तक पहुंच चुके थे,बाकी कांस्टेबल वहां लगी हुई भीड़ की हटाने में मशगूल हो चुके थे। मै और रागिनी गौरव के भाई का हाथ पकड़े हुए लाश के नजदीक पहुंचे। लाश को देखते ही वो लड़का मुझ से लिपट गया।

"ये गौरव भैया नही हैं"उसने लिपटे हुए इतना ही बोला था,उसकी दोबारा से उस लाश को देखने की हिम्मत नही हो रही थी। मैने भी उस लाश को देखकर भले ही ये सोचकर राहत की सांस ली थी कि ये गौरव की लाश नही है,लेकिन उस लाश को देखकर भी मन मे एक अफसोस तो उभरा था,क्योकि कोई तो था,जिसे इस बेरहमी से मारा गया था।
"अनुज तुम इस लड़के को लेकर थाने चले जाओ और गौरव की माताजी को बता दो की ये लाश गौरव की नही थी,उनको भी सकूं मिल जाएगा"भगवान सिंह मुझे बोलने के बाद अब एक लाश की बरामदगी के बाद बाद कि कार्यवाही के लिये दूसरे लोगो को फोन मिलाने लगा था। मैं रागिनी और उस लड़के को अपनी गाड़ी में बिठाकर वापिस थाने की ओर चल पड़ा था।हम गाड़ी में गौरव के भाई की वजह से उसके सामने गौरव के इस तरह से लापता होने के बारे में कोई बातचीत नही कर सकते थे।लेकिन कई सवाल अभी मेरे जेहन में कुलबुला रहे थे।एकाएक गौरव कहाँ लापता हो गया था,क्या वाकई मेरी पिस्टल से कोई वारदात हो चुकी होगी,अगर हो चुकी है तो,अभी तक वो वारदात सामने क्यो नही आई।ये कैसा अजीब खेल मेरे साथ खेला जा रहा था,एक आशंका से मेरा मन घिरा रहता और वो आशंका हर बार निर्मूल सिद्ध हो रही थी।दो दिन हो चुके थे,इस सारे ड्रामे को,और इन दो दिनो में दो लाशें भी मेरे ही एरिया में मिल चुकी थी,लेकिन दोनो ही लाशें अज्ञात लाशें थी। कल जिस लड़की की लाश बरामद हुई थी,उसके बारे में मैने पता नही किया कि वो कौन लड़की थी,जिस तरह से मेरी पिस्टल का गायब होना और फिर मेरे ही घर से मिल जाना अस्वाभिक था ,ऐसे ही मेरे इलाके में दो दिनों में दो लाशो का मिलना भी कोई सामान्य बात नही थी।
इन्ही सोचविचार में खोया हुआ मै थाने पहुंच चुका था।मैं थाने में गौरव के बारे में उनकी माताजी से और बात नही करना चाहता था,इसलिए मैंने रागिनी को उस लड़के के साथ थाने के अंदर मातजी को सारी बात बताने के लिए भेज दिया था।कोई पंद्रह मिनट के बाद ही रागिनी मुझें मेरी गाड़ी की तरफ आती हुई नजर आई।
"चलो!अभी गौरव की गुमशदगी की रिपोर्ट नही लिखी गई,वे रिपोर्ट लिखवाने के बाद ही आएंगे"रागिनी ने गाड़ी में बैठते ही बोली।
"तुम्हे सभी कुछ अजीब नही लग रहा है रागिनी,मेरी पिस्टल का गायब होना,फिर पिस्टल का मिलना और दो दिन में दो लाशों का मिलना और उन लाशो में से एक भी उस लाश का नही मिलना,जिनकी आशंका में हम दुबले हुए होते है"मैंने रागिनी कि तरफ देखते हुए बोला।
"लग तो मुझे भी अजीब ही रहा है,लेकिन तुम्हारी पिस्टल का सस्पेंस तो कल फोरेंसिक की रिपोर्ट के साथ ही ख़त्म हो जाएगा,लेकिन मैं सुबह से मेघना और देविका के बारे में ही सोच रही हूँ,की वे दोनो किस फिराक में है,और वे करना क्या चाहती है"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।

"मुझे तो गौरव से ज्यादा इस वक़्त सौम्या की जान का खतरा लग रहा है,हमे इस लफड़े में उलझा कर वे लोग सौम्या के साथ तो कोई बड़ा खेल खेलने की फिराक में तो नही है"मैने सौम्या के बारे में चिंता प्रकट करते हुए बोला।
"तुमने सौम्या को सुबह अलर्ट तो कर दिया था न"रागिनी ने पूछा।
"हाँ!सुबह तुम्हारे बाद मेरी उसी से बात हुई थी,तो मैंने उसे सावधान रहने के लिए बोल दिया था,लेकिन उसने मुझ से एक बार मिलने के लिए बोला था,वो देविका के बारे मे कुछ बात करना चाहती थी"मैने रागिनी को बताया।
"फिर सौम्या से बात करके गाड़ी को उसी दिशा में मोड़ लीजिये"रागिनी ने मुझे बोला।मैंने रागिनी की बात पर तुरंत अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाए और सौम्या को फोन मिला दिया।

सौम्या से मुलाक़ात -12

इस वक़्त शाम गहराने लगी थी।सौम्या ने हमे अपने घर पर ही आने के लिए बोला था। इसलिये इस वक़्त मेरी गाड़ी रोहिणी से अशोक विहार की ओर दौड़ रही थी। कोई आधा घँटे के बाद मैं सौम्या की कोठी की पार्किंग में अपनी गाड़ी घुसा चुका था। सौम्या नीचे ही ड्रॉइंग रूम में हमारा इंतजार करती हुई मिली।हमे देखते ही उसके खूबसूरत मुखड़े की मुस्कान और ज्यादा गहरी हो चुकी थी।

"साहब को समय मिल ही गया हमारे गरीबखाने पर आने का"सौम्या ने बड़े ही सौम्य तरीके से बोला था।

"भगवान हिंदुस्तान के हर आदमी को आप जैसा गरीब बना दे तो मैं इस देश को फक्र से गरीब राष्ट्र घोषित करवा दूँ"मैने मुस्कराते हुए सौम्या को बोला तो सौम्या खिलखिला कर हँस पड़ी।तभी सौम्या के घर मे काम करने वाली राधा हमारे लिए पानी के साथ साथ नाश्ता भी ले आई थी। राधा भी हम दोनो को अच्छे से पहचानती थी,उसने आते ही हम दोनो का अभिवादन किया, हमने उसी श्रद्धा से उसके अभिवादन का उत्तर दिया।राधा के जाने के बाद सौम्या मुझ से मुखातिब हो चुकी थी।

"जल्दी से नाश्ता कर लो,फिर ऊपर मेरे बेडरूम में चलकर बात करते है"सौम्या ने बोला।

"बात तो हम नाश्ता करते हुए भी कर सकते है"इस बार रागिनी ने सौम्या की बात का जवाब दिया।

"क्यो वापस जाने की जल्दी है क्या"सौम्या के स्वर से उसकी नाराजगी झलक रही थी।

"जल्दी इसलिए जाना है,क्योकि अभी रागिनी को उसके घर भी छोड़ना है"मैने सौम्या को मजबूरी बताई।

"यार! कभी मेरे लिये भी तुम लोग समय निकाल कर आ जाया करो"सौम्या ने रुआंसे स्वर में बोला।

"चलो!आप जब बोलोगी हम तभी वापस जायेगे,आप नाराज मत हो"रागिनी उठकर सौम्या के पास जाकर बोली। सौम्या ने रागिनी का हाथ पकड़कर अपने पास ही बिठा लिया।

"ये हुई न बात!आज तुम लोगो का डिनर भी यहीं होगा,शैम्पन के साथ"सौम्या ने मुस्कराते हुए बोला।मैं उसकी बात सुनकर मुस्करा दिया।

"तुमने हमे यहां देविका के बारे में बात करनें के लिए बुलाया है,न की डिनर पर बुलाया था"मैंने बोला।

"हाँ यार!देविका के बारे में एक बात मुझें पता चली है,जो अब तुम्हे भी बताना जरूरी लग रहा है"सौम्या ने गंभीर स्वर में बोला।

"बोलो क्या बात है"मैंने सौम्या के चेहरे पर अपनी दृष्टि जमाते हुए बोला।

"जब मेघना मेरे साथ यहां रहती थी,तब एक बार वो अपनी फॅमिली एल्बम मुझे दिखाने के लिए यहां लाई थी,उसके जेल जाने के बाद से उसका सामान अभी तक मेरे पास ही रखा हुआ है,कल तुमसे बात होने के बाद मैं मेघना के सामान को चेक रही थी,तो उस एल्बम पर मेरी नजर पड़ी,दो तीन फोटोग्राफ में मुझे एक लड़की हूबहू देविका जैसी ही लगी,जो कि मेघना के साथ मे है"सौम्या ने ये एक चौकाने वाली जानकारी दी थी।
"इसका मतलब है दोनो जेल में नही मिले,बल्कि पहले से ही एक दूसरे को जानते है"मेरे मुंह से स्वत् ही निकला।
"अगर फैमिली एल्बम में फ़ोटो है तो,हो सकता है आपस मे कोई फैमिली कनेक्शन भी हो"रागिनी ने काम की बात बोली।
"मेघना के जेल जाने के बाद ही देविका ने तुम्हारी कंपनी जॉइन की थी,ये किसी के रेफरेंस से आई थी,या डायरेक्ट भर्ती थी"मैंने सौम्या से पूछा।
"ये तो एच आर हेड ही बता सकती है,मुझें स्टाफ के बारे में इतनी जानकारी नही रहती है"सौम्या ने स्पष्ट बोला।
"इसका एक मतलब ये भी निकलता है कि तुम्हारी कंपनी को कोई बड़ा नुकसान पहुंचाने के लिए देविका को तुम्हारी कंपनी जॉइन करवाई गई हो,लेकिन तुम्हारी किस्मत अच्छी थी कि अपने पहले ही कांड में वो पकड़ी गई"रागिनी ने बोला तो मैंने भी सहमति में सिर हिलाया।
"राजीव की कभी कोई खोज ख़बर ली है तुमने,उसे तो जेल गए हुए दो साल हो चुके है"मैंने सौम्या से पूछा।
"नही!मैं तो जेल में जाकर उससे कभी मिली नही,मैने तो उसकी क्रिमिनल बैकग्राउंड पर उससे डाइवोर्स फ़ाइल किया हुआ है"सौम्या ने एक नई बात बताई,जो मुझे भी अभी तक नही पता थी।
"एक बात शुरू से सोचो सभी लोग! राजीव,सौम्या को मारकर मेघना से शादी करना चाहता था,उसके अरमान पूरे नही हुए और उसे जेल जाना पड़ गया,लेकिन अरमान तो उस समय मेघना के भी पूरे नही हुए थे,और उसने उस वक़्त मासुमियत का ढोंग रचकर हमारे अनुज बाबू को अपनी ख़ूबसूरती से रिझा लिया और मना भी लिया और अनुज सर ने शर्मा जी प्रार्थना करके मेघना को उस केस से बाहर करवा लिया"ये बोलकर रागिनी एक पल को चुप हुई।रागिनी ने इस वक़्त एक बेहद काम का पॉइंट पकड़ा था।ये बात सही थी कि उस वक़्त अरमान सिर्फ राजीव ही नही मेघना के भी पूरे नही हुए थे।वो अरमान थे राजीव बंसल से शादी करके बंसल इंडस्ट्री की एक मामूली कर्मचारी से तीन सौ करोड़ की बंसल इंडस्ट्री की मालकिन बनना।
"आप लोग क्या सोच रहे हो,अगर राजीव और सौम्या का तलाक हो जाता है तो बंसल इंडस्ट्री से राजीव का लेना देना हमेशा के लिये ख़त्म हो जाएगा,क्योकि वो तो वैसे भी उम्र

भर के लिए जेल में है,लेकिन सजा होने के बावजूद हमारे कानून में ऐसे कई प्रावधान है,जिसका लाभ उठाकर कम से कम कोई पैसे वाला तो कभी भी बाहर आ सकता है"रागिनी ने फिर से बोला।
"तुमने तलाक कब फ़ाइल किया है"मैने सौम्या से पूछा।
"अभी छ महीने पहले"सौम्या ने तत्काल उत्तर दिया।
"अनुज सर!हमे सबसे पहले तो एक बात समझ लेनी चाहिए,की दो बार आप मेघना के फैलाये जाल से सौम्या को बचा चुके हो,इस बार पहले उनके निशाने पर आप हो,लेकिन आखिरी निशाना सौम्या ही है,सौम्या की जान एक बार फिर से खतरे में है"रागिनी की ये बात सुनते ही सौम्या ने घबरा कर रागिनी का हाथ मजबूती से पकड़ लिया था।
"तुम चिंता मत करो,वे दोनो तुम्हारी परछाई को भी नही छू पाएगी"रागिनी ने सौम्या को हिम्मत बंधाई।
"रागिनी तुम्हे मेरे साथ हर वक़्त रहना होगा,मुझे बहुत डर लग रहा है"सौम्या ने किसी जिद्दी बच्चे की तरह से बोला।सौम्या की बात सुनकर रागिनी ने मेरी ओर देखा।
"तुम डर क्यो रही हो,तुम्हारे बॉडीगार्ड तो हर वक़्त तुम्हारे साथ होते है न"मैंने सौम्या को बोला।
"वे लोग अकस्मात कोई मुझ पर हमला होने पर मुझें बचा तो सकते है,लेकिन वे लोग तुम्हारी तरह से सोच नही सकते है,अनुज तुम उन दोनों को फिर से उन्ही के जाल में उन्हें फंसाओ और उन्हें जेल भिजवाओ,रागिनी मेरे साथ ही रहेगी,इसके अलावा मैं कुछ नही जानती"सौम्या की बात को मैं आसानी से नही टाल सकता था,इस बात को रागिनी भी बेहतर तरीके से समझती थी।इसलिए इस बार रागिनी ने सहमति में मेरी ओर देखकर अपनी गर्दन हिलाई।

कौन है सौम्या-13

सौम्या बंसल!

सौम्या बंसल के संपर्क में मैं तब आया था,जब मैं अशोक बंसल हत्याकांड की जांच कर रहा था। अशोक बंसल दिल्ली शहर की एक नामचीन और अरबपति हस्ती थे।उन्होंने अपने जीवन मे एकमात्र गलती की थी कि अपनी पचपन साल की उम्र में अपनी से आधी उम्र की अपनी सेक्रेटरी के रुपजाल में फंस गए,और उससे शादी कर बैठे,ये उनके जीवन की ऐसी गलती थी,जिसने सिर्फ छह महीने में ही अशोक बंसल के प्राण लील लिए थे। अशोक बंसल की लाश उन्ही के ड्राइंग रूम में मिली थी,उनकी काफी निर्मम तरीके से हत्या की गई थी।उन्ही अशोक बंसल के एक मात्र सुपुत्र राजीव बंसल उस हत्याकांड में मुख्य अभियुक्त साबित हुए थे,और उसी राजीव बंसल की पत्नी थी सौम्या बंसल। जब मैं केस की जांच के दौरान सौम्या से मिला तो इस बेपनाह सुंदरी के जीवन मे कितना बड़ा अंधेरा था,वो सौम्या से मिलने के बाद ही पता लग सका। सौम्या बहुत छोटी उम्र में ही अपने पापा के एक दोस्त और अपने खुद के चाचा की कामवासना का शिकार हो गई थी। छोटी उम्र में शारीरिक संबंध बन जाने के कारण सौम्या को एक अजीबो गरीब बीमारी हो गई,जिसे हम लोग निम्फोमानियाक नाम की एक सेक्स बीमारी के नाम से जानतें है,ये ऐसी भयावह बीमारी है कि जब इंसान में सेक्स की तलब उठती है तो न वो अपना देखती है और न पराया,उसे बस अपनी कामवासना को शांत करने से मतलब होता है,मुझे अपनी इस बीमारी के बारे में सौम्या ने खुद नही बताया था,बल्कि इस बारे में मुझें केस की जांच के दौरान ही मेघना से पता चला था।सौम्या की इसी बीमारी के चलते सौम्या का पति राजीव बंसल कई मौकों पर अपमानित हो चुका था,और सौम्या से छुटकारा पाना चाह्ता था।अपनी सौतेली माँ सोनिया की हत्या के बाद राजीव ने सौम्या को भी मार डालने का षडयंत्र रचा था,लेकिन वो आपके इस सेवक की वजह से अपने इरादो में कामयाब नही हो सका था,और उसे मैंने रंगे हाथो सौम्या की जान लेने की कोशिश करते हुए पकड़ लिया था।राजीव ने ये साजिश सौम्या को रास्ते से हटाकर मेघना के साथ शादी करने के इरादे से रची थी। यही वजह थी कि रागिनी ने इस पॉइंट को इंगित किया था कि अरमान सिर्फ राजीव के ही अधूरे नही रहे थे,बल्कि अरमान मेघना के भी पूरे नही हुए थे। बाद में मेघना ने भी सौम्या को मार डालने की साजिश रची थी,लेकिन इस बार भी मैने ही सौम्या को एकबार फिर से मेघना की साजिश से बचाया और मेघना को जेल भिजवाया था।लेकिन लगता है कि मेघना ने अभी तक अपनी हार नही मानी थी।वो एक बार फिर से अपने इरादो को अंजाम देने के लिये जेल से बाहर आ गई थी,वो भी देविका के साथ। मेघना और देविका का एक साथ जमानत पाना ही ये इशारा करता था कि जाल काफी उच्चस्तर पर रचा गया है।लेकिन मेरे मन मे जो ख्याल बार बार कौंध रहा था,वो था कि जेल में बन्द राजीव बंसल की इसमे क्या भूमिका

हो सकती थी।बिना राजीव की मिलीभगत के तो अकेली मेघना कुछ भी नही कर सकती थी।वो कौन था जो जेल में बन्द इन दोनों के बीच मे कूरियर का काम कर रहा था।कोई तो था।अब इस कोई को ही सबसे पहले मुझे ढूंढना था। मुझे कुमार गौरव को भी ढूंढना था,वो यू अचानक से कहाँ गायब हो गया था।
सौम्या रागिनी के साथ ऊपर अपने कमरे में जा चुकी थी और मैं अब अपने घर की ओर रवाना हो चुका था।मुझें जो सबसे पहला काम करना था,वो था,पिछले दो सालों में जेल में राजीव बंसल से किन लोगो ने मुलाकात की है,उसका पता लगाना उन मुलाकात करने वालो लोगो की लिस्ट में से ही कोई एक चेहरा उभर कर आ सकता था,जिसकी मुझे तलाश है।बहरहाल फिलहाल तो मैं घर पहुंचते ही सोना चाहता था,क्योकि पिछले दो दिनों से मेरी नींद उड़ी हुई थी।

****

अगले दिन मैं अभी तैयार हुआ ही था कि थाने से भगवान सिंह का काल आ गया था।उसने मुझे बड़े ही नम्र स्वर में थाने आने के लिए बोला था।मैं उसके बुलावे पर बीस मिनट में ही उनके सामने हाजिर हो चुका था।
"अनुज साहब!जिस लड़की की लाश हमे परसो मिली है,क्या आप उसे जानते है"भगवान सिंह ने मेरे बैठते ही अपना सवाल कर दिया था।
"जी नही!मैंने तो उस लड़की को उस दिन जिंदगी में पहली बार ही देखा था,वो भी मुर्दा"मैंने बोला।
"लेकिन उस लड़की के घर के सामान में एक डायरी मिली है,जिसमे आपके बारे में काफी कुछ लिखा गया है,उसमे उसने लिखा है कि तुम और वो लड़की पिछले तीन साल से रिलेशनशिप में थे,उसके बाद तुम अचानक ही उसकी जिंदगी से गायब हो गए,उसके फोन में आपका फोन नंबर भी आपके ही नाम से सेव किया हुआ मिला है"भगवान सिंह एक के बाद एक बम मेरे सिर पर फोड़े जा रहा था।
"मैं एक बार उस लड़की के जीवित अवस्था मे लिये गए कोई फोटोग्राफ देख सकता हूँ"मैं अब कुछ भी बोलने से पहले उस लड़की को सही से देख लेना चाहता था।
"जी बिल्कुल देख सकते है"ये बोलकर भगवान सिंह ने अपनी दराज से एक फ़ाइल निकाली,उस फ़ाइल में रोजनामचे की कॉपी के साथ ही उस लड़की की विभिन्न कोण से खींची गई उसकी लाश की तस्वीरे लगी हुई थी,उन तस्वीरो के नीचे ही उसकी जीवित अवस्था की दो तस्वीर लगी हुई थी।मैंने गौर से उन तस्वीरों को देखा,बहुत ध्यान करने के बाद भी मुझें ध्यान नही आ रहा था कि मैंने इस लड़की को कहां देखा है।मैंने तस्वीर पर नजर डालकर इनकार में अपनी गर्दन को हिलाया और उस फ़ाइल पर एक ओर सरसरी नजर डालकर भगवान सिंह की तरफ बढ़ा दी।

"मैं इस लड़की से अपनी जिंदगी में कभी नही मिला,और जो उस डायरी में आप लिखा हुआ बता रहे है कि मैं अचानक इस लड़की की जिंदगी से गायब हो गया,ये तो सरासर झूठ है,क्योकि पिछले पांच सालो से तो मैं अपने इसी रोहिणी वाले घर मे रह रहा हूँ"मैने भगवान सिंह की डायरी वाली बात का भी जवाब दिया।
"लेकिन कोई लड़की अपनी डायरी में झूठ क्यो लिखेगी"भगवान सिंह ने मेरी ओर देखते हुए बोलो।
"आपको यकीन है कि ये डायरी इसी लड़की के हाथ की लिखी हुई है,क्या आप इसकी जाँच कर चुके है"मैने भगवान सिंह से ही प्रश्न किया।
"नही!अभी तो हम सिर्फ इस मिली हुई डायरी के आधार पर आपसे पूछताछ कर रहें है"भगवान सिंह ने बोला।
"जिस लडक़ी से मैं अपनी जिंदगी में कभी मिला नही,जिस लड़की ने अपने जिंदा रहते कभी मुझे देखा नही,ऐसी लड़की के केस में हो सकता है कि ये डायरी किसी ने प्लांट कर दी हो"मैने अपनी शंका जताई।
"फिर तो मुझे पक्का यकीन है कि आपकी पिस्टल की फोरेंसिक रिपोर्ट इस लड़की के जिस्म में पाई जाने वाली गोली की फोरेंसिक रिपोर्ट एक ही मिले,आप अपने बचाव की पूरी तैयारी कर लीजिये अनुज बाबू,क्योकि शाम को रिपोर्ट आने तक का ही वक़्त है आपके पास"भगवान सिंह ने मुझे चेतावनी नुमा लहजें में बोला।
"अभी मुझे जाने की इजाजत है या नही,शाम की शाम को देखी जाएगी"मैने भगवान सिंह को बोला।
"जी बिल्कुल इजाजत है,लेकिन एक नेक सलाह है आपके लिए,शाम को अपने साथ एक वकील जरूर लेते आइए,आपको जरूरत पड़ सकती है"भगवान सिंह भी अब देवप्रिय वाली जुबान ही बोल रहा था।
"बेफिक्र रहिये जनाब!अपने लायक वकालत तो मैं खुद भी करना जानता हूँ"ये बोलकर मैं कुर्सी से उठा और तेज कदमो से कमरे से बाहर आ गया।

कुमार गौरव की लाश -14

थाने से निकलते ही मेरे मोबाइल पर एक अनजान नंबर चमकने लगा था।मैंने उस फोन को गाड़ी में बैठने से पहले ही रिसीव किया। उधर से कोई घबराई हुई आवाज में बोल रहा था।
"अनुज भाई बोल रहे हो"आवाज बहुत ही धीमी थी।
"अनुज ही बोल रहा हूँ,तुम कौन हो"मैने उस आवाज को पहचानने की कोशिश की।
"अनुज!मैं गौरव बोल रहा हूँ"उधर से बोलने वाला गौरव था।
"कहाँ गायब हो भाई,यहां तुम्हारी मम्मी तुम्हे ढूंढ ढूंढ कर परेशान है"मैंने उस बोला।
"मेरे पास ज्यादा लंबी बात करने का समय नही है अनुज,इन लोगो ने मुझे मेरी ही फैक्ट्री के बेसमेंट में कैद कर रखा है,मुझे बचा लो अनुज"उधर से गौरव बहुत ही धीमी आवाज में बोल रहा था।
"अपनी फैक्ट्री का पता बताओ,मैं वहां अभी पहुँचता हूँ"मैंने उसे दिलासा दिया।उसने मुझें अपना पता बताया।
"किन लोगों ने तुम्हे अपना कैदी बनाकर रखा हुआ है,बताओ मुझे,मैं उन्हें भी पकड़वाने का इंतजाम करता हूँ"मैने गौरव से पूछा। लेकिन तभी उधर से कोई चीज़ मुझें फर्श पर गिरने की आवाज आई और फिर उसके बाद फोन कट गया।मैंने तुरन्त फोन को फिर से मिलाया,लेकिन इस बार फोन नेटवर्क एरिया से बाहर बता रहा था।मैं एक पल को वही रुका का रुका रह गया।इस वक़्त मुझें ये समझ नही आ रहा था कि मैं वहां अकेला जाऊं या पुलिस को अपने साथ लेकर जाऊं।मैने किसी नए झमेले में फंसने से बचने के लिये पुलिस को ही अपने साथ ले जाना उचित समझा।मैं वही से उल्टे पाँव भगवान सिंह के कमरे की ओर मुड़ गया। मुझें अपने कमरे के दरवाजे पर देखते ही भगवान सिंह के होठो पर मुस्कान आ गई।
"काफी बेचैन लग रहे हों,इतनी जल्दी लौट आये जासूस साहब,रिपोर्ट आने से पहले तो मैं आपको छुउंगा भी नही"भगवान सिंह मेरी बात सुनने की बजाए सिर्फ अपनी अपनी कहे जा रहा था।
"आप पहले मेरी बात सुनेंगे"मैंने थोड़े तीखे स्वर में बोला तो वो बुरा सा मुंह बनाकर मेरी ओर देखने लगा।
"बोलो क्या बोलना चाहते हो"भगवान सिंह मेरी और देखते हुए बोला।
"मेरे फोन पर अभी एक अज्ञात नंबर से फोन आया है,वो खुद को गौरव बता रहा है,वो बोल रहा है कि उसे उसकी ही फैक्ट्री के बेसमेंट में किसी ने बंधक बनाकर रखा हुआ है"मैने ये बोलकर अपने फोन की कॉल लिस्ट में वो नंबर और काल डिटेल दिखाई।
"ये कैसे मान ले की वो गौरव ही था"भगवान सिंह ने एक बेमतलब सा सवाल पूछा।
"ये तो अब उसकी फैक्ट्री में ही जाकर पता चलेगा"मैने सीधी बात बोली।

"कहाँ है उसकी फैक्ट्री"भगवान सिंह ने लगता है अभी तक गौरव सिंह की गुमशुदगी की रिपोर्ट पढ़ी तक नही थी।
"उसकी फैक्ट्री बवाना में है,पता है मेरे पास"मैने भगवान सिंह को बोला।
"वो इलाक़ा दूसरे थाने के अंतर्गत आता है,मुझे वहां के थाने को भी सूचित करना होगा और वही से सिपाही बुलाने होंगे,तुम यही रुको,मैं साहब से इजाजत लेकर आता हूँ"ये बोलकर भगवान सिंह तेज कदमो से कमरे से बाहर निकल गया।उसके बाहर जाते ही मैने रागिनी को फोन मिलाकर उसे सारी स्थिति के बारे में बताया। तभी भगवान सिंह मुझे उतनी ही तेजी से वापिस आता हुआ नजर आया।मैने तुरंत फोन काट दिया।
"चलो मैने अपनी रवानगी दर्ज कर दी है"ये बोलकर भगवान सिंह वापिस मुड़ा और मैं भी उतनी ही तेजी के साथ उसके पीछे लपका। तभी उसके साथ एक कांस्टेबल और चलने लगा।भगवान सिंह अपनी मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ने लगा तो मैने उन्हें अपनी ही गाड़ी में चलने के लिये बोला। जिसे भगवान सिंह ने थोड़ी सी हिचकिचाहट के बाद वे दोनों मेरी गाड़ी में सवार हो गए।

****

बवाना की उस फैक्ट्री में पहुँचने में हमें आधा घन्टा लगा। हमसे पहले ही लोकल थाने का एक हवालदार और दो तीन सिपाही वहां पहुंचे हुए थे।
"तुम्हारे पास सूचना तो पक्की है न,कही दूसरे थाने के स्टाफ के सामने किरकिरी करवा दो"भगवान सिंह ने गाड़ी से उतरते हुए मेरी तरफ देखकर बोला।
"जनाब मेरे पास जो फोन आया,उसके बारे में आपको बताना उचित समझा,अब यहां क्या होगा,वो तो अंदर जाकर ही पता लगेगा"मैंने गाड़ी से उतरकर गाड़ी को लॉक करते हुए बोला।
"ठीक है!आओ देखते है"ये बोलकर भगवान सिंह उस हवलदार की तरफ बढ़ गया।उसने उससे कुछ पल बात की और फिर मुझे इशारा करके अंदर की ओर चल पड़ा।अंदर फैक्ट्री में तीन चार लोग काम कर रहे थे।
"इस फैक्ट्री का मालिक कौन है"भगवान सिंह ने उन लोगों से पूछा।
"जी गौरव बाबू है हमारे मालिक"एक मजदूर ने बोला।
"उन्हें बुलाओ,उनसे बोलो उनसे मिलने पुलिस आई है"भगवान सिंह ने फिर से बोला।
"मालिक तो परसो आये थे शाम के समय,उसके बाद से तो हमने उनको नही देखा साहब"उसी मज़दूर ने जवाब दिया।
"बेसमेंट में जाने का रास्ता किधर से है" इस बार मैंने अधीर स्वर में पूछा। भगवान सिंह ने अजीब सी नजरो से मुझे घूरा।
"साहब इधर से है"मजदूर ने उस बिल्डिंग के पीछे के हिस्से की ओर इशारा करते हुए बोला। उसका इशारा पाते ही भगवान सिंह उधर की तरफ तेज कदमो से चल पड़ा।हम

बाकी लोग भी अब उसके हमकदम बन चुके थे। कुछ ही देर में हम लोग सीढिया उतरकर नीचे बेसमेंट में पहुँच चुके थे,लेकिन वहां पर एक दरवाजा लगा हुआ था,और उस पर लगा हुआ ताला हमारा मुंह चिड़ा रहा था।
"उन मजदूरों में से किसी को बुलाकर लाओ,और इस ताले को खुलवाओ"भगवान सिंह ने अपने साथ आये हुए कॉन्स्टेबल को बोला। कॉन्स्टेबल आदेश पाते ही दौड़कर सीढियो से पलभर में ओझल हो गया। कोई दस मिनिट के बाद एक चौकीदार टाइप आदमी के साथ आते हुए नजर आया।उस चौकीदार ने आते ही उस ताले पर चाबी लगाई और ताला खोला। अंदर घुप्प अंधेरा था। चौकीदार ने आगे बढ़कर लाइट जलाई।लाइट जलाते ही एक कोने में एक आदमी औंधे मुंह पड़े हुए नजर आया।हम सभी लोग लगभग दौडतें हुए उस आदमी के पास पहुंचे। भगवान सिंह ने उस आदमी को पलट कर सीधा किया,वो आदमी अपनी पथराई हुई आंखों से छत की ओर देखते हुए पलट गया।
"यही कुमार गौरव है"मेरे मुंह से बरबस ही निकला।
"ये मर चुका है"उस तहखाने में भगवान सिंह की ये आवाज मेरे कानों में हथौड़े जैसी पड़ी थी।लेकिन भगवान सिंह लगातार मेरी ओर ही देखे जा रहा था।

भगवान सिंह की बेरुखी-15

"ये तो मर चुका है,फिर इसने तुम्हे फोन कैसे किया"भगवान सिंह की शक की सुई मेरी ओर घूम चुकी थी।
"लेकिन जिसने मुझें फोन किया था,उसने अपना नाम मुझे गौरव ही बताया था,यहां का पता भी बताया था"मैंने भगवान सिंह को बोला।
"लेकिन इसकी शक्ल बता रही है कि ये कम से कम 12 घँटे पहले मरा है"इस बार लोकल थाने के हवलदार ने बोला।
"बताओ अनुज बाबू,बारह घँटे पहले मरा हुआ आदमी तुम्हे फोन कैसे कर सकता है"भगवान सिंह इस बार कुटिलता से मुस्कराया था।
"मेरे पास उस फ़ोन की कॉल रिकार्डिग है,आप उसे सुनकर फैसला कीजिये कि ये फोन किसने किया है"मैने तभी अपने फोन की कॉल रिकॉर्डिंग स्टार्ट कर दी।वहां अब मेरी और उस आदमी की जो खुद को गौरव बता रहा था,की आवाज गूंज रही थी।रिकॉर्डिंग खत्म होते ही मैने भगवान सिंह की तरफ देखा।
"कॉल तो किसी से भी करवाई जा सकती है"हवलदार ने अपना ज्ञान झाड़ा।
"ऐसे ही,खामख्वाह,जिस बन्दे को मैं महज दो दिन पहले से जानता हूँ,उसे मैं क्यो मारूंगा,मेरी कौन सी भैंस खोल ली,इसने दो दिनों में जो मैं इतनी जल्दी प्लानिंग करके मार भी डालूंगा"उस हवलदार की बात पर मेरा पारा चढ़ चुका था।
"देखिए अनुज साहब!हमे हर संभावना पर गौर करना पड़ता है"इस बार मुझे भड़कता देखकर भगवान सिंह थोड़े से नम्र स्वर में बोला।
"फिर इस बात पर भी गौर कीजिए कि अगर मैने इसे मारा होता तो मैं ही पुलिस को लेकर यहां क्यो आता"मेरे स्वर में अभी झल्लाहट थी।
"आप एक जासूस है,आपकी प्लांनिग सभी से जुदा हो सकती है"भगवान सिंह फिर से किसी अड़ियल टट्टू की तरह से बोला।
"आप जानबूझकर मुझे टारगेट करना चाहते है जनाब,क्योकि मैने आपके एक साथी को इस केस से हटवा दिया,क्योकि वो खुद मेरे खिलाफ साजिश रच रहा था,आप मुझे अपनी पुलिस की पॉवर दिखाना चाहते है कि हाकिम लोग किसी के साथ कुछ भी सलूक कर सकते है"मै अब सुनाने में कोई कसर नही छोड़ रहा था,क्योकि मैने सोच लिया था की अब जो होगा देखा जाएगा,कानून के दायरे से बाहर जाकर मेरे साथ कुछ करने से पहले ये लोग सात बार सोचेगे।
"आपको गलतफहमी है अनुज बाबू!हम तो अपनी ड्यूटी कर रहे है"भगवान सिंह ने एक बार फिर से अपने स्वर में नरमी लाते हुए बोला।

"यही ड्यूटी है आपकी,की मै कोई भी तथ्य आपके सामने रखूं,आप कूदकर इस नतीजे पर पहुँच जाओ की मैंने ही वो काम किया होगा,आप उसकी सच्चाई की तह तक जाने की कोशिश भी नही करेगे,अगर मेरे बारे में आपको इतना ही यकीन है कि मेरा ही सब किया धरा है,मैं ही अपराधी हूँ,तो मुझे अरेस्ट करके जेल में डालिये न,कोर्ट अपने आप बता देगी की मैं अपराधी हूँ या नही"मेरा गुस्सा कम होने का नाम नही ले रहा था।
"अनुज बाबू आप बेकार में बात को लंबा खींच रहे है,पुलिस का काम होता है कि जब तक असली अपराधी न मिल जाये तब तक हर आदमी को अपने शक के दायरे में रखने का,आप तो जासूस हो,आपको तो इस बात के बारे में बताने की जरूरत ही नही है"भगवान सिंह ने मुझे समझाते हुए बोला।
"आपको भी ये ज्ञान होगा कि शक के दायरे में आये हुए लोगो के बारे में खामोशी के साथ पुलिस अपनी जांच करती है,और अगर जांच में वो दोषी पाया जाता है,तब उसे अरेस्ट करके उसे उसके कर्मो के बारे में बताया जाता है,और अगर जांच में कोई निर्दोष होता है तो,उसे इस बात का इल्म भी नही होने दिया जाता कि उसे भी अपराधी समझा जा रहा था"मेरी बात सुनकर इसबार भगवान सिंह ने भी सहमति में अपना सिर हिलाया।
"चलिये!इस बारे में थाने में बैठकर आराम से बात करेगें,मैं जरा बाकी के काम निबटा लू"ये बोलकर भगवान सिंह अपने साहब माहेश्वरी जी को पूरी बात बताने लगा।उनको रिपोर्ट करनें के बाद उसने फोरेंसिक वालो को और एम्बुलेंस को फोन किया।मै जानता था कि इस पूरी प्रक्रिया में अभी पांच छह घँटे लगने वाले थे। लेकिन मेरी मजबूरी थी कि मैं वहां से जा भी नही सकता था। गौरव की शक्ल देखकर लग रहा था कि उसे गला घोंटकर मारा गया था। उसके शरीर पर कहीं भी उसे कोई यातना देने के निशान नजर नही आ रहे थे। दो दिन पहले ही मेरे सामने देविका ने बोला था कि अगर जरूरत पड़ी तो वो गौरव की जान भी ले सकती थी। कल से ही मेघना और देविका से मेरा कोई सम्पर्क नही हुआ था,और कल ही गौरव का कत्ल भी हुआ।इस वक़्त तो गौरव के क़ातिल के रूप में मुझे देविका के अलावा कोई नजर नही आ रहा था। लेकिन अब मैं कुछ भी इन अहमक पुलिसियो के साथ सांझा करने वाला नही था।अब इस मामले की जड़ तक मैने खुद ही पहुँचने का फैसला कर लिया था।अभी मुझें उस लड़की की जन्मकुंडली भी निकालनी थी,जो मेरी माशूका होने का दम भर रही थी,बताओ इस नाचीज़ को किसी की इजहारे मोहब्बत का पता लगा भी तो उसके मर जाने के बाद।अजीब सी जिंदगी थी मेरी,जो हर महीने दो चार मुर्दों में उलझ कर रह जाती है।तभी भगवान सिंह ने मेरे नजदीक आकर मेरी सोच को भंग किया।
"तुम्हारी नजर में इस बन्दे का क़ातिल कौन हो सकता है"भगवान सिंह इस बार किंचित गंभीर स्वर में बोला।
"किसी क़ातिल को ढूंढने और उसका पता बताने की फीस मेरी लाखों में होती है जनाब,पहले इसकी पोस्टमार्टम और फोरेंसिक रिपोर्ट आने दो,मुझे इसकी मौत का सही

समय जानना है,उसके बाद ही किसी की तरफ मेरे शक की सुई घूमेगी"मैंने भगवान सिंह को गोलमोल जवाब दिया।
"अनुज बाबू अभी पुलिस के इतने बुरे दिन नही आये की किसी क़ातिल का पता करने के लिये किसी प्राइवेट जासूस को लाखों रु की फीस देनी पड़े"भगवान सिंह ने चिड़े हुए स्वर में मेरी बात का जवाब दिया। मै उसकी बात को सुनकर मुस्करा दिया था।
"आप बेफिक्र रहिये!आपसे मैं एक रूपया फीस चार्ज नही करूँगा,और क़ातिल को ढूंढने का सेहरा भी आपके ही सिर सजेगा,लेकिन मुझे क़ातिल समझने की बजाय मेरा साथ दो इस केस में,फिर मैं आपको अपना जलवा दिखाता हूँ"मैने भगवान सिंह को शीशे में उतारा।
"सच बोल रहे हो"भगवान सिंह ने अजीब सी नजरो से मुझें घूरा।
"सोलह आने सच बोल रहा हूँ,वो देवप्रिय जैसा खडूसपना मेरे साथ करना बंद करो,और देखो फिर मैं कैसे आपकी वर्दी में और सितारे जड़वाता हूँ"मै भगवान सिंह को शीशे में उतारने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा था।
"भाई! सितारे जड़वाने की बजाय,कहीं मेरी वर्दी न उतरवा देना,देवप्रिय बता रहा था कि एक नंबर के खुरापाती आदमी हो तुम"भगवान सिंह की इस बात पर मैं जोरो से हँसना चाह रहा था,लेकिन हँसने का वो समय और स्थान दोनों ही गलत थे।

मुझे पुलिस हिरासत मे लिया गया -16

हम अंधेरा घिरने के बाद ही थाने पहुंच पाए थे। मेरी और भगवान सिंह के बीच मे मांडवाली हो चुकी थी,इसलिए अब उसके व्यवहार में जमीन आसमान का अंतर आ चुका था।

"सबसे पहले उस मकतूल लड़की के घर का पता दो,जिसने डायरी में मेरी आशिकी के किस्से बयान किये हुए है"मैंने कुर्सी पर बैठते ही भगवान सिंह को बोला।

"उस लड़की के घर का पता बताना तो गलत होगा,क्योकि उस डायरी के मुताबिक तो सवालो के घेरे में तुम भी हो,मैं कल उस लड़की के घर से उसकी हैंड राइटिंग के नमूने लेकर उस डायरी को हैंड राइटिंग एक्सपर्ट के पास उसकी ओपनियन के लिये भेजूंगा,अगर उस में डायरी की लिखाई अलग पाई गई तो मैं भी मान लूँगा की कोई तुम्हे फ़साने की कोशिश कर रहा है"भगवान सिंह ने मेरी ओर देखते हुए बोला।भगवान सिंह कानूनी और अपनी ड्यूटी के मद्देनजर बिल्कुल सही बोल रहा था,इसलिए मुझे भी उसकी बात से एहतराम होने से कोई गुरेज नही था। तभी एक कांस्टेबल ने अंदर आकर एक लिफाफा भगवान सिंह के सामने रखा।

"लो अनुज बाबू तुम्हारी पिस्टल की फोररेंसिक रिपोर्ट आ गई"ये बोलकर भगवान सिंह लिफाफे से रिपोर्ट निकाल कर पढ़ने लगा।जैसे जैसे वो रिपोर्ट पढ़ता जा रहा था।वैसे ही उसके चेहरे के भाव बदलते जा रहे थे।

"अनुज बाबू!तुम तो बारह के भाव नप गये हो,मुझे तुम्हे अभी अरेस्ट करना पड़ेगा"भगवान सिंह अचानक से अपनी कुर्सी से खड़ा हुआ और तेज कदमो से कमरे से बाहर की ओर चला गया,जितनी तेजी से वो बाहर गया था,उतनी ही तेजी से वो दो कॉन्स्टेबल के साथ अंदर आया था। वे दोनो कॉन्स्टेबल मेरे कंधों पर हाथ रख कर मेरी दोनो तरफ खड़े हो गए।

"मैं अरेस्ट हूँ क्या,लेकिन किस जुर्म में ये तो बताओ"मैंने प्रतिकार स्वरूप बोला।

"उस लड़की के खून के जुर्म में तुम्हे अरेस्ट किया है,गोली तुम्हारे ही पिस्टल से चली है और पिस्टल पर उंगलियों के निशान भी तुम्हारे ही पाए गए है"भगवान सिंह ने मेरी ओर देखकर बदले हुए स्वर में कहा।कमरे का वातावरण अचानक ही बदल गया था।तभी भगवान सिंह ने रिपोर्ट को मेरे सामने रख दिया।

"ध्यान से पढ़ लो,फिर मत बोलना की मै कोई पक्षपात कर रहा हूँ,चाहो तो शर्मा जी को भी फोन कर सकते हो,इस स्थिति में शायद वे भी तुम्हारी कोई मदद नही कर सके।मैने रिपोर्ट को पढा।रिपोर्ट का हर अक्षर मुझे गुनाहगार साबित कर रहा था।मुझे एक ऐसी लड़की का हत्यारा ठहराया जा रहा था,जिसका मैं नाम तक नही जानता था। जब भगवान सिंह ने मुझें उस लड़की की फ़ाइल दिखाई थी,तब भी मेरा ध्यान उसके नाम से ज्यादा उसकी फ़ोटो को देखने मे ज्यादा था।

"जिस लड़की के कत्ल का इल्जाम मुझ पर लगा रहे हो,उस लड़की का नाम जान सकता हूँ"मेरी बात सुनकर भगवान सिंह ने मेरी ओर अचरज से देखा।
"कमाल है अपनी गर्लफ्रैंड का नाम नही जानते हो"उसकी आवाज में भी हैरानी झलक रही थी।
"मुझे गुमनाम लड़कियों से इश्क लड़ाने में ज्यादा आनंद आता है,इसलिए मैं किसी लड़की से उसका नाम नही पूछता,वैसे भी शेक्सपीयर ने कहा भी है कि "नाम मे क्या रखा है"मैंने एक आहत मुस्कान के साथ बोला।
"संध्या नाम है लड़की का!और यही विजय विहार में रहती है"भगवान सिंह ने अब उसका नाम और उसका ठिकाना दोनो बता दिया।
"अब उसका ठिकाना इसलिए बता रहे हो,क्योकि अब मैं जेल जा रहा हूँ"मैंने हल्की सी मुस्कान के साथ बोला।
"अभी दो दिन तो तुम्हारी सेवा मै यही हवालात में ही करूँगा,दो दिन कोर्ट की छुट्टी है,उसके बाद ही तुम्हे रिमांड पर लिया जाएगा,देखते है कोर्ट कितने दिन का तुम्हारा रिमांड देती है,रिमांड पूरा होने के बाद ही जेल जाओगे"भगवान सिंह मेरा पूरा शेड्यूल तैयार भी कर चुका था। ये थाना ही मेरे लिये मनहूस था। पहले भी इसी थाने में मेरी गिरफ्तारी की नौबत आ गई थी,वो केस भी इन्हीं सौम्या मैडम का था,और आज दूसरी बार भी इसी थाने में मेरी गिरफ्तारी की नौबत आ गई थी।इस बार भी सौम्या ही कहीं न कहीं इस मामले से जुड़ी हुई थी।लेकिन मेरे सामने सबसे बड़ी पहेली तो ये संध्या नाम की लड़की थी,जिसे मैं न जानता था न पहचानता था,लेकिन मरकर भी मेरी जिंदगी की शाम करनें का सामान कर गई थी।
"फोन तो कर सकता हूँ जहाँपनाह"मैने भगवान सिंह से पूछा।
"हाँ कर सकते हो भाई,अपनी गिरफ्तारी की सूचना अपने किसी परिजन को देना चाहो तो दे सकते हो,ये तो कानून में भी है"भगवान सिंह ने मुझे बोला।उसके बोलते ही मैने रागिनी को फोन लगाया।
"तुम्हारे बॉस को रोहिणी थाने की पुलिस ने अरेस्ट कर लिया है,अब तुम्हारी सैलरी कौन देगा"मैने इन हालातों में भी रागिनी से वही मजाक किया,जो वो अक्सर मेरे साथ करती थी।
"उस पिस्टल की रिपोर्ट आ गई है क्या"रागिनी को जैसे पहले से ही अंदाजा था कि ऐसा ही कुछ होने वाला है।
"हाँ रिपोर्ट आ गई है,उस पिस्टल से एक कत्ल की वारदात हुई है और पिस्टल पर मेरी ही उंगलियों के निशान है"मैने संक्षेप में रागिनी को बताया।
"चिंता मत करो,इस महीने की सैलरी तो आपके हाथों से ही लूँगी,मैं और सौम्या अभी आधे घण्टे में थाने पहुंच रहे है"ये बोलकर रागिनी ने फोन काट दिया।मैं कुछ पल तक उस

मोबाइल को घूरता रहा और अभी उस मोबाइल को अपनी जेब के हवाले करनें ही वाला था कि जैसे अचानक मुझे कुछ याद आया हो।
"जनाब!आपने बोला था कि संध्या के मोबाइल में मेरा नंबर आपको मेरे नाम से सेव किया हुआ मिला था,फिर तो आपने कॉल डिटेल भी निकलवाई होंगी,मेरी उस तथाकथित प्रेयशी ने कितनी बार मुझ से फोन पर बात की थी,ये तो आपको पता चल ही चुका होगा"मैने भगवान सिंह से पूछा।
"अभी वो रिपोर्ट आई नही है,कल दोपहर तक आ जाएगी,अभी तो कई दिनों तक हमारे ही मेहमान रहने वाले हो,वो भी दिखा देंगे,क्यो चिंता कर रहें हो जासूस साहब"भगवान सिंह अब मेरी हर बात का जवाब तंज भरी मुस्कान के साथ दे रहा था।
"आपके केस की बुनियाद बहुत कमजोर है,सिर्फ कॉल डिटेल और ये डायरी का झूठ ही इस बात को सिद्ध कर देगा कि मुझें किसी साजिश का शिकार बनाया जा रहा है"मैने विश्वास भरे स्वर में कहा।
"और पिस्टल के बारे में क्या बोलोगे,मत भूलों की उससे निकली हुई गोली ही संध्या के जिस्म में मिली है,और उस पिस्टल पर फिंगरप्रिंट भी तुम्हारे हैं,ये सबसे ठोस सबूत है तुम्हारे खिलाफ"भगवान सिंह की बात का जवाब देने के लिये अभी मैंने अपना मुंह खोला ही था कि देवप्रिय ने एक गहरी मुस्कान के साथ कमरे में प्रवेश किया।

रागिनी का चेलेंज -17

घँटे भर में ही रागिनी और सौम्या थाने में आ चुके थे। मैं अभी तक भगवान सिंह के कमरे में ही था,थाना इंचार्ज माहेश्वरी साहब मेरा हालचाल पूछ कर जा चुके थे।

"भगवान सिंह जी,उस पिस्टल से चली हुई गोली के अलावा कोई और सबूत भी है आपके पास,जिससे आप अनुज और उस लड़की की आपस मे जान पहचान सिद्ध कर सकतें हो"पूरी बात सुनने के बाद रागिनी ने सबसे पहला सवाल किया था।

"एक डायरी भी है,जो कि संध्या के कमरे से बरामद हुई है,उसमे उसने खुद अनुज के साथ उसकी आशनाई का जिक्र किया हुआ है"भगवान सिंह ने बोला।

"इसका मतलब लड़की को डायरी लिखने का शौक रहा होगा,फिर तो आपने उसकी पूरी डायरी पढ़कर ये भी जान लिया होगा कि उस लड़की के साथ अनुज की आशिकी कब से शुरू हुई थी"रागिनी ने फिर से सवाल किया।

"मैडम!यहां मैं आपके सवालो के जवाब देने के लिये नही बैठा हूँ,बल्कि अनुज से इन सवालों के जवाब लेने के लिए बैठा हूँ"भगवान सिंह ने उखड़ते हुए बोला।

"लेकिन अनुज के जवाब के आधार पर तो आप कार्यवाही करोगे नही,कार्यवाही तो आप इसी बुनियाद पर करोगे न कि गोली अनुज की पिस्टल से चली और उस पर उंगलियों के निशान भी अनुज के पाये गए,और आपको अपनी इस थ्योरी को मजबूत करने के लिए उस डायरी की सपोर्ट मिल जाती है,यही बात है न सर"रागिनी ने अब बातचीत की कमान खुद ही सम्हाल ली थी,क्योकि मै तो बोल बोल कर थक चुका था।

"जी अभी तक तो इसी आधार पर कार्यवाही कर रहे है,शायद आपकी नजर में इस हत्या में अनुज की पिस्टल का प्रयोग होना छोटी बात होगी,लेकिन मेरी नजर में और कानून की नजर में ये बहुत बड़ी बात है"भगवान सिंह ने समझाने वाले स्वर में बोला।

"इसका मतलब मै आपकी पिस्टल चुरा कर ले जाऊँ और किसी का कत्ल कर दूँ,तो उसके जिम्मेदार आप ही होगे,मैं तो बेगुनाह ही रहूँगी,क्योकि पिस्टल आपकीं होंगी,गोली भी आपकी होगी,और इतनी अक्ल तो मैं भी लड़ा लूँगी की आपके हाथों के निशान उस पिस्टल से मिटने न दूँ"रागिनी की बात पर भगवान सिंह मुंह बायें रागिनी की तरफ देखता ही रह गया।

"लेकिन मैडम! अनुज की पिस्टल की गुमशुदगी की रिपोर्ट झूठी पाई गई थी,पिस्टल उन्ही के घर से बरामद हुई थी"भगवान सिंह भी हार मानने को तैयार नही था।

"किनकी मौजूदगी में वो पिस्टल अनुज के घर से ही बरामद हुई थी,उन्ही लोगो की मौजूदगी में बरामद हुई थी न,जिन लोगो पर अनुज ने अपनी पिस्टल चोरी करके ले जाने का आरोप लगाते हुए आपके ही थाने में रिपोर्ट लिखवाई थी,लेकिन आपने इस बात की कोई जांच नही की वे लोग उसी समय वहां पर क्या कर रहे थे,जब पिस्टल चोरी की रिपोर्ट

लिखवाई गई,तब क्या आपके सहकर्मी ने घर जाकर एक बार भी तफशिस की क्या सच मे ही पिस्टल चोरी हुई है या नही,अगर आप उसी वक़्त अनुज के घर की तलाशी ली होती तो क्या पता उसी दिन दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता"रागिनी अपनी फूल फॉर्म में थी और भगवान सिंह को सूझ नही रहा था।
"मैडम जरूरी तो नही है कि अनुज ने पिस्टल घर मे ही कहीं छुपाई हो,कहीं और भी छुपा सकता है"भगवान सिंह को अब कुछ न कुछ जवाब तो देना ही था।
"फिर उस लड़की को गोली मारकर खुद ही पिस्टल को अपने घर से बरामद करवा कर अपनी ही पूरी प्लानिंग पर पानी फेर दे,वाह जनाब,बड़ी दूर की सोचते हो आप"रागिनी ने बोला ही था कि तभी सौम्या भी बोल पड़ी।
"सर! एक बार लीक से हटकर सोचिए कि ये सारा बखेड़ा सिर्फ अनुज को फ़साने के लिये किया जा रहा है,ये तो आपके ऊपर है कि आप इस साजिश रचने वालो को पकड़ कर एक बेगुनाह को सजा होने से बचा सकते हो,लेकिन अगर आपने सोच ही लिया है कि आपने अनुज को ही गुनाहगार मानकर उसे ही सजा दिलवानी है,तो इस ख्याल को दिल से निकाल देना,आपका ये केस कोर्ट में टिकने वाला नही है"सौम्या ने बड़े ही जहीन तरीके से भगवान सिंह को समझाया।
"मैडम! अभी आप लोग घर जाइये,अभी मैं कल अपने सिनियर से इस केस के सभी पहलुओं पर डिसकस करने के बाद ही कोई केस दर्ज करूँगा,लेकिन मैं अभी अनुज को घर जाने की इजाजत नही दे सकता हूँ,आप समझिए ये कत्ल का मामला है,कोई मामूली लड़ाई झगड़े का नही है"भगवान सिंह ने स्पष्ट शब्दों में बोला।
"कोई नही रागिनी मुझें यही रहने दो,इतने तुम अपने तरीके से अपनी इन्वेस्टिगेशन जारी रखो,मुझे यकीन है,की भगवान सिंह उन लोगो को पकड़े चाहे न पकड़े,लेकिन वे लोग तुमसे नही बच सकते है"मैने रागिनी को बोला,जिसे सुनकर रागिनी तो मुस्करा पड़ी थी,लेकिन भगवान सिंह ने जरूर बुरा सा मुंह बना लिया था।
"तुम खाना खा लो अनुज,हम घर से तुम्हारा खाना लेकर आये है"सौम्या ने एक टिफिन मेरी ओर बढ़ाते हुए बोला।
"ठीक है खाना तो मैं खा लूंगा,लेकिन तुम लोग अब अपने घर जाओ,रात काफी होने वाली है"मैंने उन दोनो को बोला। मेरी बात सुनकर रागिनी ने सहमति में सिर हिलाया।
"ठीक है सर!हम लोग सुबह आते है,कल से उन लोगों की भी उल्टी गिनती शुरू होगी,जिन लोगों ने आपके साथ ये खेल खेला है"रागिनी ये बोलकर कुर्सी से खड़ी हो गई।
"मैडम!आप चिंता मत कीजिये!अगर अनुज बेगुनाह है तो कोई भी इसे फँसा नही पाएगा,लेकिन ये अगर गुनाहगार है तो,कोई इसे बचा भी नही पायेगा"भगवान सिंह ने रागिनी की ओर देख कर बोला।

"भगवान सिंह जी आप सिर्फ नाम के भगवान हो,जो ऊपर असली भगवान बैठे है न,वो भी अगर खुद आकर बोले की अनुज गुनाहगार है तो मैं उनकी बात पर भी विश्वास नही करूँगी!और आप चिंता मत कीजिये,सिर्फ अड़तालीस घँटे में असली गुनाहगार यही अनुज की जगह बैठे होगे"रागिनी ने पुरजोर तरीके से भगवान सिंह की बात का जवाब दिया। उसके बाद रागिनी और सौम्या वहां एक पल के लिये भी नही रुकी थी।
"क्या लड़की है ये यार"रागिनी के जाते ही,भगवान सिंह ने अपना सिर खुजाते हुए बोला।
"इससे बच कर रहना सर!ये मार्शल आर्ट की चैंपियन है,इससे तो मैं भी पंगे नही लेता"मैंने ठिठोली भरे अंदाज में बोला।
"सच मे" भगवान सिंह को मेरी बात का विश्वास ही नही हो रहा था।
"विश्वास नही हो तो!आप कल सुबह खुद टेस्ट लेकर देख लेना"मैने अपनी चिरपरिचित मुस्कान के साथ बोला।मेरी बात सुनकर भगवान सिंह के मुंह से कुछ और नही निकला। अब आपका ये सेवक तो इस वक़्त कानून के शिकंजे में कसा जा चुका था,और रागिनी ने भगवान सिंह को बोल दिया था कि अड़तालीस घँटे में वो असली गुनाहगारों को उसके सामने हाजिर कर देगी। अब आगे की समूची रब दास्ताँ आपको रागिनी की जुबानी ही सुनने को मिलेगी,वो अपने गुरू को इस झेमेले से निकाल पाएगी या नही,अपना अड़तालीस घँटे का वादा वो कैसे निभाएगी,ये अब आप उसी की जुबानी सुनिए।

तान्या-18

गुरु को थाने में ही छोड़कर मैं सौम्या के साथ बाहर आ चुकी थी।मैं थाने में बोल तो आई थी कि अड़तालीस घँटे में असली मुजरिमो को भगवान सिंह के सामने लाकर खड़ा कर दूंगी। लेकिन सच्चाई ये थी कि अभी मेरे खुद के सामने ये उलझन थी कि मैं इस केस पर काम कहाँ से शुरू करूँ। जिस लड़की के कत्ल के इल्जाम में गुरु को पुलिस ने थाने में पूछताछ के लिए बिठाकर रखा हुआ था,सबसे पहले तो मुझे उसी लड़की की कुंडली खंगालनी थी। अगर गुरु की पिस्टल से ही उसकी हत्या हुई है तो,ये देविका और मेघना का ही किया धरा हो सकता था,लेकिन उस लड़की का देविका और मेघना के साथ सम्बंध स्थापित तभी किया जा सकता था,जब मैं इन तीनो के बारे में संध्या नाम की उस लड़की के परिवार वालो से या उसके दोस्तों से बात कर पाती।
"सौम्या अभी क्या इरादा है तुम्हारा"तभी मैंने सौम्या से अपनी सोच की दुनिया से बाहर निकल कर पूछा।
"इस वक़्त तो सभी का इरादा सोने का होता है"सौम्या ने एक फीकी सी मुस्कान के साथ मुझें बोला।
"लेकिन मैं इस वक़्त सोकर समय नही बर्बाद कर सकती हूँ,मुझे गुरु के सामने बोली हुई बात को पूरी करना है सौम्या"मै सौम्या को एक दम स्पष्ट बोली।
"अगर तुम जगोगी तो मैं भी तुम्हारे साथ ही हूँ,आखिर मै भी तो देखूं ये जासूसी होती कैसे है"सौम्या ने वही बोला जिसकी मुझे उम्मीद थी।
"तो फिर अभी गाड़ी को विजय विहार की तरफ मोड़ लो,जिस संध्या नाम की लड़की के कत्ल के इल्जाम में गुरू थाने में है,वो लड़की वही की रहने वाली थी"मैं सौम्या को बोली।
"पता है मालूम है उस लड़की का"सौम्या ने गाड़ी को अब रोहिणी के रिठाला वाले रोड पर डाल दिया था।
"एक लोकल चैनल ने उस लड़की के कत्ल की स्टोरी को कवर किया था,तो मैंने वो वीडियो सेव की हुई है,उसमे वो मकान और उसका पता नजर आ रहा है"मै सौम्या को बोली तो उसने प्रंशसा भरी नजरों से मेरी ओर देखा।
"चलो फिर उस पते को गूगल मैप पर डालो,नही तो हम यहां की इन संकरी गलियों में ही रात भर भटकते रहेगे"सौम्या के बोलते ही मैंने उस वीडियो को ओपन करके उस पते को याद किया और फिर उस पते को गूगल मैप पर डाल दिया। मैप ने तुरन्त हमे वहां तक पहुंचने का रास्ता दिखा दिया था। मैंने मोबाइल में ही टाइम पर नजर डाली।अभी ग्यारह बजने वाले थे,दिल्ली जैसे शहर में अब लोगो ने ग्यारह बजे सोना कब का बन्द कर दिया था।कोई दस मिनट के बाद हम एक बड़े से मकान के सामने खड़े हुए थे। संध्या का घर विजय विहार के मेन रोड पर ही था। उस मकान के बाहर अभी भी लोगो का आना जाना

लगा हुआ था। सौम्या ने गाड़ी को एक तरफ लगाया।रात के इस वक़्त गाड़ी से दो लड़कियों को उतरते हुए देखकर वहां खड़े लोग कौतूहल से हमारी और ही देखने लगा। उनकी जिज्ञासा उस समय और बढ़ गई,जब हम उनकी तरफ ही उन्हें आते हुए नजर आए।
"अभी दो दिन पहले इस मकान में रहने वाली एक संध्या नाम की लड़की का कत्ल हुआ था,आप बता सकते है उसका कमरा कहां होगा"मैंने उन लोगो मे खड़े हुए एक युवक से पूछा।
"कमरा तो इसी मकान में है जी उस लड़की का,लेकिन इतनी रात को भी आप न्यूज़ चैनल वालो को चैन नही रहता क्या"उस लड़के ने हमे कोई न्यूज़ चैनल वाला समझा था।
"हम न्यूज़ चैनल से नही क्राइम ब्रांच से है,जितना पूछा है,उतना जवाब दो"मैंने पूरे पुलिसिया रौब से उस युवक को बोला।मेरे खुद को क्राइम ब्रान्च का बताते ही,वहां खड़े हुए लोग इधर उधर होने लगे थे।
"सॉरी मैडम!वो आप अन्दर जायेगे तो सीढियो से चढ़ते ही पहला कमरा उसी लड़की का था जी,अभी तो उसकी रूममेट मिलेगी जी कमरे में"उस युवक ने जल्दी जल्दी बोला।
"ठीक है हम देख लेगी,वहां कौन मिलता है कौन नहीं,तुम लोग इतनी रात को यहां मजमा लगाकर क्यो खड़े हो,जाओ अपने अपने घर जाओ"मैंने वही पुलिसिया रौब वहां दूर दूर जा खड़े हुए लोगो पर भी झाड़ दिया। मेरी बात सुनते ही वहां खड़े हुए लोग गोली की रफ्तार से गायब होने लगें। मै देख रही थी,की सौम्या काफी देर से अपनी हँसी को रोकने का प्रयास कर रही थी।मकान के अंदर घुसते ही उसकी वो हँसी बाहर निकल ही आई थी।
"यार तुमने तो असली पुलिस वालों से भी बढ़िया अंदाज में लोगो पर अपना रौंब झाड़ा है,तुम पुलिस में क्यो नही भर्ती हो जाती हो"सौम्या ने अपनी हँसी को रोकते हुए कहा।
"तुम जानती हो न ये हिंदुस्तान है,यहां लोगो के पास फालतू की पंचायत करने का समय ही समय होता है,अगर मैं इन लोगो को ये बोलती की मै संध्या की सहेली हूँ या उसके गांव से आई हूँ,तो ये सब अभी तक हमसे मधुमक्खियों की तरह से चिपके होते"मैने सौम्या को उस देश की जनता की साइक्लोजी समझाई।
"ये बात तो तुमने सही कही,एक तो रात का समय और ऊपर से दो दो खूबसूरत लड़कियां,पूरी रात हमारा ही इंटरव्यू लेते रहते"सौम्या की एक बार फिर से हँसी छूट पड़ी थी।हम लोग सीढिया चढ़कर पहली मंजिल पर उस कमरे के सामने पहुंच चुके थे।उस मंजिल पर कोई आठ कमरे बने हुए थे,बाहर गैलरी में इस वक़्त एक मध्यम प्रकाश का बल्ब जल रहा था।सभी कमरों के दरवाजे इस वक़्त बन्द थे। मैने उस पहले वाले कमरे के दरवाजे को थपथपाया। कोई दो मिनट के बाद एक लड़की के कदमो की आहट हमे दरवाजे के नजदीक आते हुए सुनाई दी।कुछ ही पल में दरवाजा खुला,दरवाजा एक लड़की ने खोला था,और वो दरवाजा खोलते ही हतप्रभ सी सौम्या की ओर देखती रह गई।सौम्या भी एकटक उसे ही देखे जा रही थी।

"मैडम आप"उस लड़की के गले मे मानो उसकी आवाज फंस गई थी।
"तुम यहाँ क्या कर रही हो तान्या"सौम्या ने उसे देखते हुए पूछा।
"तुम जानती हो इसे"मैने सौम्या की ओर देखते हुए पूछा।
"ये तान्या है,देविका के साथ ही इसका भी नाम आया था,उस कांड में,लेकिन ये किसी तरह से जेल जाने से बच गई थी"सौम्या ने जवाब दिया।
"ये तो बड़े काम की लड़की हमे मिल गई सौम्या,इसे बोलो हमे अंदर तो आने दे"मैने एक कुटील मुस्कान के साथ सौम्या को बोला।
"रास्ता छोड़ो!हमे संध्या के बारे में तुमसे कुछ बात करनी है"सौम्या की बात सुनते ही उस लड़की ने असमंजस में दरवाजा छोड़ दिया।पहले सौम्या अंदर गई।फिर मैं अंदर प्रवेश करते ही दरवाजे की कुंडी लगाने लगी।तान्या बेबस नजरो से बस हमें ही देखे जा रही थी।

देविका,संध्या और गैंगस्टर -19

"संध्या तुम्हारी ही रूममेट थी"मैने तान्या के चेहरे पर अपनी नजरो को गहराई से जमाया।
"जी!हम दोनो साथ ही रहते थे"तान्या ने धीमे से स्वर में जवाब दिया।
"कब से रह रही हो यहाँ"मैने अगला सवाल किया।
"जी एक साल से"तान्या ने संक्षिप्त जवाब दिया।
"संध्या से जानकारी रूममेट होने की वजह से ही हुई थी,या पहले से उसे जानती हो"मैंने फिर से पूछा।
"जी रूममेट होने की वजह से ही जानकारी हुई थी,इस मकान में होस्टल की तर्ज पर ही रूम रेंट पर दिए जाते है"तान्या ने जवाब दिया।
"सौम्या मैडम बोल रही है कि देविका ने जो फ्रॉड इनकी कंपनी के साथ किया था,उसमे तुम भी शामिल थी,लेकिन पुलिस तुम्हारे खिलाफ कुछ सबूत नही ढूंढ पाई,इस वजह से तुम बच गई,इस बात में कितनी सच्चाई है"मै अब असल मुद्दे पर आना चाहती थी।
"मैडम को कुछ गलतफहमी हो गई थी,मुझे उस केस में बिना वजह फंसाया जा रहा था"तान्या की आवाज अब अपना सुर बदलने लगी थी।
"कौन फंसा रहा था तुम्हे,सौम्या मैडम या देविका"मैने पूछा। मेरे इस सवाल पर तान्या ने एक नजर सौम्या पर डाली।
"देविका"उसने संक्षेप में जवाब दिया।
"देविका क्यो फंसाना चाहती थी तुम्हे,तुम्हारे साथ उसकी क्या दुश्मनी थी"मैंने काम का सवाल पूछा।
"दुश्मनी की वजह तो एक ही थी,कुमार गौरव,मेरे आने के बाद उसने देविका से दूरी बनानी शुरू कर दी थी,जो उसे गंवारा नही हुआ,इसलिए उसने उस केस में गौरव के साथ साथ मेरा नाम भी घसीटा था"तान्या ने जो जवाब दिया,मुझे उससे उसी जवाब की उम्मीद थी। उसके तार भी गौरव से ही कहीं न कहीं जुड़े हो सकते थे।
"तुम्हे पता है कि गौरव का भी मर्डर हो चुका है"मैंने ये बोलकर एक बार फिर से उसके चेहरे पर अपनी नजरें जमा दी।
"जी मालूम है"अचानक से उसके चेहरे पर एक उदासी की चादर बिछ गई थी।
"आपको कैसे पता चला,अभी तक तो पुलिस ने भी उसके कत्ल की सूचना प्रेस और मीडिया में नही दी है"मैने असमंजस से उसे देखा।
"मुझे गौरव की फैक्ट्री से ही बाबा की कॉल आई थी"तान्या का चेहरा इस वक़्त भावविहीन था।
"तो आपने उस काल के बाद क्या किया"मेरा अगला सवाल था।

"बाबा ने बताया था कि गौरव की बॉडी तो पुलिस पोस्टमार्टम के लिए ले गई है और जिस बेसमेंट में गौरव की बॉडी मिली थी,उस जगह को भी पुलिस ने सील कर दिया है,उसके बाद मैं गौरव के घर चली गई थी,उनकी मम्मी जी को सम्हालने के लिए,लेकिन उनको मेरा और गौरव का साथ पसंद नही था,इसलिए उन्होंने मेरे साथ बात तक नही की,फिर भी मैं दो तीन घँटे तक उन्ही के पास बैठी रही।जब उनसे कोई भी तवज्जो मुझे नही मिली तो मैं वहां से आ गई,मैं वैसे भी इस वक़्त बहुत परेशान हूँ"तान्या अचानक से फफक पड़ी थी।
"तुम्हारी परेशानी की वजह गौरव की मौत है या कुछ और वजह है"मैने जानना चाहा।
"मैं प्रेग्नेंट हूँ,गौरव का बच्चा मेरे पेट मे है"तान्या ने ये बोलकर हम दोनों के चेहरे की तरफ देखा।
"ओह्ह!फिर तो गौरव की मौत से तुम्हारा परेशानी में आना स्वभाविक ही है"इस बार सौम्या ने जरा नम्र शब्दों में बोला।
"संध्या के बारे में क्या जानती हो"असली मकसद तो मेरा संध्या के असल क़ातिल तक ही पहुँचना था।
"अच्छी लड़की थी,बस एक ही कमी थी,जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा दौलत कमा लेना चाहती थी,उसकी हर बात सिर्फ पैसे से शुरू होकर पैसे पर ही खत्म होती थी"तान्या ने साफगोई से बोला।
"इतनी ज्यादा दौलत की दीवानी थी कि इसके लिए वो कुछ भी कर सकती थी"मैंने अगला सवाल किया।
"हाँ कर सकती थी"तान्या ने संक्षेप में जवाब दिया।
" तुम दोनो साथ में रहती थी तो एक दूसरे के शौक हॉबी और बॉयफ्रेंड के बारे में भी जानती होगी,उनके बारे में बातें भी कडती होगी"मैंने और ज्यादा गहराई से जानना चाहा।
"उसका एक बॉयफ्रेंड था,जो गांवों में रहता है,उसके बारे में बोलती थी कि वो उसका बचपन का प्यार है,लेकिन वो अचानक से उसकी लाइफ से गायब हो गया है"तान्या ने बताया। यही कहानी एसआई भगवान सिंह ने भी बताई थी।
"अभी तक पुलिस ने तुमसे इस बारे में कोई पूछताछ नही की"भगवान सिंह का नाम ध्यान में आते ही मैने पूछा।
"एक देवप्रिय नाम के साहब आये थे,लेकिन उन्होंने ज्यादा कुछ नही पूछा था"तान्या ने जवाब दिया।
"उसके बॉयफ्रेंड का नाम जानती हो"मैंने तान्या से पूछा।
"नही"तान्या ने इनकार में सिर को हिलाया।
"देविका का कभी इस रूम पर तुम्हारे पास आना हुआ है"मैने फिर से पूछा।
"हाँ शुरू में तीन महीने वो हमारे साथ ही यही रही थी,फिर अचानक से उसके पास काफी पैसा आ गया था,तो उसने रोहिणी के सेक्टर 24 में अपना एक फ्लैट खरीद लिया

था"तान्या अब किसी भी सवाल का जवाब देने में अचकचा नही रही थी।
"संध्या का कत्ल कौन कर सकता है,ऐसा उसका कोई दुश्मन तुम्हारी नजर में है"मैंने फिर से पूछा।
"वो आजकल दिल्ली के एक गैंगस्टर के चक्कर मे फंसी हुई थी,वो गैंगस्टर कहीं बवाना की तरफ रहता है,कई बार वो उसे   यहाँ रूम पर भी लेकर आई थी"संध्या का किसी गैंगस्टर से रिश्ता होना मेरे लिए एक नई ख़बर थी,जिसके बहुत सारे मायने थे।
"उस गैंगस्टर का नाम बता सकती हो"मेरे लिए उसका नाम जानना भी जरूरी था।
"धीरज बवानिया"तान्या ने फिर से संक्षेप में जवाब दिया था।
"तुम भी मिली हो कभी उससे"मैने अगला सवाल किया।
"हाँ!जब भी वो यहां आया है तो,उससे मुलाकात हो ही जाती थी"तान्या ने बताया।
"कभी ऐसा हुआ है कि तुम्हारा बॉयफ्रेंड गौरव भी यहां हो और संध्या भी धीरज को लेकर यहां आई हो,और तुम दोनो के बॉयफ्रेंड की भी आपस मे मेल मुलाकात हो गई हो"मेरे इस सवाल पर तान्या थोड़ा सा अचकचा गई थी।
"जी हुआ तो है दो बार ऐसा"तान्या ने फंसे से स्वर में बोला।
"फिर कभी ऐसा कभी मन में नही आया कि तुम दोनो कपल एक साथ कही बाहर मौज मेले के लिए जाए,ऐसा अक्सर होता है,हम उम्र कपल में"मैने फिर से पूछा।
"नही!ऐसा प्लान तो कभी नही बना,और न ही धीरज और गौरव आपस मे इतना खुले हुए थे"तान्या ने बताया।
"अपना फोन नंबर दीजिये,अगर दोबारा तुमसे बात करने की जरूरत महसूस हुई तो आपको फोन करके आ जायेगे"मैंने तान्या को बोला। तान्या ने बुझे दिल से अपना फोन नंबर मुझे दिया।
"अब आखिरी दो सवाल!संध्या को क्या डायरी लिखने का शौक था,और उसका गांव कौन सा था"मैंने चलने के अंदाज में उससे पूछा।
"डायरी वो हमेशा नही लिखती थी,कभी कभी शेरो शायरी या ऐसी ही अपनी कोई याद उसे लिखनी होती थी तब वो लिखती थी,और गांव उसका राजस्थान में जयपुर के पास था...बावड़ी नाम था गांव का"तान्या ने अपनी याददाश्त पर जोर डालते हुए बोला।
"धीरज के लाइफ में आते ही उसने अपने गांव वाले बचपन के प्यार को भुला दिया था क्या"मेरे सवाल अभी खत्म नही हो रहे थे।
"शायद !भुला ही दिया होगा,तभी धीरज उसकी लाइफ में आया होगा"तान्या ने जवाब दिया।
"संध्या का फोन नंबर भी तुम्हारे फोन में होगा,जरा वो भी मुझे दे दो,मुझे उसके बारे में कुछ जानकारी निकालनी है"मेरे बोलने के बाद ये एक और काम था,जो उसने बुझे दिल से किया था।

"इस केस से निबटने के बाद मुझ से आफिस में आकर मिलना,शायद तुम्हारी परेशानी कुछ कम कर दूं"सौम्या ने उस कमरे से बाहर निकलते हुए तान्या उसे बोला। उसने अनुग्रहित नजरो से सौम्या को देखा।उसके बाद हम दोनों वहां से निकल आये थे,मुझे न जाने ऐसा क्यो लग रहा था कि अभी बहुत सारे सवाल थे,जिनके उत्तर मुझें तान्या से लेने चाहिए थे,लेकिन दिमाग़ में अभी नया कुछ आ नही आ रहा था।

खबरी का आगमन -20

उस मकान से बाहर निकल कर सौम्या ने गाड़ी की ड्राइविंग सीट सम्हाल ली थी।
"अब किधर चले"सौम्या ने सवालिया निग़ाहों से मेरी ओर देखा।मैने अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली।रात के बारह से ऊपर का समय हो चुका था।
"अभी तो घर पर ही ले लो,आज रात को सोते हुए इस केस की सभी बिखरी हुई कड़ियों को जोड़ना है,हर कोई एक नई कहानी सुना रहा है सौम्या"मैने सौम्या की ओर देखते हुए बोला।
"ये कहानियां झूठी है या सच्ची"सौम्या ने पूछा।
"कुछ सच्ची है कुछ झूठी है,अब संध्या का एक गैंगस्टर से रिश्ता बताया जा रहा है,जो मुझे बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर रहा है,हो सकता है संध्या और तान्या की तरह धीरज और गौरव में भी यहां आते जाते हुए गहरा याराना हो गया हो,गौरव पैसे वाला बन्दा था,और संध्या पैसो की पीर,उस पर गैंगस्टर लोग मानते ही है कि 'पराया माल अपना'"मैने सौम्या की ओर देखते हुए बोला।
"ये तो एक नया ही एंगल पैदा हो गया,लेकिन इन सब मे देविका और मेघना और फिर अनुज कहां से सम्मलित हो गया"सौम्या के जेहन में भी अब सवाल तैरने लगे थे।
"मत भूलो की देविका,संध्या और तान्या दोनो के ही संपर्क में रह चुकी है,और गौरव से तो उसका इशिकाना था ही,मतलब देविका और बाकी तीनो कॉमन फ्रेंड थे,फिर इन लोगो के साथ धीरज का मिलना कौन सी बड़ी बात थी"मैं अपने दिमाग को दौड़ाते हुए बोली।
"मेघना,इस तस्वीर में कहां फिट होती है"सौम्या ने अगला सवाल किया।
"मेघना के साथ तो देविका पहले से ही फिट है,उस एल्बम को भूल गई क्या तुम,जिसमे देविका और मेघना एक साथ फैमिली फ़ोटो में नजर आ रहे है"मैने सौम्या को ध्यान दिलाया।
"अब सवाल है कि संध्या और गौरव को क्यो मारा गया और उसमे अनुज को कैसे फंसाया गया"सौम्या चलती हुई गाड़ी में ही क़ातिल तक पहुंच जाना चाहती थी।
"जब इतने सवालो की कड़ियाँ जुड़ चुकी है तो,बाकी की कड़ियाँ भी जुड़ ही जाएगी,कम से कम इस अंधेरी रात में इस केस में जो अंधकार छाया हुआ था,वो तो मिट गया,अब एक रास्ता तो नजर आया"मैने राहत भरे स्वर में कहा।तभी सौम्या ने गाड़ी को अपने गेट पर रोका और उसके हॉर्न बजाने से पहले ही गार्ड के दौडतें हुए कदमो की आवाज सुनाई पड़ी और कुछ ही पल में गेट खुलता चला गया।सौम्या ने गाड़ी को पोर्टिको में खड़ा किया और हम दोनों गाड़ी से उतरकर अंदर की ओर चल दी।

****

अगली सुबह होते ही मैंने जो सबसे पहला काम किया था वो था अपने खबरी को याद करना।
"आजकल दिल्ली शहर में मर्डर होने बन्द हो गए है क्या,जो इतने दिनों में मुझे याद किया"खबरी ने फोन उठाते ही शिकायती लहजें में बोला।
"तेरे गुरु तो खुद मर्डर के केस में थाने में हाजिरी बजा रहे है,तू कह रहा है कि मर्डर होने बन्द हो गए है"मैने खबरी को बोला।
"सुबह सुबह भांग खा ली क्या रागिनी,गुरु क्यो किसी का मर्डर करने लगे"मुझे पता था कि मेरी तरह खबरी को भी इस बात पर विश्वास नही होने वाला था।मैंने खबरी को शुरू से आखिर तक पूरी बात बताई।
"मतलब सारे पुराने पापी मिल कर गुरु को ठिकाने लगाने पर तुले हुए है"पूरी बात सुनने के बाद खबरी के मुंह से निकला।
"कुछ ऐसा ही है,लेकिन अभी हमारे सामने बहुत सारे काम बाकी है,जो सिर्फ मेरे अकेले के बस की करना नही हैं,क्योकि मेरे पास समय बहुत कम है"मैंने खबरी को बोला।
"बोलो मुझे क्या करना है"खबरी ने व्यग्र स्वर में पूछा।
"तुम्हे अभी की अभी जयपुर रवाना होना है,जयपुर में एक गांव पड़ता है बावड़ी के नाम से,वहां जाकर इस संध्या नाम की लड़की की पूरी जन्मकुंडली निकाल कर लानी है,और संध्या को कोई उस गांव में कभी कोई प्रेमी भी हुआ करता था,उसका भी पूरा कच्चा चिट्ठा निकाल कर लाना है"मैने खबरी को बोला।
"ठीक है!मैं तैयार होकर घँटे भर में जयपुर निकल जाता हूँ,और शाम होने से पहले ही वहां की पूरी खबर तुम्हे देता हूँ"ये बोलकर खबरी ने फोन रख दिया था।कमाल की बात ये थी की आज उसने एक बार भी पैसो की बात नही की थी। खबरी के फोन रखते ही मैंने देखा कि सौम्या भी उठ चुकी थी और मेरी तरफ ही गौर से देख रही थी।
"रात भर सोई नही थी क्या!जो इतनी सुबह सुबह खबरी को भी उठा दिया।
"तुम तो अपने आफिस जाओगी!मैं जरा सीधा देविका को उसके फ्लैट पर जाकर उसे एक बार फिर से बात करके देखती हूँ,तान्या की बातों से बहुत सारे नए सवाल फिर से खड़े हो गए है"मैने सौम्या की ओर देखते हुए बोला।
"आफिस तो बाद में जाउंगी,पहले अनुज को सुबह का ब्रेकफास्ट और लंच भी तो देकर आना है"सौम्या ने बिस्तर को छोड़ते हुए बोला।एक अरबनपति महिला को अपने गुरु की इतनी फिक्र करते हुए देखकर गुरु के प्रति मन श्रद्धा से भर गया था।दिल्ली शहर की हसीनाओं में वाकई अपने गुरू का वट था। तभी राधा चाय की ट्राली के साथ कमरे में प्रवेश कर चुकी थी।

****

गुरु को ब्रेकफास्ट और लंच देने के बाद भी सौम्या अपने आफिस नही गई थी,बल्कि वो मेरे साथ ही देविका के फ्लैट पर जा रही थी।मुझे लगता था कि सौम्या अब गुरु के बाहर आने के बाद ही अपने आफिस में कदम रखने वाली थी।हम थाने से कोई बीस मिनट में देविका के फ्लैट पर पहुंच चुके थे।दो दिनो से मेघना और देविका की कोई खोज ख़बर नही थी। ऐसा लगता है कि वे दोनो सिर्फ उस पिस्टल को फिर से अनुज के घर मे प्लांट करने के लिए ही हमारे सामने आए थे।हम देविका के फ्लैट पर पहुंचे तो दरवाजे पर लगा हुआ एक बड़ा सा ताला हमारा मुंह चिढ़ा रहा था।मैंने आहत नजरो से सौम्या की ओर देखा।उसके बाद हम वापस आकर गाड़ी में बैठ गए।

"अब किधर चले" सौम्या ने मुझ से पूछा।

"अब सेंट्रल जेल की तरफ़ ले लो"आज तुम्हारे पतिदेव से तुम्हे मिलाकर लाती हूँ"मैंने सौम्या की तरफ देखकर बोला।

"मुझे नही मिलना उस हरामी हस्बैंड से,उसकी तो शक्ल से भी नफरत है अब मुझे"सौम्या के चेहरे पर मैने पहली बार क्रोध देखा था।

"शक्ल तो देखनी पड़ेगी अभी,डिवोर्स फ़ाइल किया हुआ है,तो कोर्ट में तो जाना पड़ेगा"मैंने सौम्या को बोला।

"मेरे वकील सब सम्हाल लेंगे,मुझे तलाक तो घर बैठें मिल जायेंग़ा"सौम्या ने उसी लहजें में जवाब दिया।

"मुझे सेंट्रल जेल से एक जानकारी निकलवानी है कि जब से राजीव जेल में गया है,उससे किन किन लोगों ने मुलाकात की है,एक संभावना ये भी है कि उन मुलाकातियों में से ही कोई इस सारी प्लानिंग का सूत्रधार निकले"मैंने सौम्या को असल बात बताई। मेरी बात सुनकर सौम्या ने सहमति में अपनी गर्दन हिलाई और गाड़ी को आगे बढ़ा दिया। अभी गाड़ी कुछ ही मीटर आगे बढ़ी थी कि एक साथ दो गाड़िया ठीक हमारे सामने आकर रुकी और उसमे से तकरीबन सात आठ लोग उतरकर हमारी गाड़ी की ओर बढ़े। इतने लोगो को अपनी गाड़ी की तरफ आते हुए देखकर सौम्या के चेहरे पर भय के चिन्ह साफ देखे जा सकते थे। लेकिन मेरी पिस्टल पर मेरी उंगलियां कस चुकी थी।

मुठभेड़ -21

उनमे से एक लड़के ने आकर हमारी गाड़ी के शीशे पर खटखट की। सौम्या अभी भी भयभीत नजरो से उन लड़कों की ओर देख रही थी। मैंने सौम्या की ड्राइविंग सीट पर ही बैठे रहने का इशारा किया और खुद दरवाजा खोलकर गाड़ी से बाहर आ गई।
"क्या तकलीप है"मैंने उस लड़के की आँखों मे आँखे डाल कर पूछा।
"इतनी खूबसूरत लडकिया कभी इस इलाके में देखी नही थी,इसलिए रोकने का दिल कर गया"उसने बदतमीजी से मेरी तरफ अपने हाथ को बढ़ाकर मुझे छूने की कोशिश की,लेकिन मैं पलक झपकते ही उसकी पहुंच से दूर हो गई।
"सच बोलो!किसके कहने पर हमे रोका है,नही तो एक भी बन्दा अपने पैरों पर वापिस नही जाएगा"मैंने उनकी तरफ देखते हुए बोला तो वो सब बाहुबली दांत चियार कर हँसने लगे थे।शायद एक लड़की के मुंह से ऐसे शब्द उन शोहदों ने पहली बार सुने थे,लेकिन मुझे वे लोग शोहदे नही लग रहे थे,शोहदे दो गाड़ियों में इस तरह से लड़कियों को छेड़ने के लिये नही निकलते है।आसानी से वे लोग मुझे बताने वाले लग नही रहे थे। उनसे कुछ उगलवाने के लिए उनकी खाल में भूसा भरना जरूरी था।
"बहुत हँसी आ रही हैं,मैने कोई जोक सुनाया था क्या"ये बोलकर मेरा एक पाँव हवा में लहराया और उस छपरी को अपने साथ लपेटते हुए सामने वाली दीवार से चिपका दिया,इस वक़्त वो बन्दा दीवार से चिपका हुआ था और मेरा पाँव उसकी गर्दन पर था। ये मेरा पसंदीदा दांव था,लेकिन दिल्ली जैसे शहर में आजमाने का मौका कम ही मिलता था। अपने साथी की ऐसी हालत हो जाने का तो बाकी लोगो को सपने में भी गुमान नही था। तभी दो लड़कों ने एक साथ मुझ पर अपने हाथों के मुक्के बनाकर मेरी ओर चलाये,मेरी पाँव की फ्लाइंग किक अब उस बन्दे की गर्दन का त्याग करके उन दोनो लड़को की ओर घूमी,और यकीन मानिये पूरे डेढ़ सौ किलोमीटर की रफ्तार से वो किक उन दोनों को एक साथ अपने साथ बहा कर ले गई। वो सभी छिछोरे मेरी तरफ ऐसे देख रहे थे की मानो उनकी जिंदगी में कोई जलजला आ गया हो,अब एक साथ उन पांचों लड़को ने मुझें घेर लिया था,लेकिन तब तक सौम्या भी अपनी गाड़ी से बाहर निकल आई थी,और अपने बैग से अपनी पिस्टल निकाल कर उन लड़कों पर तान चुकी थी।
"सौम्या अभी इन्हें गोली मत मारना,ये साले सिर्फ लातो में ही अभी ढेर हो जायेगे"मेरे ये बोलते ही जैसे वहां कोई बिजली कौंधी हो,मैंने अपने हाथ मे अपनी पॉकेट से निकाल कर पेन ले लिया था,और इस वक़्त मेरे पांव ही नही मेरे हाथ भी सिर्फ घुमते हुए नजर आ रहे थे,लेकिन उन्हें कोई देख नही पा रहा था,महज तीन मिनट में उन लोगो के चेहरों पर अनगनित निशान उस पेन से कटने की वजह से बन गए थे और वे सभी अपने चेहरों को अपने हाथों से छुपाए हुए दर्द से कराहते हुए जमीन पर लोट लगा रहे थे। तभी मैंने उनमे से

एक बन्दे को उसकी गिरेबान पकड़ कर उठाया और अपनी दो उंगलियों को उसकी आँखों के पास लहराया।
"अब दो सेकेण्ड में बता की किसके कहने पर यहां आए थे,नही तो तेरी दोनो आंखे अभी हमेशा के लिए बुझ जायेगी और तू अंधा होकर घूमेगा"मैंने बर्फ से भी सर्द स्वर में उसे बोला। तब तक सौम्या भी मेरे करीब आकर खड़ी हो चुकी थी।
"हमारे पास तो चंदन भाई का फोन आया था,की इस मकान में कोई भी आये तो उन्हें पकड़ कर उनसे पूछताछ करना कि वो यहां क्यो आये है"उस लड़के की अंधा होने के नाम से ही उसके पिछवाड़े से हवा निकल चुकी थी,इसलिए वो बिना रुके बोल रहा था।
"ये चंदन कौन है"मैंने उससे अगला सवाल किया।
"नांगलोई में रहता है जी, नजफगढ़ रोड पर एक कॉलोनी है,उसमे रहता है"उस लड़के ने फिर जवाब दिया।
"उसका पता ठिकाना बोल और वो नंबर बता जिस नंबर से उसका फोन आया था"उसने फोरन से पेश्तर मेरे इस सवाल का भी जवाब दिया।
"लेकिन इन लोगो को ऐसे छोड़कर जाएंगे तो ये पहले से ही उस चंदन को खबर कर देंगे"सौम्या मेरी ओर देखकर बोली।
"इस बात का जवाब मै गाड़ी में बैठकर दूँगी,अभी हम जिस काम के लिए जा रहे थे,वो काम ज्यादा जरूरी है,इन टटपुंजियो से तो कभी भी निबट लेंगे"मैने सौम्या को जवाब दिया।
"हाँ तो भाई लोगो! तुम लोगो की इतनी सेवा ही काफी है या अभी और सेवा पानी करूँ तुम्हारी"मैं एक बार फिर से उन सभी की ओर मुखातिब हुई।वे सभी इस तरह से बेदम पड़े थे,की बिना पानी पिलाये वे लोग होश में नही आने वाले थे।
"तुम्हारी गाड़ियों में पानी तो होगा न,इन्हे लाकर पिला दे,नही तो रागिनी के हाथ से मार ख़ाया हुआ इंसान चार घँटे से पहले होश में नही आता"मैंने उस लड़के को बोला,जो मेरे सवालो का जवाब दे रहा था,उसके बाद मैं गाड़ी की ओर बढ़ गई।सौम्या भी फोरन से पेश्तर मेरे पीछे लपकी।
"अब जवाब दो!इन लोगो को ऐसे ही क्यो छोड़ दिया"सौम्या ने एक बार फिर से ड्राइविंग सीट सम्हालते हुए पूछा।
"अगर ये हरामखोर एक दो होते तो इन्हे बांध कर डिक्की में भी डाल लेते,लेकिन इन आठ लोगो को एक साथ कैसे सम्हालते,इसलिए उनको यही छोड़ना ठीक लगा,अब ये अपने बाप को बोलेंगे की एक लड़की ने उनकी क्या हालत की है तो,अब वो फिर से ऐसी टुच्ची हरकत करनें से बाज आएंगे,,दूसरी बात या तो देविका के मकान की निगरानी की जा रही है,या फिर हमारा पीछा किया जा रहा है,अब मैं सेंट्रल जेल के रास्ते तक ये देखना चाहती हूँ

कि हमारे पीछे कौन आ रहा है"मैने एक साथ सारे कारण सौम्या को समझा दिए थे। सौम्या मुरीद नजरो से मेरी ओर देखते हुए मुस्करा दी।
"तुम्हारे हाथ पांव ही नही बल्कि दिमाग भी तेज चलता है"सौम्या ने मुरीद स्वर में ही बोला।
"एक बात समझ नही आई कि ये साले कैसे बदमाश थे,जिनके पास न हथियार थे,न कुछ"सौम्या एक बार फिर से बोली।
"साइक्लोजिकल उन्होंने सोचा होगा कि दो लड़कियां ही तो है,आठ लड़के तो दो लड़कियों को चुटकियों में काबू कर लेंगे,इसलिए या तो वे हथियार लाये नही होंगे,और अगर लाये भी होंगे तो उन्हें मार खाते हुए साँस लेने की फुरसत तो मिल नही रही थी,हथियार निकालने की कहाँ से मिलती"मेरी बात सुनते ही सौम्या की एक जोरदार खिलखिलाती हुई हँसी उस गाड़ी में गूँजी। लेकिन मेरी नजर अपने साइड मिरर में अपने पीछे आती हुई गाड़ी को ही ढूंढने की कोशिश कर रही थी।

सेंट्रल जेल-22

सेंट्रल जेल तक पहुंचने में तकरीबन एक घन्टा लग गया था। राजीव बंसल के मुलाकातियों का डाटा निकलवाने के मेरे पास दो तरीक़े थे,एक तरीका था एक बार फिर से मैं एसीपी शर्मा जी को परेशान करती,जो कि मुझें इस बार गवांरा नही हुआ।दूसरा रास्ता था कि मैं मुलाकाती कक्ष में जाकर गुरू की स्टाइल में कुछ चक्कर चलाऊँ और अपना काम निकाल लूं। इस समय मुझे गुरु की स्टाइल में इस काम को अंजाम देना सही लगा। मैं सौम्या के साथ जेल के उस मुलाकाती कक्ष में पहुंची। वहाँ इस वक़्त उस दिन के मुलाकातियों का तांता लगा हुआ था।मेरी नजर किसी ऐसे काम के बन्दे को ढूंढ रही थी,जो मेरे काम को दिलचस्पी लेकर कर दे।तभी एक सिपाही एक रजिस्टर को हाथ में थामे हुए मेरी बगल में से गुजरा। मैं पता नही क्या सोच कर उस सिपाही के पीछे चल पड़ी। वो सिपाही कुछ लोगो के पास जाकर खड़ा हुआ,उन लोगो मे से एक बन्दे ने उस सिपाही का हाथ अपने हाथ मे पकड़ा और उसकी हथेली में एक नोट फंसाकर उसकी हथेली को बन्द करने लगा। वो सिपाही गर्दन भले ही न में हिला रहा हो,लेकिन उसकी मुट्ठी लगातार उस नोट को भींचने में लगी हुई थी।जिस प्रकार के बन्दे को मैं तलाश रही थी,वो मेरी नजर के सामने था,थोड़ी सी न नुकर का ड्रामा करके उस सिपाही ने उस नोट को अपनी जेब के हवाले किया और उन लोगो को कुछ बोलकर वापिस हमारी और ही आने लगा था।जैसे ही वो मेरे पास से गुजरा,मैने उसकी पट्टिका पर लिखा हुआ नाम पढ़ा।जिस पर मोटे अक्षर में लालचंद लिखा हुआ था।
"लालचंद जी"उसका नाम पढ़ते ही मैने उसे आवाज लगा दी थी। जैसे ही उसके नाम की आवाज उसके कानों में पड़ी,उसके कदम जहाँ के तहाँ रुक गए। उसने पलट कर हमारी और देखा,मैंने उसके देखते ही एक मतलबी मुस्कान उसकी तरफ फेंकी।उसने भी अपने पांव उलटे खिंचने में पल भर की भी देरी नही लगाई।
"जी मैडम!आपने ही मुझे पुकारा था"लालचंद ने अपने स्वर में मिश्री घोलते हुए कहा,जिसकी आमतौर पर पुलिसियो से अपेक्षा नही की जाती थी,क्योकि वर्दी पहनते ही एक आम पुलिसिये की चाल में और आवाज में एक अजीब सा अक्खड़ पन आ जाता है। लेकिन इस वक़्त मेरा उस मिश्री जैसी आवाज का जवाब अपने स्वर में गुड़ की देशी मिठास घोलकर देना जरूरी थी।
"जी!आपसे एक काम है,दो मिनट के लिए आपसे बात कर सकते है"मैने लालचंद को बोला।
"जी बोलये मैडम,मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ"लालचंद अभी तक मिश्री की डली ही बना हुआ था।

"कही बैठकर बात हो सकती है क्या आपसे" मैंने अब दो मिनट से ज्यादा का कार्यक्रम उसे समझाया।
"मैडम मैं अभी पांच मिनट में एक आर्डर की कॉपी अपने साहब को देकर अभी हाजिर होता हूँ,फिर बात करते है"लालचंद ये बोलकर वहां रुका नही क्यो की अभी शायद उसी आर्डर के पहिये उन लोगो ने लगाए थे,जिनके पास से अभी नोट अपनी जेब मे डालकर आया था।हमे कोई दस मिनट के बाद लालचंद ने ले जाकर एक कमरे में बैठा दिया और खुद भी एक कुर्सी खींचकर हमारे पास ही बैठ गया।
"बोलिये मैडम,क्या काम है आपको"लालचंद ने पूछा।
"एक उम्र कैदी की पिछले दो साल की जानकारी चाहिये कि उससे किस किस ने जेल में आकर मुलाकात की"मैंने बिना कोई भूमिका बनाये हुए ही सीधा बोला।
"आप कौन हो मैडम,ऐसा काम करने के लिए हमे आज पहली बार किसी ने बोला है"लालचंद ने असमंजस से मेरी ओर देखा।
"काम भले ही किसी ने पहली बार बोला है,लेकिन काम इतना मुश्किल भी नही है,तुम्हे बस दो साल के रजिस्टर ही चेक करने होंगे"मैंने लालचंद को बोला।
"अब रजिस्टर नही चेक करना पड़ता,सब कम्प्यूटर में चेक करना पड़ता है"लालचंद ने बिना पूछे ही बताया।
"ये तो और भी आसान है लालचंद जी,और इस आसान से काम के मै आपको पांच हजार रु दे सकती हूँ"मैंने उसके आगे चुग्गा फेंका।
"लेकिन आपने अभी तक नही बताया कि आप हो कौन"लालचंद को फिर से अपना पुराना सवाल याद आ गया था।
"मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ,मुझे एक केस के सिलसिले में उस कैदी की डिटेल चाहिए"मैंने अपना वास्तविक परिचय दिया।
"केस क्या है"लालचंद को पूरी कहानी जाननी थी।
"यार तुम आम खाओ न,गुठलियां गिनने के चक्कर में क्यो पड़े हो"मैंने इस बार उसे हल्का सा हड़काया।
"मैंने अगर ये काम किया तो,जिंदगी में पहली बार ऐसा काम करूँगा,मैं ये जानना चाहता हूँ कि इस काम से मेरी नौकरी को तो कोई खतरा नही हैं"लालचंद को अपनी नौकरी के बारे में फिक्रमंद होना भी लाजिमी था।
"ये जो मैडम मेरे साथ बैठी है,इनके पति है वे,जिनकी डिटेल हमे निकलवानी है,वो एक मर्डर के केस में उम्रकैद की सजा पा चुके है,मैडम उनसे तलाक लेकर अपना घर फिर से बसाना चाहती है,अब तुम्ही बताओ एक क़ातिल की बीवी बनकर कैसे रहेगी ये मैडम समाज मे,क्या इसे अपनी जिंदगी जीने का अधिकार नही है,क्या इसे अपनी नई दुनिया

बसाने का अधिकार नही है"मैंने एक भावपूर्ण कहानी उसे सुनाई। मेरे बोलने के दौरान वो एकटक सौम्या की ओर ही देख रहा था,तभी सौम्या ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा।
"लालचंद जी कर दीजिए न हमारी मदद,बड़ी मेहरबानी होगी आपकी,आपके इस एहसान को जिंदगी भर नही भूलेंगे हम,उस राक्षस से हमारा पीछा छूट जाएगा,आपकी कृप्या से"सौम्या ने गजब तरीक़े से लालचन्द को अपने मोहपाश में फांस लिया था।
"ठीक है मैडम आप कैदी का नाम बताइये मै पहले उसका रिकॉर्ड चेक करके आता हूँ,फिर आता हूँ आपके पास,तब तक आप यही इंतजार कीजिये"लालचन्द के ये बोलते ही सौम्या ने उसे राजीव बंसल की पूरी डिटेल लिखवा दी।डिटेल लेकर लालचन्द अंदर की तरफ जाकर हमारी नजरो से ओझल हो गया।लालचन्द के जाते ही सौम्या ने एक कुटिल मुस्कान के साथ मेरी तरफ देखा।मै भी उसकी मुस्कान का मतलब समझ कर मुस्करा पड़ी थी।
कोई बीस मिनट के इंतजार के बाद लालचन्द अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरे हमारे पास आया।
"मैडम आप तो बहुत बड़ी हस्ती हो,और इतने बड़े काम को सिर्फ पांच हजार में करवाना चाहती हो"लालचन्द का लालच अब उसकी जुबान से टपक रहा था।
"काम हो जाएगा न"मैंने सौम्या की जगह जवाब दिया।
"सौ प्रतिशत हो जायेगा,लेकिन पांच नही पंद्रह हजार देने होंगे,क्योकि पांच मुझे कंप्यूटर वाले लड़के को देने होंगे"लालचन्द ने ईमानदारी से अपने हिस्सेदार का भी नाम बताया।
"ठीक है दिए पंद्रह हजार,ये बताओ डिटेल कितनी देर में मिल जाएगी"मैंने एक पल की भी उसकी बात को मानने में देरी नही की।
"आप एक घन्टा कैंटीन में बैठिये,मैं डिटेल लेकर वही आता हूँ"लालचन्द ने चमकते हुए चेहरे के साथ कहा। उसकी बात सुनकर हम उस कमरे से बाहर कैंटीन की ओर चल दिये। वैसे भी लंच टाइम होने वाला था।
एक घँटे से पहले ही लालचन्द हमारे सामने हाजिर हो चुका था और एक प्रिंट आउट उसने मेरे हाथ मे रख दिया था।प्रिंट आउट को खोलकर एक सरसरी नजर से उसे देखा,और एक नाम पर नजर पड़ते ही मेरे होठो पर सहसा मुस्कान खिल उठी। मैंने उस प्रिंट आउट को अपनी जेब के हवाले किया।
"मैडम पैसे आप उस कैंटीन वाले को दे दो"लालचन्द ने सेफ साइड खेलते हुए बोला।मुझे कैंटीन वाले को भी देने में कोई परेशानी नही थी।मैंने काउंटर पर जाकर उस कैंटीन वाले को अपने खाने के पैसो के साथ ही अपने खाने के बिल का भी भुगतान किया और कैंटीन से बाहर आकर अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गए।

चन्दन की हत्या -23

सेंट्रल जेल तक पहुंचने में तकरीबन एक घन्टा लग गया था। राजीव बंसल के मुलाकातियों का डाटा निकलवाने के मेरे पास दो तरीक़े थे,एक तरीका था एक बार फिर से मैं एसीपी शर्मा जी को परेशान करती,जो कि मुझें इस बार गवांरा नही हुआ।दूसरा रास्ता था कि मैं मुलाकाती कक्ष में जाकर गुरू की स्टाइल में कुछ चक्कर चलाऊँ और अपना काम निकाल लूं। इस समय मुझे गुरु की स्टाइल में इस काम को अंजाम देना सही लगा। मैं सौम्या के साथ जेल के उस मुलाकाती कक्ष में पहुंची। वहाँ इस वक़्त उस दिन के मुलाकातियों का तांता लगा हुआ था।मेरी नजर किसी ऐसे काम के बन्दे को ढूंढ रही थी,जो मेरे काम को दिलचस्पी लेकर कर दे।तभी एक सिपाही एक रजिस्टर को हाथ में थामे हुए मेरी बगल में से गुजरा। मैं पता नही क्या सोच कर उस सिपाही के पीछे चल पड़ी। वो सिपाही कुछ लोगो के पास जाकर खड़ा हुआ,उन लोगो मे से एक बन्दे ने उस सिपाही का हाथ अपने हाथ मे पकड़ा और उसकी हथेली में एक नोट फंसाकर उसकी हथेली को बन्द करने लगा। वो सिपाही गर्दन भले ही न में हिला रहा हो,लेकिन उसकी मुट्ठी लगातार उस नोट को भींचने में लगी हुई थी।जिस प्रकार के बन्दे को मैं तलाश रही थी,वो मेरी नजर के सामने था,थोड़ी सी न नुकर का ड्रामा करके उस सिपाही ने उस नोट को अपनी जेब के हवाले किया और उन लोगो को कुछ बोलकर वापिस हमारी और ही आने लगा था।जैसे ही वो मेरे पास से गुजरा,मैने उसकी पट्टिका पर लिखा हुआ नाम पढ़ा।जिस पर मोटे अक्षर में लालचंद लिखा हुआ था।

"लालचंद जी"उसका नाम पढ़ते ही मैने उसे आवाज लगा दी थी। जैसे ही उसके नाम की आवाज उसके कानों में पड़ी,उसके कदम जहाँ के तहाँ रुक गए। उसने पलट कर हमारी और देखा,मैंने उसके देखते ही एक मतलबी मुस्कान उसकी तरफ फेंकी।उसने भी अपने पांव उलटे खिंचने में पल भर की भी देरी नही लगाई।

"जी मैडम!आपने ही मुझे पुकारा था"लालचंद ने अपने स्वर में मिश्री घोलते हुए कहा,जिसकी आमतौर पर पुलिसियो से अपेक्षा नही की जाती थी,क्योकि वर्दी पहनते ही एक आम पुलिसिये की चाल में और आवाज में एक अजीब सा अक्खड़ पन आ जाता है। लेकिन इस वक़्त मेरा उस मिश्री जैसी आवाज का जवाब अपने स्वर में गुड़ की देशी मिठास घोलकर देना जरूरी थी।

"जी!आपसे एक काम है,दो मिनट के लिए आपसे बात कर सकते है"मैने लालचंद को बोला।

"जी बोलये मैडम,मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ"लालचंद अभी तक मिश्री की डली ही बना हुआ था।

"कही बैठकर बात हो सकती है क्या आपसे" मैंने अब दो मिनट से ज्यादा का कार्यक्रम उसे समझाया।
"मैडम मैं अभी पांच मिनट में एक आर्डर की कॉपी अपने साहब को देकर अभी हाजिर होता हूँ,फिर बात करते है"लालचंद ये बोलकर वहां रुका नही क्यो की अभी शायद उसी आर्डर के पहिये उन लोगो ने लगाए थे,जिनके पास से अभी नोट अपनी जेब मे डालकर आया था।हमे कोई दस मिनट के बाद लालचंद ने ले जाकर एक कमरे में बैठा दिया और खुद भी एक कुर्सी खींचकर हमारे पास ही बैठ गया।
"बोलिये मैडम,क्या काम है आपको"लालचंद ने पूछा।
"एक उम्र कैदी की पिछले दो साल की जानकारी चाहिये कि उससे किस किस ने जेल में आकर मुलाकात की"मैंने बिना कोई भूमिका बनाये हुए ही सीधा बोला।
"आप कौन हो मैडम,ऐसा काम करने के लिए हमे आज पहली बार किसी ने बोला है"लालचंद ने असमंजस से मेरी ओर देखा।
"काम भले ही किसी ने पहली बार बोला है,लेकिन काम इतना मुश्किल भी नही है,तुम्हे बस दो साल के रजिस्टर ही चेक करने होंगे"मैंने लालचंद को बोला।
"अब रजिस्टर नही चेक करना पड़ता,सब कम्प्यूटर में चेक करना पड़ता है"लालचंद ने बिना पूछे ही बताया।
"ये तो और भी आसान है लालचंद जी,और इस आसान से काम के मै आपको पांच हजार रु दे सकती हूँ"मैंने उसके आगे चुग्गा फेंका।
"लेकिन आपने अभी तक नही बताया कि आप हो कौन"लालचंद को फिर से अपना पुराना सवाल याद आ गया था।
"मैं एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूँ,मुझे एक केस के सिलसिले में उस कैदी की डिटेल चाहिए"मैंने अपना वास्तविक परिचय दिया।
"केस क्या है"लालचंद को पूरी कहानी जाननी थी।
"यार तुम आम खाओ न,गुठलियां गिनने के चक्कर में क्यो पड़े हो"मैंने इस बार उसे हल्का सा हड़काया।
"मैंने अगर ये काम किया तो,जिंदगी में पहली बार ऐसा काम करूँगा,मैं ये जानना चाहता हूँ कि इस काम से मेरी नौकरी को तो कोई खतरा नही हैं"लालचंद को अपनी नौकरी के बारे में फिक्रमंद होना भी लाजिमी था।
"ये जो मैडम मेरे साथ बैठी है,इनके पति है वे,जिनकी डिटेल हमे निकलवानी है,वो एक मर्डर के केस में उम्रकैद की सजा पा चुके है,मैडम उनसे तलाक लेकर अपना घर फिर से बसाना चाहती है,अब तुम्ही बताओ एक क़ातिल की बीवी बनकर कैसे रहेगी ये मैडम समाज मे,क्या इसे अपनी जिंदगी जीने का अधिकार नही है,क्या इसे अपनी नई दुनिया

बसाने का अधिकार नही है"मैंने एक भावपूर्ण कहानी उसे सुनाई। मेरे बोलने के दौरान वो एकटक सौम्या की ओर ही देख रहा था,तभी सौम्या ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा।
"लालचंद जी कर दीजिए न हमारी मदद,बड़ी मेहरबानी होगी आपकी,आपके इस एहसान को जिंदगी भर नही भूलेंगे हम,उस राक्षस से हमारा पीछा छूट जाएगा,आपकी कृप्या से"सौम्या ने गजब तरीक़े से लालचन्द को अपने मोहपाश में फांस लिया था।
"ठीक है मैडम आप कैदी का नाम बताइये मै पहले उसका रिकॉर्ड चेक करके आता हूँ,फिर आता हूँ आपके पास,तब तक आप यही इंतजार कीजिये"लालचन्द के ये बोलते ही सौम्या ने उसे राजीव बंसल की पूरी डिटेल लिखवा दी।डिटेल लेकर लालचन्द अंदर की तरफ जाकर हमारी नजरो से ओझल हो गया।लालचन्द के जाते ही सौम्या ने एक कुटिल मुस्कान के साथ मेरी तरफ देखा।मै भी उसकी मुस्कान का मतलब समझ कर मुस्करा पड़ी थी।
कोई बीस मिनट के इंतजार के बाद लालचन्द अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरे हमारे पास आया।
"मैडम आप तो बहुत बड़ी हस्ती हो,और इतने बड़े काम को सिर्फ पांच हजार में करवाना चाहती हो"लालचन्द का लालच अब उसकी जुबान से टपक रहा था।
"काम हो जाएगा न"मैंने सौम्या की जगह जवाब दिया।
"सौ प्रतिशत हो जायेगा,लेकिन पांच नही पंद्रह हजार देने होंगे,क्योकि पांच मुझे कंप्यूटर वाले लड़के को देने होंगे"लालचन्द ने ईमानदारी से अपने हिस्सेदार का भी नाम बताया।
"ठीक है दिए पंद्रह हजार,ये बताओ डिटेल कितनी देर में मिल जाएगी"मैंने एक पल की भी उसकी बात को मानने में देरी नही की।
"आप एक घन्टा कैंटीन में बैठिये,मैं डिटेल लेकर वही आता हूँ"लालचन्द ने चमकते हुए चेहरे के साथ कहा। उसकी बात सुनकर हम उस कमरे से बाहर कैंटीन की ओर चल दिये। वैसे भी लंच टाइम होने वाला था।
एक घँटे से पहले ही लालचन्द हमारे सामने हाजिर हो चुका था और एक प्रिंट आउट उसने मेरे हाथ मे रख दिया था।प्रिंट आउट को खोलकर एक सरसरी नजर से उसे देखा,और एक नाम पर नजर पड़ते ही मेरे होठो पर सहसा मुस्कान खिल उठी। मैंने उस प्रिंट आउट को अपनी जेब के हवाले किया।
"मैडम पैसे आप उस कैंटीन वाले को दे दो"लालचन्द ने सेफ साइड खेलते हुए बोला।मुझे कैंटीन वाले को भी देने में कोई परेशानी नही थी।मैंने काउंटर पर जाकर उस कैंटीन वाले को अपने खाने के पैसो के साथ ही अपने खाने के बिल का भी भुगतान किया और कैंटीन से बाहर आकर अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गए।

एक और मुठभेड़ की तैयारी -24

रागिनी और सौम्या इस वक़्त दोनो ही लोकल पुलिस थाने में बैठे हुए थे। चंदन की लाश को पुलिस पोस्टमार्टम के लिए भिजवा चुकी थी।सभी खानापूर्ति करने के बाद रागिनी और सौम्या भी लोकल थाने के एसआई दिलबाग चौधरी के साथ थाने में आ चुकी थी।
"तो आप एक प्राइवेट डिटेक्टिव है और आप एक केस के सिलसिले में चंदन से पूछताछ करने के लिए उसके घर पर आई थी,और जब आप पूछताछ पूरी करने के बाद उन्हें उसे उस केस से संबंधित थाने में ले जा रहे थे,तब उसकी किसी अज्ञात बाइक सवार ने गोली मारकर हत्या कर दी"दिलबाग सिंह ने अपनी नजर दोनो के ऊपर जमाते हुए बोला।
"जी हुआ तो कुछ ऐसा ही है,वैसे भी चंदन काफी डरा हुआ सा था,की अगर उसने मुंह खोला तो उसके साथी ही उसे मार डालेंगे,और उसकी आशंका घर से निकलते ही सच भी हो गई"मैंने दिलबाग सिंह की बात का जवाब दिया।
"उस केस के बारे में मुझें डिटेल से बताओ,जिस केस में आप उससे पूछताछ करनें के लिये आई थी"दिलबाग सिंह ने बोला।
"ये सौम्या बंसल है,बंसल इंडस्ट्रीज़ की मालकिन है,तीन साल पहले से इनके पति राजीव बंसल अपने पिता और सौतेली माँ की हत्या के जुर्म में जेल में अपनी उम्रकैद की सजा काट रहे है,उसी राजीव बंसल ने धीरज बवानिया नाम के एक गैंगस्टर को इन्हे मारने के लिए,जेल में रहते हुए सुपारी दी थी,इन्हे मारने की प्लानिंग को सिरे चढ़ाने के लिये ही चंदन जो कि धीरज बवानिया के गिरोह में काम करता था,कई बार जेल में जाकर राजीव बंसल से पिछले छह महीने में जाकर मिला था,उसी सिलसिले में हम लोग चंदन से पूछताछ करने आये थे"मैंने दिलबाग सिंह को बताया।
"ये बात कुछ अजीब नही लगती की जिस महिला को मारने के लिए जिस गैंग ने सुपारी ली हुई है,तुम उस महिला को उसी गैंग के गुर्गों के पास लेकर घूम रही हो" दिलबाग सिंह ने सही बात पकड़ी थी।
"इन्हे साथ मे लेकर घूमना मेरी मजबूरी है,क्योकि जिन लोगो ने इन्हें मारने की सुपारी ली है,वे लोग इनके आफिस और घर पर इनकी घात लगाए बैठे है,इस बारे में चंदन ने भी हमेबताया था,और इत्तेफाक से ये सुपारी वाली बात भी हमे चंदन ने ही बताई थी"मैंने सफाई दी।
"ओह्ह,इस बात की कोई शिकायत आपने पुलिस में दर्ज करवाई है"इस बार दिलबाग सिंह सौम्या से मुखातिब हुआ।
"जी!मेरी जान को खतरे की आशंका है,इसकी एक सूचना मेरे घर और आफिस के लोकल थाने में दर्ज है,और मेरे पर्सनल सुरक्षाकर्मी भी मेरे साथ रहते है,लेकिन मुझें उनसे भी

ज्यादा भरोसा इन पर है इसलिए मैं इनके साथ रहती हूँ,मैंने इन्हें अपने लिए हायर किया हुआ है"सौम्या ने वक़्त के मुताबिक जवाब दिया।

"इस वक़्त आपके सुरक्षाकर्मी आपके साथ नही है"दिलबाग सिंह पता नही क्यो बेफिजूल के सवाल किए जा रहा था।

"वे मुझे घर से लेकर आफिस तक एस्कॉर्ट करते है,अभी तीन दिन से मैं इनके साथ हूँ,इसलिये वे लोग घर पर ही ड्यूटी कर रहे है"सौम्या ने फिर से जवाब दिया।

"जनाब!हम चंदन के साथ उसकी हत्या के समय क्यो साथ मे थे,इसके बारे में आपको बता दिया हैं,बाकी चंदन आपके इलाके का एक हिस्ट्रीशीटर बदमाश था,और जांच में ये बात भी साबित हो जाएगी कि वो गैंगस्टर धीरज बवानिया के गिरोह के लिए काम भी करता था,तो अब हमे जाने की इजाजत मिल सकती है,क्योकि अभी तक मैडम की जान के ऊपर से खतरा टला नही है,जब वे लोग दिनदहाड़े अपने साथी को मार सकते है तो,मैडम पर या मुझ पर गोलिया चलाने में क्या देर लगायेगे"मैंने दिलबाग सिंह के सवालो से उकता कर बोला।

"ठीक है आप अपना बयान दर्ज करवाकर जा सकती है,आगे की जांच में जब भी आपकी जरूरत पड़ेगी,हमारे बुलावे पर आपको आना पड़ेगा"ये बोलकर दिलबाग सिंह ने अपने एक हवलदार को आवाज लगाकर बुलाया और हमारा बयान दर्ज करने के लिये बोला।

****

थाने से बाहर निकलने में हमे एक घँटे से भी ज्यादा का समय लग गया था।सौम्या सहमी हुई सी इधर उधर नजर दौड़ाती हुई गाड़ी की तरफ बढ रही थी।कुछ ही पल में हम दोनो गाड़ी में समा चुके थे।

"इतनी डरी सहमी हुई क्यो हो"मैंने सौम्या के चेहरे पर नजर डालते हुए कहा।

"तुम्हारी बात याद करके डर लग रहा हैं,तुमने बोला है न कि वो जब चंदन को इस तरह से दिनदहाड़े गोली मार सकते है तो,फिर मुझे भी तो मार सकते है"सौम्या ने डरे हुए स्वर में बोला।

"अरे यार!उन लोगो को कोई सपना आ रहा है कि इस तरह से तुम दिल्ली की किस सड़क पर ऐसे घूम रही हो,इसके लिए वे लोग तुम्हे तुम्हारे घर से तुम्हे वाच करते,लेकिन अगर हमारे पीछे कोई नही हैं,तो इसका मतलब है कि वे लोग अभी तक तुम्हारे आफिस पर ही नजर रखे हुए है"मैंने सौम्या को दिलासा देते हुए बोला।

"इस प्रकार से तो मैं कभी आफिस ही नही जा पाऊंगी"सौम्या की चिंता भी वाजिब थी।

"मतलब,गुरु से पहले मुझे तुम्हारी समस्या को हल करना पड़ेगा"मैंने सौम्या कि तरफ देखते हुए बोला।

"मतलब"सौम्या की समझ मे मेरी बात नही आई थी।

"मतलब!पहले तुम्हारी आगवानी के इंतजार में खड़े उन टपोरियों की आवभगत हमे जाकर करनी पड़ेगी,इससे पहले की वो तुम पर कहीं कोई हमला करें,हमे उन्हें पहले ही ठिकाने लगाना होगा"मैने उसे अपनी बात का मतलब समझाया।
"ये तरीका ही सही रहेगा,क्या पता उन लोगो के जरिये ही हम लोग धीरज बवानिया और फिर देविका और मेघना तक भी पहुंच जाए"सौम्या को मेरा प्लान पसंद आया था।तभी मेरे फोन पर मेरे प्यारे खबरी का नंबर चमकने लगा। मैंने तत्काल खबरी के फोन को उठाया।
"संध्या की फैमिली तो अभी गांव में ही रहती है,लेकिन संध्या दो साल से दिल्ली में ही रहती है और वही रहकर कोई कोर्स कर रही थी"खबरी फोन उठाते ही बिना किसी भूमिका के मुद्दे की बात पर आ गया था।
"संध्या के उस गांव वाले आशिक के बारे में ही पता चला"मैने पूछा।
"संध्या के आशिक और अपने गुरु का नाम एक ही है,इस गांव के सरपंच के लड़के का नाम भी अनुज ही है,लेकिन वो बन्दा अपने गुरु की तरह से ही दिलफेंक निकला और गांव में इश्क संध्या से लड़ाता रहा और फरार किसी और लड़की के साथ हो गया,उसी की याद में संध्या अपनी डायरी के पेज काले करती थी"खबरी ने जो बोला था,उसी बात का मुझे अंदेशा मुझे भी था।
"संध्या के घरवालों को पता चल चुका है क्या की संध्या का कत्ल हो चुका है"मैने खबरी से पूछा।
"जी!उन्हें पता चल चुका है और उनके कुछ परिवार वाले दिल्ली गए हुए है"खबरी ने बताया।
"ठीक है,अब तुम चाहो तो वापिस आ सकते हो,लेकिन आने से पहले संध्या और उसके आशिक के बीच के इश्क का कुछ प्रूफ लेते आना,जिससे मैं उसकी डायरी में मौजूद गुरु के नाम की क्लेरिफिकेशन यहाँ की पुलिस को दे सकूं"ये बोलकर मैने फोन काट दिया और सौम्या को गाड़ी उसके आफिस की तरफ ले जाने के लिए बोल दिया।

****

"अभी छह बजने वाले हैं,क्या अभी तक धीरज बवानिया के गुर्गे तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे"मै सौम्या की ओर देखकर बोली।
"लेकिन जिस तरह से तुम जा रही हो,ऐसे तो वो देखते ही मुझे शूट कर देंगे"सौम्या ने मेरी ओर देखकर बोला।
"तुम चिंता मत करो,तुम्हे कुछ नही होगा,तुम फोन करके अपने आफिस में सिर्फ इतना बोलो की आज 8 बजे से पहले कोई जाएगा नही,तुम ऑफिस आ रही हो"मैंने सौम्या को बोला।
"उससे क्या होगा"सौम्या असमंजस से बोली।

"मैं इस आपरेशन को अकेली नही करना चाहती हूँ,मैं दिल्ली पुलिस के साथ इस आपरेशन को करूँगी,मैं अभी एसीपी शर्मा जी से बात करने वाली हूँ,इस पूरे आपरेशन की तैयारी में कम से कम दो घँटे का वक़्त चाहिए,तुम जो खबर अपने आफिस में दोगी,वो खबर उन गुर्गो तक भी जरूर पहुंचेगी"मैंने सौम्या को बोला।

"क्या सच मे,आफिस का ही कोई आदमी इस खबर को उन लोगो तक पहुंचा देगा"सौम्या ने परेशानी भरे स्वर में बोला।

"तुम्हारे आफिस के उस मुखबिर के बारे में हम बाद में पता लगा लेंगे,अभी तुम वक़्त बर्बाद मत करो,जो बोला है उतना काम करो"मैंने सौम्या को बोला।सौम्या मेरी बात सुनते ही आफिस में फोन करने लगी थी। इधर मैं शर्मा जी को फोन लगा चुकी थी।शर्मा जी ने मेरा फोन चार पांच बेल जाने के बाद उठाया था।

"कहो रागिनी!कैसे याद किया! माफी चाहता हूँ कि मैं अनुज की ज्यादा मदद नही कर पा रहा हूँ,लेकिन मैंने अनुज से बात की थी,अगर वो निर्दोष है तो उसे कुछ नही होगा"शर्मा जी बिना कुछ कहे ही अनुज के बारे में सफाई देने में जुट गए थे।

"सर!आप अनुज की तरफ से बेफिक्र हो जाइये,अनुज तो कल उस केस से फ्री हो जाएगा,मुझे अभी आपकी मदद एक गैंगस्टर के खिलाफ एक पुलिस आपरेशन के लिए चाहिए"मैने शर्मा जी को बोला।

"बोलो कौन सा गैंगस्टर है,और क्या मामला है"शर्मा जी ने गंभीरता से पूछा।शर्मा जी के पूछते ही मैं सौम्या का पूरा मामला बताती चली गई,मैंने आज सुबह जेल से राजीव के मुलाकातियों से लिस्ट निकलवाने से लेकर धीरज बवानिया के गुर्गे चंदन की पूरी बात शर्मा जी को बता दी।

"मैं समझ गया रागिनी,मैं अभी डिपार्टमेंट में बात करके,स्पेशल ब्रांच से एक टीम वहां भेजता हूँ,उन लोगो की देखरेख में जो भी संभव हो वो तुम कर सकती हो,मैं अभी पंद्रह मिनट में कालबैक कर रहा हूँ"शर्मा जी ने मुझे आश्वासन दिया।उसके बाद मैंने फोन काट दिया।तब तक सौम्या भी आफिस में अपने आने की खबर दे चुकी थी।

"पुलिस को क्यो शामिल किया हैं"सौम्या ने फिर से मुझ से पूछा।

"हमे पता नही है कि कितने लोग वहां तुम्हारे स्वागत में फूलों का हार लेकर खड़े है,भिड़ने को तो मैं सभी से अकेली भीड़ जाऊंगी,लेकिन उन हालात में तुम अकेली पड़ जाओगी,कम से कम पुलिस के एक दो लोग तुम्हारी हिफाजत के लिए रहेंगे तो मैं बेफिक्र होकर उन लोगो का बैंड बजा पाऊंगी,और फिर गोलीबारी में उनके दो चार लोग मार भी दिए तो सब कानूनी दायरे में आ जायेगा और हम पर कोई उसका दोषारोपण नही करेगा"मैने अपनी नीति सौम्या को समझाई।सौम्या ने एक बार फिर मेरी ओर मुरीद नजरो से देखा। हमारी गाड़ी अभी होटल सिद्धार्थ के गोलचक्कर पर ही थी कि शर्मा जी का नंबर मेरे मोबाइल पर चमकने लगा था।

"जी सर!"मैं फोन उठाते ही अदब से बोली।
"अभी तकरीबन एक घँटे में स्पेशल ब्रांच की टीम तुम्हारे पास पहुँच जाएगी,वे लोग सभी सादी वर्दी में होंगे,जो स्पेशल ऐसे ही मुठभेड़ के लिए विशेष ट्रेनिग लिए होते है,मैंने उस टीम के हेड इंस्पेक्टर प्रदीप भारद्वाज को तुम्हारा नंबर दे दिया है,वो अब तुम्हारे संपर्क में रहेगे"शर्मा जी ने मुझे बोला।
"ठीक है सर!मैं राजेन्द्र प्लेस के पेट्रोल पंप पर उन लोगो का इंतजार कर रही हूँ,उनके आने के बाद हम आगे की प्लानिंग बनाते हैं"मैने शर्मा जी को बोला।
"आल द बेस्ट रागिनी,हमारी बेस्ट टीम वहां आ रही है,चिन्ता करने की कोई जरूरत नही हैं"ये बोलकर शर्मा जी ने फोन रख दिया।
"यार सच मे किसी भी चीज़ को प्लान करने में तुम्हारे दिमाग का कोई जवाब नही है,यू आर द बेस्ट रागिनी"सौम्या की आवाज से ही उसकी खुशी झलक रही थी।
"सौम्या वो तो गुरु थोड़ी सी लापरवाही से इस वक़्त थाने में बैठे हुए है,नही तो उनसे बढ़िया प्लान तो मैं भी नही कर पाती"मैंने अपने गुरू या यूं कहिए कि श्री श्री 1008 गुरु घण्टाल अनुज की शान में कसीदे पड़े।
"यार तुम दोनो ही बेस्ट हो,तुम दोनो शादी क्यो नही कर लेती हो,तुम्हारे बच्चे भी बहुत इंटेलिजेंट और बहादुर होंगे"सौम्या ने मुस्कराते हुए बोला।
"क्यो मै ऐसे आज़ाद घुमते हुए तुम्हे अच्छी नही लग रही हूँ"मैंने सौम्या की बात पर ऐतराज जताया।
"अरे यार क्यो अपनी जिंदगी की वाट लगा रही हो,मुझें पता है कि अनुज भी तुम्हे पसंद करता है,बस वो तुम्हारी मार्शल आर्ट से डरकर तुम्हे प्रपोज नही करता है"सौम्या अब थोड़ी सी टेंशन फ्री होकर मेरी टांग खिंचाई में लगी हुई थी।
"गुरु और मुझ से डरेंगे,वो डरते किसी से नही है,बस वे मेरी रिस्पेक्ट करते है,और मैं उनकी उनसे भी ज्यादा रिस्पेक्ट करती हूँ"अभी मैं सौम्या की बकलोली का जवाब दे ही रही थी कि मेरे फोन पर एक अंजान नंबर बज उठा। मैने तुरन्त फोन उठाया।
"रागिनी जी!मैं इंस्पेक्टर प्रदीप भारद्वाज बोल रहा हूँ,स्पेशल ब्रांच से,आप हमें कहाँ पर मिलेगी"उधर से लाइन पर प्रदीप भारद्वाज थे।
"जी सर मैं राजेन्द्र प्लेस के पेट्रोल पंप पर एक गाड़ी में हूँ"मैने उन्हें बताया।
"ठीक है हम पंद्रह मिनट में आपके पास पहुंच रहे है,फिर मिलकर बात करते है"ये बोलकर प्रदीप जी ने फोन काट दिया। फोन कटते ही सौम्या फिर से शरारती नजरो से मेरी ओर देखने लगी थी।सौम्या भी आज मेरी और गुरु की शादी करवाकर ही मानने वाली थी,जबकि मेरे दिमाग मे इस वक़्त धीरज बवानिया के गुर्गे घूम रहे थे,जिन्हें अगले आधे घँटे में हमे ठिकाने लगाने की शुरुआत करनी थी।

धीरज बवानीया का सफाया-25

इंस्पेक्टर प्रदीप भारद्वाज अपने दिए हुए वक़्त के मुताबिक ही ठीक पंद्रह मिनट में उस पेट्रोल पंप पर पहुंचकर मेरे मोबाइल पर अपना नंबर चमका दिए थे।मैंने फोन बजते ही अपनी निगाहों को अपने आसपास घुमाया तो एक गाड़ी को पेट्रोल पंप से पहले ही खड़ा हुआ पाया।मैंने अपना हाथ निकाल कर उस गाड़ी की तरफ हिलाया। मेरे हाथ का इशारा मिलते ही वो गाड़ी कुछ ही पल में हमारी गाड़ी के बराबर में आ खड़ी हुई थी,और प्रदीप भारद्वाज जी हमारी गाड़ी में पिछली सीट पर आ चुके थे।
"आप मे से रागिनी कौन है"प्रदीप जी ने बैठते ही पूछा।मैने अपना हाथ ऐसे उठाया जैसे कोई विधार्थी कक्षा में सवाल का जवाब देते हुए उठाता है।मेरे ऐसे हाथ उठाये जाने से प्रदीप जी के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान खिल गई।
"इसका मतकब आप सौम्या जी है,और उन गैंगस्टर के गुर्गों से आपको खतरा है"प्रदीप जी,सौम्या से मुखातिब होते हुए बोले।
"जी"सौम्या ने बहुत संक्षेप में जवाब दिया।
"रागिनी जी!वे लोग इधर उधर छितराये हुए होंगे,या आसपास कहीं छुपे हुए होंगे,सवाल ये है कि उन्हें बाहर कैसे निकाला जाए"प्रदीप जी ने मेरी ओर देखते हुए बोला।
"जहाँ तक मेरी जानकारी है,वे लोग सिर्फ इसलिए यहाँ पर तीन दिन से घात लगाए हुए बैठे है,की वे सौम्या को देखते ही इस पर गोलियो की बौछार कर सके,इसलिए उन लोगो को बिल से बाहर निकालने के लिए मैं सौम्या को उन लोगो के सामने करने का खतरा मोल नही के सकती हूँ"मैंने सपष्ट लहजें में बोला।
"आपकीं बात बिल्कुल सही है,ऐसी सिचुएशन में तो मैं भी सौम्या जी को लेकर कोई जुआ नही खेलूंगा,अब इसमे हमारे पास बस एक ही तरीका बचता है कि हम उस एरिया की निगरानी करे और जो भी संदिग्ध नजर आता हैं,उसे पकड़कर पूछताछ करे"प्रदीप जी अपनी जगह सही बोल रहे थे।
"मेरे दिमाग में एक आइडिया है,मैं इस गाड़ी को लेकर पार्किंग में जाती हूँ,अगर वे ज्यादा ही उतावले हुए तो वे गाड़ी पर ही गोली चला सकते है,अगर मुझे गाड़ी से उतरने का वक़्त मिलता है तो हो सकता है कि मेरी शक्ल देखकर एकाएक गोली न चलाए,उसके बाद अगर कोई मुझे अकेली जानकर मेरे सामने आता है तो मैं उनसे निबट लूँगी"मैने अपना प्लान बताया।
"लेकिन इस प्लान में तो तुम्हारी जान को भी खतरा है रागिनी जी"प्रदीप जी ने मेरी ओर देखकर चिंतित स्वर में बोला।
"जान को खतरा तो हर समय रहता है सर!अभी पैट्रोल पर खड़े है,अगर यहाँ आग लग जाये तो सभी की जान खतरे में आ जाएगी,वैसे मैं खुद को बचाना जानती हूँ,आप

चिन्तामत कीजिये,अगर एक साथ पांच सात गोली भी मेरी ओर लपकती है तो वो मुझे छू भी नही पाएगी"मैंने आत्मविश्वास भरे स्वर मे बोला।
"नही!मैं तुम्हारी जान को भी खतरे में नही डाल सकती रागिनी,अगर ऐसी बात है तो मैं खुद जाउंगी,आप मुझे कवर करना बस,बाकी ऊपरवाले की मर्जी,जो होगा देखा जाएगा"सौम्या ने निर्भीक स्वर में बोला।
"अगर कुछ हो ही गया तो फिर तुम देखने के लिए रहोगी नही न मेरी बन्नो,अपना तो ये रोज का काम है,आज फिर से ये काम सही,अब तुम जाकर पुलिस की गाड़ी में जाकर बैठो,तुम्हारी गाड़ी में ये फायदा है कि कोई बिना नजदीक आये,मुझे निशाना नही बना पायेगा,और जो हमारे नजदीक आता है तो उसे हम दूर जाने लायक छोडते नही हैं"मैने मुस्करा कर सौम्या को बोला।सौम्या ने मजबूर नजरो से मेरी ओर देखा,और गाड़ी से उतरकर साथ वाली गाड़ी में जाकर बैठ गई।
"मैं इसी गाड़ी में पीछे छुपकर बैठ जाता हूँ,अगर कोई गाड़ी के नजदीक आकर हमला करता है तो,हम दो तरफ से उन्हें घेर सकते है"प्रदीप भारद्वाज भी जाबांज किस्म के पुलिस अधिकारी थे।
"ठीक है सर!जो लोग पैदल हमे कवर कर रहे होंगे,उन्हें बोलिये की जैसे ही कोई हमारी गाड़ी की ओर बढ़ता है,उन्हें तुरन्त अपने गन पॉइंट पर ले ले"मैने प्रदीप जी को बोला।
"ठीक है"ये बोलकर प्रदीप जी ने फोन मिलाकर तुरंत दूसरी गाड़ी में बैठे हुए अपने साथी को पूरे प्लान के बारे में समझाया। उनके फोन रखते ही उस गाड़ी से उतरकर चार पुलिसकर्मी उतरकर अगली रचना सिनेमा वाली बिल्डिंग की ओर तेज कदमो से बढ़ गए। सौम्या जिस गाड़ी में थी,वो गाड़ी वही खड़ी रही,उसमे दो पुलिस कर्मी सौम्या के साथ ही बैठें हुए थे। मुझे प्रदीप जी ने इशारा किया और मैंने गाड़ी को आगे बढ़ा दिया और उन पैदल पुलिसकर्मियों को पीछे छोड़ते हुए रचना सिनेमा के पास जाकर गाड़ी को रोक दिया।
"इसकी पार्किंग का रास्ता पिछले दरवाजे से है,इन लोगों को पैदल इधर से जाने दो,हम लोग घूम कर उधर से प्रवेश करते है"प्रदीप जी ने चारों ओर निगाह दौड़ाने के बाद बोला।
मैने प्रदीप जी के बोलते ही वही से गाड़ी को यू टर्न दिया और अगली रेड लाइट से गाड़ी को लेफ्ट टर्न देकर पहले कट से ही गाड़ी को नीचे उतरती चली गई,क्याकि वो सड़क किसी पहाड़ी की तरह से नीचे जा रही थी। मैंने गाड़ी को पार्किंग के गेट से अंदर किया,और गाड़ी को बिना रोके ही अंदर की तरफ दौडा दिया,मेरे साथ साथ प्रदीप जी की चौकन्नी निगाहे भी चारो तरफ देखती हुई जा रही थी। अधिकतर आफिस की छुट्टी हो जाने की वजह से इस वक़्त पार्किंग में खाली जगह की बहुतायत थी,मैंने उसके बावजूद गाड़ी को दीवार के साथ इस प्रकार से लगाया कि आपातकाल में हमे गाड़ी और दीवार के बीच की खाली जगह का फायदा मिल सके। वे सभी पुलिसकर्मी हमसे पहले ही छोटे रास्ते से पार्किंग के अंदर पहुंच चुके थे।वे सभी पार्किंग में आते ही इधर उधर छितरा चुके थे। तभी एक गाड़ी

तेज रफ्तार से हमारी ओर आई और बिल्कुल हमारी गाड़ी के नजदीक आकर उन्होने अपनी गाड़ी के ब्रेक लगाए।तभी उस गाड़ी का दरवाजा खुला। लेकिन मेरी नजर उनकी गाड़ी के अंदर हो रही हरकत पर पड़ चुकी थी,उस गाड़ी में कुल जमा चार लोग थे,जिनके हाथो में अब पिस्टल आ चुकी थी।मैंने अपनी तरफ का दरवाजा एक सेकेण्ड के सौवें हिस्से से भी कम समय मे खोला और गाड़ी से उतरकर गाड़ी और दीवार के बीच मे लेट गई। लेकिन तब तक एक गोली चल चुकी थी जो कि मेरी साइड का शीशा तोड़ती हुई मेरे ऊपर से गुजर कर दीवार में धंस कर अपना दम तोड़ चुकी थी।मैं किसी छिपकली की मानिंद गाड़ी के नीचे घुसी और गाड़ी के नीचे से ही पहले तो उस गाड़ी के दोनो टायरों में गोली मारी।तब तक ऊपर भी गोली बारी शुरू हो चुकी थी।शायद उन पुलिसकर्मियों ने उस गाड़ी को चारों तरफ से घेर लिया था,मैं वापिस पलटी और अपनी गाड़ी और दीवार के बीच मे खड़ी होकर एक साथ अपने पिस्टल के ट्रिगर को दबाती चली गई। मैने देखा कि प्रदीप जी भी गाड़ी से बाहर आकर उधर ही गोलिया बरसा रहे थे।पूरी पार्किंग में अफरातफरी का माहौल था,हर कोई अपनी गाड़ियों में सिर नीचे करके बैठा हुआ था।कमाल की बात ये थी कि उनकी तरफ से सिर्फ एक एक राउंड फायरिंग के बाद ही खामोशी छा चुकी थी।तभी प्रदीप जी ने हाथ उठाकर फायरिंग रोकने का इशारा किया।
"पार्किंग का मेन गेट बंद करवाओ,और एक आदमी अंदर वाले गेट से किसी को भी बाहर न जाने दे"प्रदीप जी ने चीखते हुए अपने मातहतों को आदेश दिया।उनका आदेश पाते ही दो लोग एक दम विपरीत दिशा में दौड़ गए।मैं अभी तक अपनी पिस्टल को उसी गाड़ी की दिशा में करके खड़ी हुई थी।कुल जमा चार मिनट में सब खत्म हो चुका था।
"गुड जॉब ब्रेवो गर्ल"तभी प्रदीप जी ने मेरी ओर अपने अंगूठे से थम्सअप का निशान दिखाते हुए बोला।उसके बाद बाकी दोनो पुलिसिये फूंक फूंक कर कदम रखते हुए उस गाड़ी के पास पहुंचकर अंदर झांकने लगे।
"सर!चारो लोग मारे जा चुके है"उनमें से एक पुलिसिये ने हमारी ओर देखते हुए बोला। उसकी बात सुनते ही मैं और प्रदीप जी गाड़ी के पीछे से निकल कर उस गाड़ी की ओर बढ़ गए।गाड़ी में चारों ही बन्दे जवान उम्र के लड़के थे,जिन्होने इतनी सी उम्र में ही जिंदगी जीने का गलत तरीका अख्तियार कर लिया था,और आज मौत ने भी उनके साथ भी गलत सलूक ही किया था।
"मैं अपने सीनियर को आपरेशन के सफल होने की जानकारी दे दूं,और फोरेंसिक वालो को भी बुला लू,क्योकि पुलिस मुठभेड़ की रिपोर्ट सबसे ज्यादा इस देश के मीडिया और मानवाधिकार वालो को देनी पड़ती है"प्रदीप जी ने मुस्कराते हुए कहा।
"कोई नही सर!हमले की शुरुआत उन लोगों ने की थी,ये सबूत तो यहां चारो और बिखरे पड़े है"मैंने प्रदीप जी को बोला।

"ठीक है,आप सौम्या जी को भी यहां के हालात के बारे में जानकारी दे दो,अभी इन लोगो की भी शिनाख्त करनी है कि मरने वाले कौन कौन हैं"प्रदीप जी ने मुझें बोला तो मैं सौम्या को फोन मिलाने लगी।

गुरु की पुलिस हिरासत से मुक्ति-26

वहां फैले हुए रायते को समेटने में दो घँटे का वक़्त और लग गया था।एहतियातन हमने सौम्या को न अभी उसके आफिस जाने दिया था और न ही वहां पार्किंग में ही आने दिया था।पार्किंग में मौजूद लोगों की चेकिंग में ही काफी समय जाया हो गया था।लेकिन जो सबसे खास बात थी,इस मुठभेड़ में खुद धीरज बवानिया मारा गया था। जिन चार लाशो को अभी कुछ देर पहले ही पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया था,उनमे से एक लाश धीरज की भी थी। धीरज बवानिया,चंदन,संध्या,कुमार गौरव की मौत के बाद भी अभी तक देविका और मेघना मेरी पहुंच से बाहर थी। उन चारों लाशो की जेब से उनकी जो आइडेंटिटी बरामद हुई थी,वो इंस्पेक्टर प्रदीप भारद्वाज के पास ही थी।धीरज के घर का पता मैंने ले लिया था,लेकिन अभी उसके उस ठिकाने की तलाश मुझे करनी थी,जहां से धीरज अपनी सारी गैरकानूनी गतिविधियों को संचालित करता था।

"चलिये अब यहां से निकलते है रागिनी जी,हमे पिछले गेट से   जाना पड़ेगा,क्योकि बाहर तो मीडिया का जमावड़ा लगा हुआ है"प्रदीप जी ने मुझे बताया।

"अभी ये सौम्या की गाड़ी क्या यही रहेगी"मैने गाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा।

"गाड़ी को यही रहने दीजिए,सुबह मंगवा लेना गाड़ी को,मैं आप लोगो को घर तक छुड़वा देता हूँ,वैसे इस मुठभेड़ में धीरज के मरने से सौम्या के ऊपर जो खतरा मंडरा रहा था,वो तो खत्म हो गया है,क्योकि जब गैंग का सरगना ही मारा गया तो,नीचे वाले तो खुद ही अंडरग्राउंड हो जायेगे"प्रदीप जी ने एकदम सही बात बोली थी।

"ठीक है!फिर तो आपकीं राय ही ठीक है,लेकिन अभी हमें घर ही छोड़ दीजिए"मैंने प्रदीप जी को बोला।

"ठीक है फिर आइए मेरे साथ"ये बोलकर प्रदीप जी पिछले गेट की ओर बढ़ गए।मैं भी उनके साथ कदमताल मिलाती हुई चल पड़ी।

****

सौम्या के घर पहुँचने में रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे।सौम्या तो जाते ही बेड पर ढेर हो गई। ढेर तो मैं भी हो चुकी थी,लेकिन दिमाग मे अभी तक घमासान चल रहा था। जिन लोगों के सहारे मैं देविका और मेघना तक पहुँचना चाह रही थी,वे लोग एक एक करके दुनिया से विदा लेते जा रहे थे।चंदन ने बताया था,की संध्या की मौत से तो खुद धीरज अपसेट था और वो देविका और मेघना को ढूंढने में लगा हुआ था। इसका तो साफ मतलब यही निकलता था कि उन दोनों का धीरज के किसी भी ठिकाने पर मिलना नामुमकिन था। मैंने एक नजर सौम्या पर डाली,वो गहरी नींद के हवाले हो चुकी थी।गुरु को कल सुबह थाने से बाहर निकालने के लिए तो मेरी थ्योरी पूरी तरह से तैयार थी,अगर खबरी वहां से संध्या के गांव वाले अनुज नाम के आशिक का कोई सबूत भी लाने में कामयाब हो गया तो,ये

सोने पर सुहागा हो सकता था।लेकिन पिस्टल पर गुरु की उंगलियों के निशान के बारे में तो तस्वीर तभी साफ हो सकती थी,जब देविका और मेघना हमारे कब्जे में आ जाये। सोचते सोचते घन्टा भर गुजर चुका था,लेकिन आगे के सारे रास्ते देविका पर जाकर खत्म हो रहे थे।क्या देविका के घर की तलाशी में कोई सुराग मिल सकता था।मेरे ख्याल से जेल से आने के बाद देविका और मेघना जहाँ कहीं भी है,दोनो साथ साथ ही है।अभी तक उन लोगों के पास धीरज बवानिया के मरने की खबर पहुंच चुकी होंगी।लेकिन इस वक़्त तो धीरज की मौत की खबर उनके लिए राहत भरी खबर होती।ऐसे ही सोचते हुए मुझे कब नींद ने अपने पंजो में जकड़ लिया,मुझे इसका पता ही नही चला।

****

अगली सुबह मैं अकेली ही अनुज के पास थाने आई थी।लेकिन आने से पहले मैं एसीपी शर्मा जी को सारे तथ्यों से अवगत करवा कर आई थी,और उन्होंने मुझ से रोहिणी थाने के एस एचओ माहेश्वरी साहब से बात करने का आश्वासन दिया था।सौम्या ने राधा से बोलकर सुबह ही अनुज का नाश्ता और लंच तैयार करवा दिया था।सौम्या को आज मैंने ही जिद करके उसके आफिस जाने के लिए मना लिया था।खबरी आज सुबह ही जयपुर से वापिस आ चुका था,और उसने मुझे आते ही एक लिफाफा सौंपा था,जिनमे कुछ फ़ोटोग्राफ और कुछ लव लेटर थे,जो खबरी संध्या की किसी रिश्तेदार सहेली से ये बोलकर लाया था,की इससे संध्या के असली कातिल जल्दी ही पकड़े जायेगे।खबरी को मैने सौम्या के आफिस में ही भेज दिया था,जहाँ उसने पूरे दिन आफिस का चपरासी बनकर आफिस में आने जाने वाले हर शख्स पर नजर रखनी थी। मुझे आशंका थी कि सौम्या के आफिस जाने से देविका या मेघना में से कोई भी सौम्या से मिलने की कोशिश कर सकता था।

"बड़ा तहलका मचाया हुआ है तुमने,भगवान सिंह बता रहा था कि किसी गैंगस्टर के एनकाउंटर में तुम भी पुलिस कार्यवाही में साथ थी,ऐसा चमत्कार कैसे हो गया"अनुज ने नाश्ता खत्म करने के बाद बात की शुरुआत की थी।

"वो एक लंबी कहानी है,वो थाने से बाहर चलकर बात करेगे,बस इतना समझ लो की सब शर्मा जी की मेहरबानी की वजह से हुआ है,और मैंने शर्मा जी को पूरी कहानी बता दी है कि तुम्हे कैसे साजिश का शिकार बनाया जा रहा हैं,और कौन लोग इसके पीछे हो सकते है,बाकी वो संध्या की डायरी में तुम्हारा जो नाम है,उसे भी हल कर लिया है"मैने गुरू की तरफ देखते हुए बोला।तभी एक सिपाही ने कमरे में प्रवेश किया।

"तुम्हे साहब बुला रहे है अपने कमरे में"सिपाही ने गुरु की तरफ देखते हुए बोला।सिपाही के बोलते ही मैं और गुरु,माहेश्वरी साहब के कमरे की ओर चल पड़े थे। कमरे में भगवान सिंह पहले से ही मौजूद था।

"शर्मा जी ने इस केस में कुछ नए तथ्यों के बारे में बताया है,उसको देखते हुए हम अभी तुम्हे हिरासत में नही ले रहे है,क्योकि इसी केस में कल एक गैंगस्टर की संलिप्ता देखने को

मिली है,जो तुम्हारी शिष्या रागिनी की मेहरबानी से ही पुलिस एनकाउंटर में मारा गया है,जिसकी वजह से आज पुलिस की भी काफी जय जयकार हो रही है,इस कारण से डिपार्टमेंट ने तय किया हैं कि इस केस की और गहराई से जांच करने के बाद ही हम किसी को अरेस्ट करे या पूछताछ के लिए हिरासत में ले"ये बोलकर माहेश्वरी साहब चुप हो गए।
"इसका मतलब बन्दा हाल फिलहाल खुद को आज़ाद समझे"मैंने हर्षित स्वर में बोला।
"हाँ अभी तो तुम आज़ाद ही हो अनुज"इस बार भगवान सिंह ने बुझे हुए स्वर में कहा।
"ये लीजिये!इन्हे देखने के बाद आपकी वो संध्या की डायरी में अनुज का नाम होने वाले तथ्य की भी हवा निकल जाएगी,संध्या के गांव में ही उसका एक आशिक था,इतेफाक से उसका नाम भी अनुज ही था,जिसने भी संध्या के कत्ल की साजिश रची है,उसे संध्या के आशिक का नाम पहले से ही मालूम था,इसलिए उसने संध्या की डायरी भी पुलिस के लिये उसके कमरे में प्लांट कर दी,जबकि पुलिस को संध्या के कमरे से और कुछ भी नही मिला,आपके उन देवप्रिय साहब ने बहुत कामचलाऊ जांच करी है इस केस में"मैंने भगवान सिंह की ओर देखते हुए तंज भरे स्वर में कहा। भगवान सिंह ने उस लिफाफे को अपने हाथ मे थाम लिया और उसके अंदर मौजूद फोटोग्राफ और लव लेटर को देखने लगा।
"अब इजाजत दे सरकार,आज रात तक क़ातिल को पकड़ने का वादा रागिनी ने किया हुआ है तो,उस वादे पर भी खरा उतरना है"इस बार गुरु ने माहेश्वरी साहब की तरफ अपना हाथ विदा लेने के अंदाज में बढ़ाते हुए बोला।जिसे माहेश्वरी साहब ने तत्प्रता से थाम लिया था,फिर उसी अंदाज में भगवान सिंह से भी विदा लेकर हम थाने से बाहर आ गए।

****

"देविका और मेघना गायब है,सबसे पहले उन्हें ढूंढना है"मैने गुरु की तरफ देखते हुए बोला।
"सिर्फ देविका और मेघना ही गायब नही है,एक बन्दा और भी गायब है"गुरु ने कुछ सोचते हुए कहा।
"कौन"मेरे मुंह से बरबस ही निकला।
"देवप्रिय,मुझे वो कल से एक बार भी थाने में नही दिखा है,हमे उसे सिर्फ ये सोचकर नही छोड़ना है कि वो पुलिस वाला है,वो पुलिस की वर्दी में कोई गुंडा भी हो सकता है,जिनका काम ही रिश्वत ख़ाकर अपराधियो को बचाने का होता है"गुरु ने देवप्रिय का नाम लेकर सिद्ध कर दिया था कि गुरु के दिमाग का कोई तोड़ नही है।मैंने मुरीद निग़ाहों से गुरु की ओर देखा।
"चलो पहले घर चलो,फ्रेश होकर कुछ सोचते है कि आगे क्या करना है"ये बोलकर गुरु थाने की चारदीवारी से बाहर निकल कर एक रिक्शा वाले को आवाज लगा चुके थे।

फिर एक लाश-27

थाने से पुलिस हिरासत से छूटने के बाद एक बार फिर से आपका ये सेवक कहानी के सूत्रधार की भूमिका में आ चुका था।
"गुरु क्यो न आज रात को ही देविका के फ्लैट की तलाशी ली जाए"रागिनी फ्लैट में कदम रखते ही बोली।
"ये आईडिया तो मेरे दिमाग में भी आया है,लेकिन पहले फ्रेश होकर कुछ खा पी लेते है,उसके बाद देविका और मेघना की भी खोज खबर लेते है"मैंने बाथरूम की ओर बढ़ते हुए बोला।रागिनी बाहर पड़े हुए सोफे पर लेट चुकी थी। कन्या वास्तव में बहुत मेहनती और दिलेर थी।मेरी किस्मत इस मामले में भगवान ने सोने की कलम से लिखी थी,की मेरे धंधे में मुझे रागिनी जैसी लड़की मेरी असिस्टेन्ट के रूप में मिली थी,और अब वो हर रोज अपने कैरियर में तरक्की की सीढिया चढ़ रही थी।मैं पंद्रह मिनट के बाद मस्त नहा कर बाथरूम से बाहर आया तो रागिनी मोबाइल में खोई हुई थी।
"बॉयफ्रेंड के साथ इतनी चैटिंग मत किया कर,आंखे खराब हो जाएगी तो छोड़कर चला जाएगा"मैंने रागिनी से चक्कलस की।
"गुरु अभी तो ये चैटिंग की बीमारी मुझे लगी नही है,लेकिन जिस दिन लग गई न,तो तुम चश्मा लगाकर देखा करोगे की रागिनी अभी आफिस आई या नही"रागिनी किसी भी मामले में कम नही थी,न बहादुरी में और न बकलोली में।
"फिर मोबाइल में क्या ताका झांकी कर रही है,इतनी देर से"मैंने फिर से पूछा।
"शादी विवाह की साइट पर अपने लिए कोई स्मार्ट और डैशिंग सा बन्दा ढूंढ रही थी,मम्मी पापा,आजकल रोज शादी के लिए पीछे पड़े रहते है"रागिन मेरी ओर देखकर मुस्कराकर बोली।
"ये तेरे सामने खड़ा बन्दा तुझे स्मार्ट और डैशिंग नही लगता"मैंने कुपित स्वर में बोला।
"स्मार्ट से ज्यादा मुझे तो तुम बेवकूफ लगते हो गुरु,जरा सी सुंदर लड़की देखी नही की दिमाग को सीधा अपनी खोपड़ी से उतारकर अपने घुटने में ले आते हो,आपकी इसी बेवकूफी का नतीजा है कि आज आपको थाने से दो दिन के बाद छुट्टी मिली है,तो स्मार्टनेस के मामले में तो तुम्हारे नंबर जीरो हो गए गुरु,बाकी रही डैशिंग होने की बात तो बिना स्मार्टनेस के डैशिंग बन्दे का क्या मैं अचार डालूंगी"रागिनी ने घुमाफिराकर मुझे रिजेक्ट ही करना था।
"कम्बख्तमारी,सीधा एक शब्द नही बोल सकती थी 'रिजेक्ट'इतना घुमा फिराकर ढेर सारी बेइज्जती करने के बाद रिजेक्ट करना जरुरी था"मैंने चिढ़े हुए स्वर में कहा।
"गुरु मै कौन होती हूँ!तुम्हे रिजेक्ट करने वाली,तीन सौ करोड की मालकिन सौम्या तुम पर दिलोजान से फिदा है,लेकिन आप उसे घास ही नही डालते,एक क़ातिल हसीना है

मेघना,बेचारी तुम पर बेइंतेहा फिदा थी,उसे ही तुमने जेल भिजवा दिया,पूरा वट है तुम्हारा दिल्ली शहर की हसीनाओं में,ये तो मुझे पता है कि तुम मेरे साथ मजाक करते हो"रागिनी अब मरहम भरे स्वर में बोली।
"अब बकलोली ही करती रहेगी या कॉफी भी बनाकर लायेगी,उसके बाद देविका के घर पर भी चलना है"मैंने रागिनी की बातों पर विराम लगातें हुए बोला।
"अब गुरु इस बकलोली की शुरुआत तो आपने ही कि थी,तो खत्म करना तो मेरा फर्ज बनता है न"रागिनी एक क़ातिल मुस्कान मुझ पर डालकर किचन की ओर बढ़ गई।इस वक़्त कॉफी की मुझे बेइंतेहा तलब लगी हुई थी।

****

मैं अपनी गाड़ी को देविका के फ्लैट से पहले ही एक जगह पार्क कर चुका था। इस वक़्त रात का एक बज चुका था। सेक्टर चौबीस की अंदरूनी सड़को पर इस वक़्त लोगो की आवाजाही बिल्कुल न के बराबर थी,कोई इक्का दुक्का गाड़ी ही हमे अभी तक नजर आई थी।हम सीधा फ्लैट पर पहुंचे और मैंने मास्टर की से ताला खोला। समूचे फ्लैट में अंधकार छाया हुआ था। मैंने आहिस्ता से दरवाजे को फिर से बन्द किया,तब तक रागिनी दबे पांव अंदर की ओर बढ़ चुकी थी।
"दरवाजा मैंने ही खोला है,इसका मतलब अंदर कोई नही है"मैंने रागिनी को बोला।लेकिन रागिनी ने मेरी बात को अनसुना किया और उन्ही दबे पांव से वो आगे बढ़ती रही। मैं भी अब रागिनी का ही अनुसरण करने के लिए मजबूर था।तभी उस अंधेरे में मुझे ऐसा लगा कि अंदर कि तरफ कोई बन्दा चल रहा है।मुझे अब रागिनी का दबे पाँव चलना समझ मे आया था।मैंने देखा कि रागिनी अपनी पिस्टल को भी अपने हाथ मे ले चुकी थी। तभी उस अंधेरे में भी एक साये को मैंने मेन गेट की तरफ दौडतें हुए देखा,शायद हम उसके बिल्कुल करीब पहुंच चुके थे,जिसका एहसास उसे हो चुका था,लेकिन मुझे नही हुआ था,मैने और रागिनी ने एक साथ दरवाजे कि तरफ जम्प लगाई,वो साया अभी दरवाजे के हैंडल को घुमाने की कोशिश ही कर रहा था,की रागिनी उसके पैरों से लिपट चुकी थी,जैसे ही रागिनी उसके पैरों में लिपटी,वैसे ही वो साया मुझ पर गिरा और मुझे लेकर जमीन पर गिर पड़ा,उसके लिपटे हुए बदन की लज्जत से मैं ये अंदाजा तो लगा चुका था कि मुझ से लिपटने वाली कोई लड़की थी।तभी रागिनी ने अपनी मोबाइल की टॉर्च की रोशनी उस साये के ऊपर फेंकी। उस रोशनी में उस चेहरे पर नजर पड़ते ही रागिनी के मुंह से बरबस ही निकला था।
"तान्या तुम" वो कोई तान्या थी,जिसे मैं नही जानता था।
"कौन है ये"मैंने रागिनी की तरफ देखकर पूछा।
"तुम लाइट जलाओ गुरु,फिर इसके बारे में इसके मुंह से ही सुनवाती हूँ"रागिनी के बोलते ही मैंने दरवाजे के पास ही स्विच बोर्ड को तलाश किया,और लाइट जला दी।तब तक

रागिनी,तान्या को उठाकर सोफे पर बिठा चुकी थी।
गुरु!एक बार अंदर चेक कर लो,की ये यहां क्या गुल खिलाने आई थी,तब तक मैं इस पर नजर रखती हूं"रागिनी ने मुझे बोला तो मैं अंदर के कमरे की तरफ बढ़ गया।
अंदर कुछ भी बिखरा हुआ नजर नही आया,सभी कुछ सही सलामत था,शायद ये लड़की हमसे कुछ समय पहले ही फ्लैट में घुसी थी।अब या तो इस लड़की की किस्मत खराब थी या हम लोगो की किस्मत अच्छी थी कि,ये लड़की यहां से कुछ नही ले जा पाई थी। मैं एक बार फिर से एक सरसरी नजर डालकर वापस रागिनी के पास आ गया।
"ये अभी अपने काम को शायद शुरू नही कर पाई थी,तभी हम लोग आ गए,और ये भागने की कोशिश करने लगी थी"मैंने रागिनी से बोला।
"किस फिराक में आई थी यहाँ तुम तान्या"रागिनी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा।
"जिस फिराक में तुम लोग आए हो,मुझे पक्का यकीन है कि देविका ने ही गौरव की जान ली है"तान्या ने बिफरे हुए स्वर में कहा।
"तुम्हारा गौरव से क्या लेना देना है"मैंने तान्या से पूछा।
"गौरव इसका बॉयफ्रेंड था"जवाब रागिनी ने दिया था।
"लेकिन देविका तो उसे अपना बॉयफ्रेंड बता रही थी"मैंने तान्या की ओर देखते हुए बोला।
"वो कुछ दिनों के लिए हमारी रूममेट थी,गौरव तब भी मेरा ही बॉयफ्रेंड था,फिर मैंने उसे गौरव की कंपनी में नौकरी दिलवा दी थी,तो कमीनी ने खुद गौरव को अपने जाल में फंसा लिया था,और उसके पैसे पर अय्यासी करने लगी थी"इस बार तान्या ने अपने,देविका और गौरव के बारे में मुझे बताया।
"तुम तान्या तक कैसे पहुँची"मेरे इस वक़्त इतने सवाल पूछने की एक ही वजह थी,की रागिनी ने अभी तक तान्या तक पहुंचने की कहानी नही बताई थी।
"संध्या तान्या की ही रूममेट थी,संध्या के रूम पर जब मैं अपनी इन्वेस्टिगेशन के लिए पहुंची थी तो,वहाँ मुझे तान्या मिली थी,तान्या ने ही मुझे धीरज बवानिया के बारे में बताया था,की वो संध्या का बॉयफ्रेंड था,उसके बाद सारी कड़ियाँ आपस मे जुड़ती चली गई,तभी मैं सौम्या की जान भी बचा पाई थी"रागिनी ने मुझे बताया।
"चलो इन सारी कड़ियों को हम लोग बैठकर बाद में जोड़ते है,इस वक़्त तो तान्या मैडम,अगर आप चाहती हो,की हम गौरव के कातिलों को जल्द से जल्द पकड़ ले तो इन लोगो के बारे में जो भी जानकारी जानती हो उसे बताने में जरा सी भी कोताही न करो"मैंने तान्या की ओर देखकर बोला।
"मैं हर हाल में गौरव को इंसाफ दिलाना चाहती हूँ,उन्होंने न सिर्फ मेरा प्यार मुझ से छीना है,बल्कि एक बूढ़ी माँ से उसके बुढापे का इकलौता सहारा भी छीन लिया है"ये बोलकर तान्या फफक पड़ी थी।

"फिर ये बताओ कि देविका का गौरव को मारने के पीछे क्या खास मकसद रहा होगा,अगर सच मे देविका ने ही गौरव का कत्ल किया है"मैंने तान्या से पूछा।
"देविका अब धीरज बवानिया के साथ मिलकर वसूली का धंधा करने लगी थी,धीरज और गौरव की मुलाकात मेरे ही रूम पर एक दो बार हुई थी,धीरज और देविका दोनो ही जानते थे कि गौरव के पास पैसे की कोई कमी नही है,वे लोग गौरव को देविका के साथ बने हुए एक सेक्स वीडियो के बल पर ब्लेकमेल कर रहे थे,उस वीडियो के बदले वो कुंडली वाले एक इंडस्ट्रियल प्लाट को अपने नाम करवाना चाहते थे,जिसके लिए गौरव किसी भी हाल में तैयार नही हो रहा था,उसी प्लाट की वजह से उन लोगो ने गौरव की जान ली है"तान्या ने एक नई बात को उजागर किया था।
"ये अलग अलग केस है रागिनी,मुझे शायद इस केस में मेघना की वजह से फंसाया गया है,तभी मेरी पिस्टल को चुराकर उस पिस्टल से संध्या को मारा गया है"मैने इस बार रागिनी की ओर देखते हुए बोला।
"सिर्फ मेघना ही नही,इस केस में कई एंगल जुड़े हुए अनुज,लेकिन इन बातों पर चर्चा करने के लिए ये जगह सही नही है,जिस तरह से हम लोग यहां आए है,उसी तरह से कोई और लोग भी यहां आ सकते है"रागिनी ने लाख रु की बात बोली थी,लेकिन मैं तो खुद चाहता था कि कोई इस वक़्त फ्लैट पर आए और इस केस की कुछ परते और खुले।लेकिन रागिनी भी अपनी जगह सही थी।
"तुम यहां पर क्या ढूंढने आई थी"मैने तान्या से पूछा।
"बस यही सोचकर आई थी कि शायद देविका के फ्लैट में कोई ऐसी चीज़ मिल जाये,जिससे मैं उसे गौरव का क़ातिल साबित कर सकूं"तान्या ने सपाट स्वर में बोला।
"तुम्हारी नजर में वो क्या चीज़ हो सकती है"मैने फिर से पूछा।
"कुंडली वाले प्लाट के कागजात,या फिर कोई ऐसा हथियार जिससे गौरव को मारा गया हो"तान्या को शायद खुद नही पता था कि वो यहां क्या ढूंढने आई थी,या वो हमें गोल गोल घुमा रही थी।
"तुम्हे पता है कि गौरव को कैसे मारा गया था"मैने अगला सवाल किया।
"हाँ !उसे पहले खूब दारू पिलाई गई थी,फिर उसे गला घोंटकर मारा गया था"तान्या ने वो बात बताई,जो सिर्फ पोस्टमार्टम रिपोर्ट ही बता सकती थी।
"गौरव को मारने से पहले दारू पिलाई गई थी,ये बात तुम्हे कैसे मालूम"मैने तान्या के चेहरे पर नजर गड़ाते हुए बोला।
"वो मुझे फैक्ट्री में काम करने वाले बाबा ने बताया था,वे चौकीदार है उस फैक्टरी में"तान्या लगभग हकलाती हुई बोली।
"बाबा ने बोला था कि उसे दारू पिलाई गई है तो,बाबा ने उस दारू पिलाने वाले को भी तो देखा होगा"मैंने नजर गड़ाए हुए ही उससे पूछा।

"बाबा ने ये नही बताया!बस इतना बोला की गौरव ने उससे बर्फ मंगवाई थी,तो उसने आईडिया लगाया था कि गौरव ने दारू पी होगी"तान्या ने परेशानी भरे स्वर में बोला।
"रागिनी एक बार इस पूरे फ्लैट की अपने हिसाब से तलाशी लो,तान्या को तो कुछ नही मिला,शायद हमे कुछ मिल जाये"मैंने रागिनी को बोला।रागिनी अजीब सी नजरो से तान्या को घूरती हुई उस फ्लैट में हर दराज को खोलकर देखने लगी।मै तान्या की बातों को समझ नही पाया था,एक तरफ तो वो बोल रही थी कि कुंडली के प्लाट के पेपर न कर पाने की वजह से धीरज और देविका ने गौरव को मार डाला और एक तरफ वो कुंडली के प्लाट के पेपर देविका के फ्लैट में ढूंढने के लिए आई हुई थी।
"अनुज जल्दी यहां आओ"तभी रागिनी की व्याकुलता से भरी आवाज मेरे कानों में पड़ी।रागिनी फटी हुई आंखों से बेड के नीचे कुछ देख रही थी।मैंने देखा कि तान्या ने रागिनी की आवाज सुनने के बाद भी अपनी जगह से हिलने का प्रयास नही किया था। मैं दरवाजे पर खड़ा हुआ एक नजर रागिनी पर डाल रहा था,और एक नजर तान्या पर डाल रहा था।
"इस बेड के नीचे एक लड़की पड़ी हुई है"रागिनी ने मेरी ओर देखते हुए बोला।रागिनी की बात सुनकर मैं कमरे में बेड के पास जाने की बजाय तान्या के पास लपक कर पहुंचा था।उसके पास पहुंचते ही मैंने उसके हाथ को अपने हाथों के काबू में कर लिया था।
"बता कौन है बेड के नीचे"मैने तान्या की ओर देखते हुए कठोर स्वर में पूछा।
"मुझे नही पता,मैं तो तुम लोगो से सिर्फ पांच मिनिट पहले ही आई थी"तान्या ने घबराए हुए स्वर में बोला।
"गुरु ऐसा लग रहा है कि इस लड़की को कहीं और से यहां पर डाला गया है,क्योकि इस रूम तो क्या पूरे फ्लैट में किसी संघर्ष के कोई निशान नजर नही आ रहे है"रागिनी ने अपना ओपिनियन बताया।
"लेकिन ये तो पता चले कि लड़की कौन है"मैंने रागिनी को बोला।
"क्या करे पुलिस को बुलाये क्या"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।
"लेकिन इस वक़्त अपनी यहां पर होने की पुलिस को क्या कैफियत देगे,उल्टा पुलिस हमे ही इस केस में अंदर कर देगी,क्योकि हम तीनों ही इस वक़्त यहां गैरकानूनी तरीके से अंदर आये हुए है"मैने अपना दिमाग दौड़ाया।
"तो हमे क्या करना चाहिए"रागिनी ने मेरी ओर देखकर पूछा।
"सबसे पहले तो इस फ्लैट से जितनी जल्दी हो हमे दूरी बना लेनी चाहिए,उसके बाद सोचतें है कि आगे क्या करना है"मैने रागिनी को बोला।तान्या खामोशी से बस स्याह चेहरे से हमारी बाते सुन रही थी।
"लेकिन हमारे फिंगरप्रिंट जो यहां वहां बिखर चुके है उनका क्या करे"रागिनी ने पते की बात बोली थी।
"उनके बारे में बाद में सोचेगे,पहले यहां से निकलो"मैंने उतावले स्वर में बोला।

"ये तो देख लो कि लड़की है कौन"रागिनी वहां से हिलने का नाम ही नही ले रही थी।लग रहा था,इस केस में एक बार सेंट्रल जेल के दर्शन होकर रहने थे।
"लड़की कौन है ये हम पुलिस के साथ आकर देख लेंगे,अब और ज्यादा क्यो अपने फिंगरप्रिंट यहाँ छोड़ रही हो,इस बार मेरे साथ साथ तुम भी अंदर जाओगी,तो फिर हमें कौन बचाएगा"मैने रागिनी को हकीकत समझाई।मेरी बात सुनते ही इस बार रागिनी ने दरवाजे की ओर बढ़ने में देर नही लगाई।मैंने अपनी जेब से अपना रुमाल निकाला,पहले उस स्विच बोर्ड से अपने फिंगर प्रिंट साफ किये,फिर उस रुमाल से लाइट बन्द की,और दरवाजे को लॉक भी रूमाल से साफ करके ही लगाया।उसके बाद हम तीनों उस फ्लैट से दूर होते चले गए।कुछ ही पल में हम अपनी गाड़ी में बैठ चुके थे।तान्या रागिनी के साथ पिछली सीट पर थी,और गाड़ी मेरे फ्लैट की ओर उड़ी जा रही थी।दिमाग मे अभी भी यही दौड़ रहा था कि वो लड़की आखिर थी कौन?

तान्या ने बताया की वो लाश किसकी थी-28

हम दस मिनट में रात की सुनसान सड़को का फायदा उठाते हुए मेरे फ्लैट पर पहुंच चुके थे।मेरे दिमाग मे अभी भी वो बेड के नीचे पड़ी हुई लड़की ही घूम रही थी।
"तुम देविका के फ्लैट तक कैसे आई थी"मैंने उस लड़की के बारे में सोचते हुए तान्या से पूछा।
"ई रिक्शा से,मेरा घर विजय विहार में ही है तो ई रिक्शा से आसानी से आ गई"तान्या मेरे इस अजीब से सवाल से बौखला सी गई थी।
"रात को एक बजे तुम्हे ई रिक्शा कैसे मिल गया"मुझे उसकी बात पर विश्वास नही हुआ था।
"मेरे घर के पास ही एक भैया रिक्शा चलाने का ही काम करते है,उन्हें बोला तो वो मुझे देविका के फ्लैट तक छोड़ गए थे"तान्या हर सवाल का जवाब सोचते हुए दे रही थी।
"रात को एक बजे!फिर तो उस रिक्शा वाले भैया ने जरूर पूछा होगा कि रात को एक बजे अचानक से जाने की क्या जरूरत पड़ गई"मैंने उसके जवाब में से नया सवाल निकाला।
"पूछा था!लेकिन आप क्यो मुझ से इतने सवाल पूछ रहे हो,क्या आपको मुझ पर शक है कि मैंने उस लड़की को मार कर वहां ले जाकर डाल दिया"इस बार तान्या मेरे सवालो से बेजार नजर आई थी।
"मैं शक कर रहा हूँ या नही!इस बात को दरकिनार कीजिये,ये बताइये आपने उस भैया को यहां आने की वजह क्या बताई थी"मैं अभी भी अपने उसी सवाल पर अडिग था।
"मेरी कोई सहेली बीमार है,उसे अभी मेरी जरूरत है,यही बोलकर मैं उसे वहां लेकर गई थी"तान्या जवाब सोच चुकी थी।
"आपने बोला था कि गौरव ने कुंडली वाले प्लाट के कागज देविका और धीरज के नाम से करने के लिये मना कर दिया था,उसके बाद भी तुम उन्ही प्लाट के पेपर वहां ढूँढने गई थी,ये मामला मुझे कुछ नही समझ नही आया"मैने उसके चेहरे पर अपनी तीक्ष्ण नजरें जमा कर पूछा।
"गुरू!मुझे तो लगता है की उस देविका के फ्लैट में जो लाश पड़ी है वो,देविका या मेघना में से किसी की है,जिसे इसने उन में से जिंदा बची हुई लड़की के साथ जाकर वहां छुपाया है"इसी बीच ने रागिनी ने भी अपनी सोच दर्ज करवाई।
"लेकिन अगर उस लाश को ही वहां छुपाने के मकसद होता तो तान्या को वही छोड़कर वो दूसरी लड़की क्यो चली गई"मैंने रागिनी की सोच से नाइत्तेफाकी जाहिर की।
"लेकिन गुरु लाश की हालत बता रही है कि लाश को वहाँ पर कहीं बाहर से लाकर डाला गया है,क्योकि वहाँ किसी भी प्रकार से किसी संघर्ष के निशान नजर नही आये है"रागिनी ने फिर से बोला।

"ये भी तो हो सकता है कि मरने वाली को संघर्ष करने का मौका ही न मिला हो,उसे अचानक से बातो में लगाकर मौत के चुंगल में जकड़ लिया गया हो,इसलिए हमें वहां पर किसी संघर्ष के निशान न मिले हो"मैने रागिनी को अपनी सोच से अवगत करवाया।
"फिर तो उस लड़की को मारने का सबसे सुलभ मौका तो सिर्फ तान्या के पास था"रागिनी भी अब तान्या की आँखों मे झाँककर सच को तलाश करने लगी थी।
"मैने मेघना को नही मारा,वो वहां पहले से मरी पड़ी थी"तभी तान्या किसी हिस्ट्रिया के मरीज की तरह से चिल्लाई।उसके चिल्लाते ही कमरे में गहरा सन्नाटा पसर गया।
"मेघना मारी गई"मेरे मुंह से बरबस ही निकला।
"शिकारन खुद ही शिकार हो गई"रागिनी के मुंह से भी स्वतस्फूर्त निकला।
"लेकिन उसे मारने की वजह क्या रही होगी,और उसे किसने मारा होगा"मैंने फिर से बोला।
"मुझे तो अभी तक इस पूरे केस में मेघना का रोल ही समझ नही आया है,तुम्हारे मुताबिक राजीव बंसल ने सौम्या को मारने की सुपारी धीरज को दी थी,फिर मेघना क्यो सौम्या को मारना चाहेगी,जैसा कि हम पहले सोच रहे थे कि मेघना जेल से बाहर आई ही सौम्या को मारने के लिए है"मैंने फिर से अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाए।
"मेघना को इस बात का इल्म तो था ही,की अपने ऊपर कोई भी खतरा महसूस होते ही वो तुम्हे जरूर बुलायेगी"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।
"हाँ!ये तो स्वाभाविक सी बात है"मैंने बोला।
"तुम्हारे सौम्या के साथ रहते हुए उनका प्लान कामयाब नही हो सकता था,इस बात को मेघना और राजीव बंसल अच्छी तरह से जानते थे,इसलिए पहले उन्होंने तुम्हे ही अपने रास्ते से हटाने की सोची होगी,इसलिये ये सब हुआ,तुम्हारी पिस्टल चोरी की,फिर उसी पिस्टल से संध्या को मारकर उसके कत्ल में तुम्हें फंसाया,अगर केस उस देवप्रिय के हाथो में ही होता और शर्मा जी की तुम पर छत्रछाया न होती तो तुम्हे बारह के भाव से नापने के लिए देवप्रिय तैयार बैठा था,फिर भी अपने प्लान में वे लोग पचास प्रतिशत तो सफल हो ही गए थे,लेकिन इस सब मे वे मुझे भूल गए कि एक अपने गुरु अनुज की भी शागिर्द है,जिसका नाम रागिनी है,अगर वे लोग मुझे याद रखते तो शायद वो सौम्या को भी मारने में कामयाब हो जाते,क्योंकि जाल तो उन लोगो ने बिछा ही रखा था"रागिनी ने मेरी ओर देखकर मुस्करा कर बोला।
"सवाल अभी भी वही है,फिर मेघना कैसे मर गई,क्या वो देविका के साथ किसी और खेल में भी शामिल थी,जिस वजह से हो सकता है कि देविका ने ही मेघना की जान ले ली हो"मैने नई बात बोली।
"कोई बड़ी बात नही!अपराधी मानसिकता के लोग अपने फायदे के लिए किसी को भी मार सकते है"रागिनी ने मेरी बात का समर्थन किया।

"तान्या की बातों में भी तो ढेर सारा विरोधाभास है,ये क्यो इतने झूठ बोल रही हैं"मेरा ध्यान एक बार फिर से तान्या की तरफ जा चुका था।
"अनुज सर!प्लीज! भगवान के लिए मुझ पर शक करना
बन्द कीजिये,मैं सिर्फ वहां कोई ऐसा सबूत ढूंढने गई थी,जिससे कि मैं गौरव के हत्यारो को फांसी की सजा दिलवा सकूं"तान्या ने पुरजोर लहजें में बोला।
"जब देविका के फ्लैट पर हमने उस लड़की की लाश को देखा,तुमने तभी क्यो नही बताया कि मरने वाली मेघना है"मैने एक बार फिर शक भरा सवाल ही पूछा।
"मैं घबरा गई थी,यही सोचकर कि कहीं तुम लोग मुझे ही कातिल न समझने लगो"ये बोलकर तान्या अपने दोनो हाथो से चेहरा छिपाकर अपने सिर को झुका कर बैठ गई थी।
"तान्या भी सौम्या की कंपनी में ही काम करती थी"रागिनी ने मुस्करा कर बोला।
"मतलब!मेघना,देविका,और तान्या सब एक ही जहाज के पक्षी है"मेरे मुंह से बरबस ही निकला।
"हाँ गुरु!लेकिन ये कुछ अजीब नही लगता"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।
"अजीब तो लग रहा है,लेकिन इन सब पापियों का एक साथ इक्कठा होने का कारण तो हमारे सामने है,सौम्या के साथ साथ वो अपने दुश्मनों को भी निबटाना चाहते थे,और उनका इल्जाम हम पर लगाकर हमे भी राजीव बंसल की बगल वाली खोली ही सेंट्रल जेल में दिलवाना चाहते थे"मैंने मुस्कराते हुए बोला।मेरी बात सुनकर रागिनी भी मुस्करा दी थी।
"लेकिन संध्या की देविका से क्या दुश्मनी हो सकती थी,और मेघना का मारा जाना भी कुछ हजम नही हो रहा है"रागिनी का दिमाग भी अब तक सोच सोच कर चक्करघिन्नी हो चुका था।
"संध्या और देविका की दुश्मनी की बाबत तो हमे तान्या ही बता सकती है,आखिर ये तीनों ही एक समय रूममेट रह चुकी है"मैंने तान्या की ओर देखकर बोला।
"संध्या और देविका में धीरज को लेकर तनातनी जरूर थी,लेकिन वो देविका के जेल जाते ही खत्म सी हो गई थी,और संध्या भी अपनी नॉर्मल लाइफ जी रही थी,धीरज देविका से तीन महीने पहले ही जेल से बाहर आ चुका था,इसलिये संध्या दोबारा से उसकी जिंदगी में दस्तक दे चुकी थी"तान्या ये बोलकर चुप हो गईं।
"क्या देविका की वजह से पहले धीरज और संध्या के संबंध खराब हुए थे" मैंने अगला सवाल किया।
"हाँ!दूसरे के बॉयफ्रेंड छीनने में तो उसे महारत हासिल थी,मेरे साथ भी वो ये हरकत कर चुकी थी,मैने ही उसे गौरव की कंपनी में नौकरी दिलवाई और उसने मेरा ही पत्ता साफ करवा दिया था"तान्या ने बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाई थी।
"लेकिन धीरज बवानिया एक गैंगस्टर के रूप में जाना जाता है तो पुलिस ने उसे गैंगस्टर एक्ट में क्यो नही बुक किया,वो इतनी जल्दी बाहर कैसे आ गया"मैंने हैरानी से बोला।

"वो सिर्फ पब्लिक की नजर में गैंगस्टर है,पुलिस की फ़ाइल में वो उस समय तक गैंगस्टर नही था,उसका कोई रिश्तेदार पुलिस में बहुत बड़ा अफसर है,उसकी मेहरबानी से बच जाता था,लेकिन इस बार ऊपरवाले ने ही इंसाफ कर दिया"तान्या ने बोला।
"तुम्हारी नजर में प्रेम त्रिकोण के चलते ही देविका ने संध्या का कत्ल किया और उस कत्ल में मुझे फ़साने की साजिश की,बिल्कुल यही वजह तो तुम्हारे पास भी थी,देविका ने तुम्हारे साथ भी वही किया था,जो उसने संध्या के साथ किया,फिर उसने तुम्हे क्यो नही मारा,या तुमने उसे क्यो नही मारा"मैने फिर से एक बार गौर से तान्या के चेहरे के भाव पढ़ने के प्रयास किये।
"कहीं ऐसा तो नही है कि उस बेड के नीचे देविका की ही लाश पड़ी हो,तुमने इस आशंका से उसे मार डाला हो कि कहीं संध्या की तरह वो तुम्हे न मार डाले,फिर तुम्हारे पास तो और भी बड़ा कारण है देविका को मारने का,गौरव का क़ातिल भी तो तुम उसी को मानती हो"इस बार रागिनी ने वाकई काम का पॉइंट बोला था।
"तुम लोग मेरे ही पीछे क्यो पड़े हुए हो,मैं कितनी बार बोलूं की मैने किसी को नही मारा है,वो लाश वहाँ पहले से मौजूद थी"तान्या ने अपना पुराना राग अलापा।
"अच्छा जब तुम फ्लैट में घुसी तो लाश कहां थी,मतलब तुमने लाश को पहली बार कहां पर देखा था"मैंने फिर से पूछा।
"जहाँ पर तुमने देखा था,वही पर मैंने देखा था"उसने बिना जिझक के जवाब दिया।
"तुमने तो बोला था कि तुम हमसे सिर्फ पांच मिनट पहले ही उस फ्लैट में पहुंची थी,तो तुमने फ्लैट में जाते ही अंदर बैडरूम में उस बेड के नीचे किस काम से झांका था"मैं सवाल दर सवाल किए जा रहा था।मेरे इस सवाल का उसके पास तत्काल कोई जवाब नही था।
"अच्छा ये बताओ,तुम उस फ्लैट के अन्दर गई कैसे थी,क्या उस फ्लैट की चाबी तुम्हारे पास थी,अगर थी तो,वो चाबी अभी भी तुम्हारे पास ही होनी चाहिए"इस बार रागिनी ने बिल्कुल उसके सामने आकर पूछा। वो बौखलाई हुई नजरो से कभी रागिनी को और कभी मेरी ओर देखे जा रही थी।तभी एक जोरदार थप्पड़ की आवाज उस कमरे में गूंज गई थी। रागिनी का हाथ का तमांचा पड़ते ही तान्या ने एक हाथ अपने गाल पर रखते हुए रागिनी को खा जाने वाली नजरो से घूरा।
"बहुत हो गया तेरा ड्रामा,ये बता तुम वहां गई किसके साथ थी,वहां पर लाश मेघना की नही देविका की पड़ी हुई है,अब ये बता किसके साथ मिलकर तुमने देविका को मारा है"रागिनी ने खतरनाक लहजें में उससे पूछा।
"वो कमीनी मरने के ही लायक थी,उसने पहले संध्या को मारा और फिर गौरव को मारा,उसके बाद भी अगर मै उसे जिंदा छोड़ती तो उसका अगला शिकार मैं ही बनने वाली थी"तान्या ने घायल स्वर में रागिनी को बोला था।

"अब आई हो न तुम लाइन पर,इतनी देर से दिमाग का दही किया हुआ था तुमने"रागिनी ने उसकी तरफ घूरते हुए बोला।
"अब जल्दी से उसका भी नाम बोलो,जिसके साथ तुमने ये कारनामा अंजाम दिया है"रागिनी ने फिर से पूछा।
"मुझे पुलिस के हवाले कर दो,मुझे अब जो भी बोलना होगा,पुलिस के सामने ही बोलूंगी"तान्या ने अजीब से जिद भरे स्वर में बोला।
"ठीक है!तुम्हारी ये इच्छा भी पूरी कर देते है,हमारे सामने बोलो या पुलिस के सामने बोलो,बात एक ही है"मैंने हमे ही सब कुछ बताने की कोई जिद नही की।
"कौन सी नई चाल चल रही है तू"इस बार रागिनी ने बदले हुए स्वर में बोला।
"मैं अब क्या चाल चलूंगी,मैंने कबूल तो कर लिया है कि मैंने ही देविका को मारा है"तान्या ने रागिनी की ओर देखते हुए जवाब दिया।
"पुलिस के आते ही तुम अपने बयान से पलट जाना,बोलना की देविका को हमने मारा है,क्योकि इस वक़्त उस फ्लैट में हमारी मौजूदगी के निशान जगह जगह मिल जायेंगे,बस जहाँ हमारे निशान मिले,तुम्हारा बयान काफी है,हमे फांसी पर चढ़वाने के लिये"रागिनी ने बड़ी दूर की सोची थी।
"चिंता मत करो,ये ऐसा कुछ नही कर पाएगी,जब से इसने इस फ्लैट में कदम रखा है,तब से इसकी हर पल की रिकॉर्डिंग मेरे पास है"मैंने रागिनी की वाजिब चिंता की तलवार को उसके सिर से हटाया।
"वाह गुरु!ये तो बढ़िया काम किया तुमने,लेकिन उस रिकॉर्डिंग में तो हमारा इकरारनामा भी आ जाएगा कि हम भी उस फ्लैट में मौजूद थे"रागिनी ने फिर से बोला।
"पुलिस को हम उस फ्लैट में मौजूद लाश के क़ातिल को थाली में परोसकर दे रहे है,उसकी एवज में ये छोटी सी गलती तो मैं माफ करवा लूँगा"मैंने रागिनी को दूसरी दुश्वारी से भी निजात दिलवाया।
"लेकिन लाख रु का सवाल अभी भी खड़ा है,की अगर देविका मर चुकी है,तो मेघना कहाँ है"रागिनी फिर से सोच में डूब चुकी थी। इस सवाल का जवाब तो मुझे भी चाहिए था।

देविका और मेघना की हत्या-29

"अब सबसे पहले हमें देविका के कत्ल की जानकारी पुलिस को देनी चाहिए"तभी रागिनी ने मेरी सोच को भंग किया।
"अभी दिन तो निकलने दो,नही तो पुलिस हमसे ही सवाल करेगी कि हमें क्या रात को सोते हुए सपना आया था कि देविका की लाश उसके फ्लैट में पड़ी है"मैने रागिनी को बोला।
"ये सवाल तो पुलिस हमसे दिन निकलने के बाद भी पूछ सकती है,लेकिन मेरे दिमाग मे एक आईडिया आया है,हम पुलिस को बोल सकते है कि हम देविका के गायब होने की वजह से देविका के फ्लैट की निगरानी कर रहे थे,तभी हमने इस लड़की को फ्लैट से निकलते हुए देखा,जब हमने इसे पकड़ा,तब हमारी पूछताछ में इसने कबूल किया कि इसने देविका को मारकर उसकी लाश को बेड के नीचे डाला है,इसकी बात को सुनकर हम इसकी बात की सच्चाई पता लगाने के लिए इसके साथ फ्लैट के अंदर गए,तब हमने वहां देविका की लाश को देखा,फिर हमने पुलिस को इसकी सूचना देना अपना राजधर्म और एक नागरिक का कर्तव्य समझा"रागिनी ने पल भर में ही पुलिस की हर पूछताछ का तोड़ तैयार कर लिया था।
"फिर इस मैडम को दोबारा देविका के फ्लैट पर लेकर चले"मैंने अपनी जगह से उठते हुए बोला।
"मुझे जाने दो न,वो कमीनी थी ही इसी लायक,उसे उसके कर्मो की सजा ही तो दी है मैंने,तुम लोग तो जानते ही हो की वो कितनी खतरनाक लड़की थी,अगर मैं उसे नही मारती तो वो मुझे मार डालती"तान्या ने इस बार अपने दोनो हाथ जोड़कर हमसे प्रार्थना भरे स्वर में कहा।
"देविका का कत्ल तुमने अकेले तो नही किया है,अगर अपने साथियो का नाम हमे बता दोगी,तो शायद तुम्हे बचाने के बारे में कुछ सोच सकते है"रागिनी ने उसकी और देखते हुए बोला।
"वो ब्लेकमेल कर रही थी,इसीलिए मारी गई"तान्या ने अचानक से बोला।
"क्या तुम्हें ब्लेकमेल कर रही थी,इस वजह से मारी गई"मैने उसकी तरफ देखते हुए पूछा।
"नही!मै तो उसकी इस वजह से दुश्मन थी,क्योकि मै उसके हर राज से वाकिफ थी,ब्लेकमेल तो वो किसी और को कर रही थी"तान्या ने शून्य में निहारते हुए कहा।
"किसे ब्लेकमेल कर रही थी"इस बार रागिनी ने व्यग्र स्वर में पूछा।लेकिन इससे पहले की वो कोई जवाब देती मेरे फ्लैट की घँटी घनघना उठी। इस वक़्त मेरे फ्लैट पर कौन हो सकता है,मैं यही सोचकर विस्मित नजरो से रागिनी को देख रहा था।
"कौन हो सकता है"मेरे मुंह से बरबस ही निकला।

"या तो पुलिस या फिर इस लड़की के साथी,जो हो सकता है कि देविका के फ्लैट से ही हमारे पीछे लगा हो"रागिनी ने अंदाजा लगाया।अब बजाने वाला बिना रुके घँटी बजाए चला जा रहा था।
"मैं दरवाजा खोलता हूँ,देखते है कौन है"मै ये बोलकर दरवाजे की ओर बढ़ गया। मैंने दरवाजा खोला।सामने सादी वर्दी में एसआई देवप्रिय खड़ा हुआ था।
"बहरे हो गए हो क्या जासूस साहब,जो पचास बार घँटी बजाने के बाद दरवाजा खोला है"ये बोलकर देवप्रिय ने अपने एक हाथ से मुझे हटाकर अंदर आने की कोशिश की।
"अंदर कहा घुस रहे हो जनाब!यही दरवाजे पर बोलो क्या काम है" मैं दरवाजे पर तनकर खड़ा हो चुका था।
"कानून के काम में टांग अड़ाने का अंजाम जानता है,यही से घसीटता हुआ तुझे थाने लेकर जाऊंगा"देवप्रिय ने मुझे धमकी दी।
"पहली बात तो गैरकानूनी काम तुम कर रहे हो,किसी के घर मे उसकी इजाजत के बिना तुम घुस नही सकते हो,और अगर तुम मेरे फ्लैट की तलाशी लेने आये हो तो मुझे सर्च वारंट दिखाओ!नही तो अगले आधे घँटे में तुम्हारे सारे सीनियर यही खड़े हुए नजर आएंगे,और यकीन मानना,जो वर्दी तुंम घर पर टांग कर यहां सादी वर्दी में आये हो न,वो वर्दी हमेशा के लिए घर पर ही टंगी रह जायेगी"मैने देवप्रिय को उसी की भाषा मे जवाब दिया।
"मेरे पास एक लड़की के किडनैप की काल आई हुई है,और मुझे पता चला है कि वो लड़की तुम्हारे घर मे ही है,किसी लड़की को किडनैप करने का मतलब तो जानते हो न"देवप्रिय अभी भी अपने पुलसिया हथकंडे आजमाने से बाज नहीं आ रहा था।
"रुको !मैं तुम्हारे थाने से ही पता कर लेता हूँ,ऐसी कोई काल आई भी है या नही,या मुझे फ़र्जी कहानी सुना रहे हो,थाने से यहां आते हुए,यहां के लिए अपनी रवानगी डाल कर आये हो या नही,या वो भी यहां से जाने के बाद डालोगे"ऐसा नही था कि हमारी आवाज अंदर तक नही जा रही थी,लेकिन रागिनी ने जरूर तान्या को कोई हरकत करनें का मौका नही दिया होगा।मैंने एक नंबर मिलाकर अभी अपने कान पर लगाया ही था,की देवप्रिय ने एक जोर का धक्का मुझें दिया और फ्लैट में घुसते हुए चला गया।
"देव मुझें बचाओ प्लीज,ये लोग मुझे मार डालेंगे,इन लोगो ने देविका को भी मार डाला"ये बोलकर तान्या वही सोफे पर बैठे हुए ही स्यापा करने लग गई थी।तभी रागिनी का एक जोर का थप्पड़ फिर से तान्या के मुंह पर पड़ा,तान्या की बाकी आवाज वही उसके मुंह में दफन हो चुकी थी।तभी देवप्रिय रागिनी की ओर झपटा,लेकिन रागिनी ने अपनी पसंदीदा किक पर उसे जहाँ का तहाँ रोक दिया।
"ज्यादा जोश में मत आओ देव बाबू,नही तो यही छत के पंखे से उल्टा लटका दूँगी,जो तुम हरकत कर रहे हो,वो किसी अपराधी की ही हो सकती है,किसी पुलिस अधिकारी कि तो नही हो सकती"रागिनी ने उसकी अकड़ एक सेकंड में ढीली कर दी थी।

"मैं एसएचओ माहेश्वरी साहब को यही बुला लेता हूँ,वो खुद ही इसकी असलियत बता देंगे कि ये यहाँ पर कौन सी काल पर आया है"मैंने इस बार माहेश्वरी साहब को फोन लगा दिया था। मैंने दीवार घड़ी पर एक नजर डाली,सुबह के चार बज चुके थे।माहेश्वरी साहब ने सात आठ बेल जाने के बाद फोन उठाया था।
"जनाब!इतनी सुबह आपको कष्ट देने के लिए माफी माँगता हूँ,लेकिन क्या आप इसी वक्त मेरे घर आ सकते है,आपके एसआई देवप्रिय बाबू मेरे घर पर आकर गुण्डागर्दी कर रहे है,और एक लड़की जो कि एक कत्ल में शामिल है,उसे अपने साथ नाजायज तरीके से ले जाना चाहते है"मैंने संक्षेप में महेश्वरी साहब को बात बताई।
"देवप्रिय वहां क्या कर रहा है,उसे तो दो दिन पहले ही सस्पेंड किया जा चुका है"माहेश्वरी साहब की ये बात सुनते ही मेरे अधरो पर मुस्कान खिल उठी थी।
"ठीक है सर!फिर तो आपका आना और भी ज्यादा जरूरी है जनाब"मैंने बोला तो उधर से उन्होंने तुरन्त पहुचने का आश्वासन दिया।मैंने फोन रखते ही एक तंज भरी मुस्कान के साथ देवप्रिय की ओर देखा।
"अब थाने तक घसीट कर ले जाने की बारी तुम्हारी है सस्पेंडेड पुलसीए"ये बोलते हुए मेरे होठो की मुस्कान और भी ज्यादा गहरी हो गई थी।देवप्रिय जहाँ खा जाने वाली नजरो से मुझे घूर रहा था,वही तान्या किसी भयभीत हिरनी की तरह हमारी और देख रही थी।
"अब बताओ तुम यहाँ कैसे पहुंचे,तुम तो सस्पेंड चल रहे हो,फिर कौन सी काल तुम्हारे पास आ गई,तुम्हे कैसे पता कि तान्या यहां हमारे पास है,तुम देविका के फ्लैट से ही हमारा पीछा कर रहे थे न"मैंने देवप्रिया की ओर देखते हुए बोला।
"तू साले गवर्नर लग रहा है,जो मैं तेरे सवालो का जवाब दूँगा"देवप्रिय अभी भी अपनी पुलिसिया अकड़ में था।
"तुम जानते हो,तुम इस वक़्त गैरकानूनी तरीके से मेरे घर मे घुसे हुए हो,इस वक़्त अगर मैं तुम्हें जमीन में गाड़ दूँ तो,कोई मेरा कुछ नही उखाड़ पायेगा,वैसे अपने कौंन से कर्म की वजह से तू सस्पेंड हुआ है ये तो बता दे"मैंने तंज भरे स्वर में देवप्रिय को बोला।
"रिश्वतखोर आदमी है,जरूर रिश्वत लेते हुए ही पकड़ा गया होगा"रागिनी ने भी उस पर तंज कसा।
"तान्या डार्लिंग!मुझे लगता है कि देविका को तुमने इसी के साथ मिलकर ठिकाने लगाया है,तभी ये तुम्हारे पीछे यहां तक दौड़ता आया है,ताकि अपना पुलिसिया रौब दिखाकर तुम्हे यहां से निकालकर ले जाये,क्योकि ये आया तो यहाँ पर उसी पुलिसिया जलाल के साथ था"मुझे अब इस देवप्रिय की हर हरकत संदिग्ध लग रही थी।तभी मुझे पुलिस जिप्सी के सायरन की आवाज सुनाई दी जो पल पल मेरे घर के नजदीक आती जा रही थी।जैसे जैसे वो आवाज नजदीक आ रही थी,वैसे वैसे देवप्रिय और तान्या दोनो के ही चेहरे पर ही बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

****

इस वक़्त माहेश्वरी साहब के साथ एसआई भगवान सिंह और चार कॉन्स्टेबल के साथ हम लोग देविका के फ्लैट में पहुंच चुके थे।चूंकि हम देविका की लाश के बारे में पहले से ही पुलिस को बता चुके थे,इसलिए माहेश्वरी साहब और भगवान सिंह बिना रुके ही सीधे बैडरूम में ही गए थे।

"सर!लाश से किसी किस्म की कोई बदबू तो आ नही आ रहा है,ऐसा लगता है आज रात को ही इस लड़की को मारा गया है"भगवान सिंह ने देविका की लाश को बेड के नीचे झाँकते हुए देखकर बोला।

"तुम फोरेंसिक टीम को बुलाओ,और इस फ़्लैट के चप्पे चप्पे की तलाशी लो,मुझे इस मामले में देवप्रिय की संलिप्तताके बारे में पता लगाना है,अगर वो भी इस मामले में शामिल हुआ तो डिपार्टमेंट की बहुत भारी बदनामी होने वाली है भगवान सिंह"माहेश्वरी साहब ने चिंतित स्वर में बोला।

"ये तो शुक्र है कि दो दिन पहले ही इसे सस्पेंड कर दिया गया था,नही तो जवाब देना भारी पड़ जाता सर"भगवान सिंह ने अपने साहब की हाँ में हाँ मिलाई।

"जनाब इन लोगो की एक साथी और थी,मेघना वो भी गायब है,उसके बारे में पता कीजिये सर!कहीं उसको भी इन लोगो ने न मार डाला हो"मैंने उन लोगों के करीब जाकर अपनी शंका व्यक्त की।

"एक बार यहां से लाश पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दे,उसके बाद इन लोगो से उस लडक़ी के बारे में भी पूछताछ करते है"माहेश्वरी साहब ने मेरी ओर देखते हुए बोला।

"लेकिन सर!जब ये केस शुरू हुआ था,तब इस केस का इंचार्ज देवप्रिय ही था,फिर वो इस केस में कैसे शामिल हो गया!मैं अभी तक ये नही समझ पा रहा हूँ"भगवान सिंह अपनी अलग ही पिपनी बजा रहा था।

"उसको इस केस से हटाने का कारण भी यही था भगवान सिंह,की वो इस केस की एकतरफा जांच कर रहा था,वो सिर्फ अनुज को ही इस केस में टारगेट कर रहा था"माहेश्वरी साहब ने बोला।

"यही तो मैं भी कहना चाहता हूँ सर,की जैसे देवप्रिय,अनुज को टारगेट कर रहा था,ठीक वैसे ही अनुज भी तो देवप्रिय को टारगेट कर सकता है"भगवान सिंह ने दौड़ाए तो अपनी समझ से अक्ल के घोड़े ही थे,लेकिन मेरी नजर में वो घोड़ो के चक्कर मे गधों को दौड़ा बैठा था।

"मुझे उसे फ़साने से या उसे टारगेट करने से क्या हासिल होगा जनाब"मैंने एक तिरछी नजर भगवान सिंह पर डालते हुए पूछा।

"फिर तो शायद सुबह के चार बजे हमने ही देवप्रिय को अपने घर आने का आमंत्रण भी दिया होगा,जिसे पाकर वो बन्दा दौड़ता हुआ आया और अनुज को बाकायदा धक्का देकर

घर मे घुस गया"रागिनी ने भी लगे हाथो भगवान सिंह को घेर लिया था।
"मालिक कोई भी जांच तर्क और तथ्यों के आधार पर होती है,ये शायद और किंतु परन्तु की उसमे कोई जगह नही होती"मैने भगवान सिंह की ओर देखकर बोला।
"तुमने खुद कबूल किया है कि तुम और रागिनी इस फ्लैट में आज रात को घुसे थे,तब तुम्हे ये लड़की तान्या यहां टकराई,जब तान्या यहां थी तो,देवप्रिय क्यो नही तुम लोगो से टकराया"भगवान सिंह ने अब तर्क के साथ बात की।
"जब हम फ़्लैट में आये थे,तब इस फ्लैट में घुप्प अंधेरा था,इस अंधेरे में ही तान्या ने यहां से भागने की कोशिश की थी,लेकिन वो हमारी सावधानी और सतकर्ता की वजह से भाग नही पाई,हो सकता है कि उस दरम्यान देवप्रिय भी यहां फ्लैट के अंदर ही हो,क्योकि उस वक़्त तक तो ये बन्दा हमारी सोच में भी दूर दूर तक नही था"मैने भगवान सिंह के तर्क का जवाब तर्क के साथ दिया था।
"साहब यहां एक खून की लकीर नजर आ रही हैं"तभी अंदर से बैडरूम के साथ वाले कमरे से एक कांस्टेबल की आवाज आई। हम लोग सभी उस कमरे की ओर तेज कदमों से दौड़े। उस कमरे में ठीक सामने एक दीवार में एक बड़ी सी अलमारी बनी हुई थी। खून की लकीर उस अलमारी के सबसे निचले हिस्से से बहती हुई कमरे में दूर तक जाकर सूख चुकी थी।
"इस अलमारी का दरवाजा खोलो" माहेश्वरी साहब ने उसी कॉन्स्टेबल को बोला।दरवाजा खुलते ही खून में डूबी हुई एक लड़की की बॉडी बाहर की ओर गिरी।उस बॉडी के गिरते ही वो कॉन्स्टेबल चिंहुँक के पीछे की ओर हटा।हम सभी की नजर उस लड़की के चेहरे पर जम चुकी थी।वो मेघना थी।

अपराधी कौन-30

"ये भी मारी गई"मेघना की लाश पर नजर पड़ते ही मेरे मुंह से अफसोसजनक लहजें में ये शब्द निकले थे।इंसान की महत्वाकांक्षा उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है,मेघना इसका जीता जागता सबूत थी।राजीव बंसल से इश्क का चक्कर चला कर और सौम्या को रातो रात अपने रास्ते से हटाकर अरबपति बनने की जो अनैतिक महत्वाकांक्षा मेघना ने पाली थी,ये आज उसी का नतीजा था कि वो आज ऐसी बेरहम मौत मारी गई थी।
"मामला बहुत ज्यादा संगीन हो चुका है अनुज बाबू"भगवान सिंह के शब्दों ने मुझे मेरी सोच से बाहर निकाला था।
"मामला तो ये पहले दिन से ही संगीन था भगवान सिंह जी,अगर इन देवप्रिय साहब ने पहले से ही अपना ईमान न बेचा होता तो,देविका उसी रात पकड़ी जा सकती थी,जिस रात वो मेरी पिस्टल चुराकर भागी थी,उस दिन अगर ये साहब अपनी ड्यूटी को सही से अंजाम देते तो आज ये सब लोग शायद जिंदा होते"मैने भगवान सिंह को बोला।
"आम जनता और पुलिस के सोचने का नजरिया हमेशा अलग होता है,अनुज बाबू,हमे हर पहलू को सोचकर हर मामले की तह तक जाना होता है"भगवान सिंह अभी भी देवप्रिय को बचाने की जुगत में लगा हुआ था।
"मामले की तह तक जाने तक उस मामले की पूंगी बजा डालते हो,फिर क्या फायदा उस तह को जानने का भी,जब उस मामले के सब लोगो की लाशें बिछ चुकी होती है"मैंने भगवान सिंह की बात का जवाब दिया।
"छोड़ो गुरु!घी तो हमेशा खिचड़ी में ही जायेगा न,ये तो अपने कुलीग को ही बचाने की कोशिश करेंगे"तभी रागिनी ने लाख रु की बात फ्री में कह डाली थी।
"सब लोग रूम से बाहर जाइये,हमे क्राइम साइट को चेक करना है"फोरेंसिक टीम वहां पर पहुँच चुकी थी।मैं और रागिनी कमरे से बाहर आ गए।देवप्रिय और तान्या को भी कुछ पुलिसकर्मी घेर कर खड़े थे। हम लोग भी उन्ही के नजदीक जाकर खड़े हो गए।
"गौरव और संध्या का कत्ल होना तो समझ मे आता है,लेकिन ये मेघना और देविका को क्यो मार डाला"मैने उन दोनों पर नजर डालते हुए कहा।
"साले ज्यादा शानपत्ति मत दिखा,अभी सब पता चल जाएगा कि किसने किसको मारा है,तुम्हारे रात को एक बजे इस फ्लैट में घुसने के सारे सबूत है मेरे पास,तुम दोनो ने ही इन दोनो को मार कर डाला है,क्योकि ये दोनो तुम्हारी क्लाइंट सौम्या की जान की सबसे बड़ी दुश्मन थी,उसी के कहने पर तुमने इन दोनों को हमेशा के लिए खत्म कर दिया।
"देव डार्लिंग!हम लोग जासूस है न कि सुपारी लेकर किसी की जान लेने वाले भाड़े के टट्टू,लेकिन तुम्हे किसने बताया कि ये दोनों सौम्या की जान की सबसे बड़ी दुश्मन थी"मैने अपनी शक्की निग़ाहों से उसकी ओर देखा।

"मुझे सब पता है,इन लोगो ने पहले भी सौम्या की जान लेने का प्रयास किया है,और हर बार तुमने ही सौम्या को बचाया है"देवप्रिय ने एक कुटिल मुस्कान के साथ मेरी ओर देखते हुए बोला।
"सौम्या मेरी क्लाइंट हैं,उसे उसके दुश्मनों से बचाकर रखना मेरा फर्ज है,लेकिन हम लोगो को बचाते है,किसी को मारतें नही है"मैंने देवप्रिय को फिर से जवाब दिया।
"लेकिन गुरु!मुख्य सवाल तो अभी तक सवाल ही बना हुआ है कि मेघना और देविका क्यो मारी गई,हमारी अभी तक कि थ्योरी में तो सारे प्लान की मास्टरमाइंड ये दोनों ही थी,और दोनो ही सौम्या को मारने की और तुम्हे फंसाने की पूरी प्लानिंग करने के बाद जेल से बाहर आई थी,फिर इन चोर को ही मोर कैसे पड़ गए,और सबसे बड़ी बात!ये देव भैया कब इन लोगो के साथ गलबहियां हो गए,और आज तो ये खुद ही इतने उतावले हो गए कि खुद ही हमारे सामने आकर एक्सपोज़ हो गए"रागिनी ने देवप्रिय की ओर देखते हुए बोला।
"चिंता मत करो आज इस देव भैया की ही जन्मकुंडली निकालूंगा,लगता है इस बन्दे की जन्मकुंडली में ही सारे पाप ग्रह आकर बैठे हुए है जो,हमे असली मास्टरमाइंड तक लेकर जायेगे"मैं ये बोलकर एक बार फिर से उस कमरे की ओर बढ़ गया,जिस कमरे में मेघना कि लाश पड़ी हुई थी।तब तक फॉरेंसिक टीम के मुखिया मल्होत्रा साहब भी वहां पहुंच चुके थे। मल्होत्रा साहब से मेरी मुलाकात पहले भी ऐसे कई मौकों पर हो चुकी थी,जब उन्हें मै उसी लाश के नजदीक मिला हूँ,जिसकी जांच करने के लिए वे आये हुए होते थे।
"अरे अनुज साहब आप भी हो क्या यहां!माफ करना आप पर मेरी नजर नही पड़ी थी,लेकिन लगता है कि डिपार्टमेंट ने अब आपकी भी हर लाश के पास आपकी मौजूदगी लाजिमी कर दी है,इसलिए आप हर जगह टकरा जाते हो"मल्होत्रा साहब ही एकमात्र ऐसे शख्स थे,जो सामने किसी बन्दे की लाश पड़ी होने के बावजूद मुस्करा सकते थे।
"अब इस मामले में आपकी और हमारी किस्मत एक जैसी है मल्होत्रा साहब,अब तो लगता है कि अगर किसी दिन लाश न देखे तो हमे खाना ही नही पचेगा"मैंने मल्होत्रा साहब की ओर देखते हुए उन्ही की टोन में जवाब दिया। मेरा जवाब सुनकर अगर वो कमरे से बाहर होते तो अपनी आदत से मजबूर होकर ठहाका मार कर हँस पड़ते,लेकिन इस वक़्त मेघना की लाश के सम्मान में वो एक गहरी मुस्कान लेकर रह गए।
"मल्होत्रा साहब कुछ अंदाजा है कि इस लड़की का कत्ल हुए तकरीबन कितना समय हो चुका होगा"मैंने मौके का फायदा उठाकर अपने मतलब का सवाल पूछ लिया था।
"लाश से बहे हुए खून की फर्श पर जमावट बता रही है कि तकरीबन आठ घँटे से ज्यादा समय इस लड़की का कत्ल हुए हो चुका है,बाकी सही समय तो पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट ही बतायेगी"मल्होत्रा साहब ने तुरन्त मेरे सवाल का जवाब दिया था।
"कोई हथियार भी मिला है क्या,जिस से मेघना को मारा गया हो"मैंने फिर से पूछा।

"हथियार तो कोई नही मिला,लेकिन इस लड़की की गर्दन के पिछले हिस्से में बहुत नजदीक से गोली मारी गई है,और वो भी पॉइंट बाइस कैलिबर की पिस्टल से"मल्होत्रा साहब ने ये बात बोलकर मेरी परेशानी में और इजाफा कर दिया था। क्योकि पॉइंट बाइस कैलिबर की पिस्टल खासकर महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाई हुई पिस्टल होती है,अब अगर देवप्रिय जैसे खुर्राट पुलिसिया किसी को गोली मारेगा तो वो कम से कम पॉइंट बत्तीस कैलिबर की पिस्टल का प्रयोग तो करेगा।
"गुरु तुमसे कुछ बात करनी है"तभी रागिनी ने मेरे कान में बोला।मैं रागिनी की बात सुनते ही उसके साथ फ्लैट के दूसरे कोने की ओर चल दिया।

****

"गुरु!हमे सबसे पहले ये सोचने की जरूरत है कि मेघना और देविका को मारने का सबसे बड़ा उद्देश्य किसके पास हो सकता है"रागिनी ने मेरी ओर देखकर बोला।
"तान्या ने किसी ब्लेकमेलिंग की तरफ इशारा किया था,हो सकता है देविका और मेघना इन दोनों को ही किसी बात को लेकर ब्लेकमेलिंग कर रहे हो"मैंने रागिनी की बात का जवाब दिया।
"लेकिन गुरु एक ही जगह पर एक ही समय पर दो कत्ल कोई दो अलग अलग तरीको से क्यो करेगा,देविका की हत्या गला घोंटकर की गई है,जबकि मेघना की हत्या गोली मारकर की गई है"रागिनी ने मेरी ओर सवालिया निगाहों से देखा।
"अभी हमे सिर्फ मेघना के कत्ल के वक़्त का कोई अंदाजा है,देविका के कत्ल का सही समय तो उसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट ही बतायेगी,तब तक हम ये कैसे कह सकते है कि दोनो को एक ही वक़्त पर एक ही शख्स ने मारा है"मैने कुछ सोचते हुए बोला।
"गुरु!मल्होत्रा साहब मेघना के कत्ल में जिस पिस्टल के इस्तेमाल होने की बात कर रहे है,वो पिस्टल मैने किसी के पास देखा है"रागिनी की बात सुनकर मेरी आँखों की चमक बढ़ चुकी थी।
"किसके पास देखा है,मैने व्यग्र स्वर में पूछा।
"सौम्या के पास भी पॉइंट बाइस कैलिबर की पिस्टल को मैने देखा था,मेरे साथ उसने एक मौके पर उस पिस्टल को निकाला था"रागिनी की बात सुनते ही मेरी आँखो में उभरी हुई चमक अचानक से बुझ चुकी थी।
"लेकिन दुनिया में सिर्फ एक ही तो पॉइंट बाइस कैलिबर की पिस्टल नही है,देविका या तान्या के पास भी हो सकती है,मुझे नही लगता कि सौम्या के अंदर इतना साहस है कि वो किसी का कत्ल कर सके"मैंने तुरन्त रागिनी के शक का प्रतिवाद किया।
"गुरु!मैं तो उस सिद्धांत के तहत इस बात का जिक्र कर रही थी कि जब तक असल मुजरिम नही पकड़ा जाता है,तब तक सभी लोग हमारे शक के दायरे में आते है"रागिनी ने मेरी ओर देखते हुए बोला।

"तुम्हारी बात सही है रागिनी,लेकिन मेरा दिल नही मानता कि सौम्या किसी को मार सकती है,तुम उसको अपने दिमाग से निकाल कर किसी और के बारे में सोचो,और फिर पिछले तीन दिन से तो वो तुम्हारे साथ ही साये की तरह से साथ थी,फिर कैसे उसने किसी का कत्ल कर दिया"मैं लगातार अपने तर्क से रागिनी की बात को काटने का प्रयास कर रहा था।
"लेकिन गुरु जब मेघना और देविका का कत्ल हुआ वो मेरे साथ नही थी"मैं इस बार रागिनी की बात सुनकर अबोल हो चुका था।लेकिन मेरा दिल अभी भी इस बात को मानने को तैयार नही था कि,सौम्या इस कत्ल में शामिल हो सकती हैं।
"अगर ऐसी बात है तो,मैं एक बार खुद सौम्या से बात करके देखता हूँ,मुझे यकीन है कि वो मेरे सामने झूठ नही बोल पाएगी"मैंने बुझे हुए स्वर में कहा।
"लेकिन उस वक़्त मैं भी तुम्हारे साथ रहूंगी गुरू,और बात भी मैं ही करूँगी"रागिनी की बात सुनकर मैंने सहमती में अपनी गर्दन को हिलाया।तभी मैंने देखा कि पहले देविका की लाश को पैक करके स्ट्रेचर पर बाहर ले जाकर एम्बुलेंस में रखा जा रहा था,उसके बाद मेघना की लाश को भी उसी प्रकार से एम्बुलेंस में रखा गया। पूरे फ्लैट के फोटो ग्राफ और वहां पर मौजूद निशानों को उठाया जा चुका था,मेरे रागिनी और तान्या और देवप्रिय के हाथों और कदमो के निशान भी फोरेंसिक वाले लोग ले चुके थे,जिसकी रिपोर्ट कम से कम बहत्तर घँटे में आनी थी।
"चलिये साहब!इस फ्लैट को अभी सील करना है"तभी एक सिपाही ने हमारे करीब आकर बोला।उसकी बात सुनकर मैं और रागिनी खामोशी से फ्लैट से बाहर आ गये। बाहर तान्या और देवप्रिय को पुलिस की जिप्सी में बैठाया जा चुका था।तभी एसआई भगवान सिंह हमारे नजदीक आया।
"जासूस साहब,,हमारे साथ ही थाने चलोगे या अपनी गाड़ी से थाने आ रहे हो"भगवान सिंह ने मुझ से पूछा।
"अगर हम लोगो को भी आपने हिरासत में लिया है तो कानूनी रूप से आपकी जिप्सी में चलने के लिए मजबूर है जनाब,नही तो हम अपनी गाड़ी से तो आपके बिना कहे भी थाने ही आ रहे है"मैंने भगवान सिंह की टोन में ही उसे जवाब दिया।
"साहब का आदेश नहीं है तुम्हे अरेस्ट करनें का,नही तो कत्ल की परिस्थितियों को देखकर और घटनास्थल पर तुम्हारी मौजूदगी को देखते हुए तुम्हे अरेस्ट करना तो बनता है,बहरहाल तुम लोग अपनी गाड़ी से आ सकते हो"अफसोस जनक लहजें में बोलकर भगवान सिंह जिप्सी की जा चुका था।मैं रागिनी के साथ अपनी गाड़ी की ओर बढ़ गया। मैंने गाड़ी को स्टार्ट करते ही उसे जिप्सी से विपरीत दिशा में घुमा दिया।
"क्या हुआ,अभी थाने चलने का इरादा नही है क्या"रागिनी ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।
"पहले अपने पंजाबी पूत से मिलने जाना है"मैंने रागिनी की ओर देककर बोला।

"रूपेश से मिलना है"रागिनी मेरे मुंह से पंजाबी पूत निकलते ही समझ गई थी।
"हाँ!तुम्हारे पास तान्या का नंबर है क्या,सौम्या और देवप्रिय का नम्बर तो मेरे पास है,मैं बिना किसी प्रूफ के सौम्या के ऊपर इतना बड़ा शक करके उससे बात नही करना चाहता,लेकिन अगर उसका इन लोगो के साथ कोई गठजोड़ मिला तो,बचाऊंगा तो मैं उसे भी नही,लेकिन इतने बड़े एम्पायर की मालकिन क्यो ऐसे छुटभैये लोगो के खून से अपने हाथ रँगेगी"मैंने रागिनी की तरफ देखते हुए बोला।
"गुरु!मत भूलो की मेघना,सौम्या के कॉलेज टाइम की साथी है,और एक समय उसी की सिफारिश पर उसे बंसल इंडस्ट्री में नौकरी मिली थी,तो मेघना,सौम्या की शुरुआती हालत के बारे के जानती है,तो वो किसी भी हाल में सौम्या के लिए मामूली तो रहेगी नही,और ये तीसरी बार है,जब मेघना ने सौम्या को मारने का प्लान बनाया है,अब हर बार तो गुरू तुम या मैं उसे बचा नही सकते न,तो सौम्या के पास तो मेघना को मारने का सबसे बड़ा उद्देश्य है"रागिनी ने अपना तर्क दिया।
"और देविका?जब वो मेघना को गोली मार सकती है,तो देविका को भी तो गोली मार सकती थी,उसे गला घोंट कर क्यो मारा"मैं उसके तर्क से असहमत तो नही था,पर वो मेरे गले नही उतर रहा था।
"अभी जांच हो रही है गुरु,जरूरी नही है कि देविका को भी सौम्या ने ही मारा हो,हो सकता है,उसे उस शख्स ने मारा हो जिसे वो ब्लेकमेल कर रही थी,ब्लेकमेलिंग के बारे में तो तान्या भी इशारा कर चुकी हैं"रागिनी के शब्द अभी पूरे ही हुए थे कि मैं अपनी गाड़ी के ब्रेक केशवपुरम स्थित रुपेश के फ्लैट के बाहर लगा चुका था।

****

रूपेश कालरा!एक हरामी किस्म का पंजाबी पुत्तर था,जिसका काम ऑनलाइन लोगो के साथ ठगी का धंधा करना था,अपने इसी धंधे की वजह से वो जेल यात्रा भी कर आया था,दिमाग के मामले में इतना तेजतर्रार इंसान था कि ठगी की कोई भी एप्प वो खुद ही तैयार कर लेता था,यहां तक कि सरकारी वेबसाइट की भी क्लोन साइट तैयार करके लोगो को चुना लगाने में माहिर था। लोगो की कॉल डिटेल निकालना उसके लिए बाएं हाथ का काम था।एक केस में उसकी मेरी मुलाकात हुई थी,और तब से तकरीबन हर केस में मुझें उसकी सेवाओ की जरूरत पड़ती थी।वैसे आजकल वो ठगी के धंधो से दूर होकर पारुल नाम की एक लड़की के साथ मस्त जिंदगी बिता रहा था। पारुल आई तो उसके पास एक ठगी के धन्धे की एप्प बनवाने के लिए थी,लेकिन वो खुद ही ठगी का शिकार हो गई,और वो रूपेश के मोहपाश में बंध कर उसकी साथ रहने लगी।जब मैने रूपेश के दरवाजे के घँटी बजाई तो दरवाजा पारुल ने ही खोला था।हमे देखते ही उसके होठो पर एक गहरी मुस्कान उभर आई थी।

"आओ अनुज!आज तो बहुत दिनों के बाद हम लोगो की याद आई"पारुल ने रागिनी का हाथ अपने हाथ मे लेते हुए बोला।
"हाँ पारुल!आज मुझे तुम्हारे हाथ के नाश्ते की याद आ रही थी,इसलिए इतनी सुबह सुबह ही टपक पड़े,अपने रुपेश बॉबू कहाँ है?नजर नही आ रहे है"मैने फ्लैट में नजर दौड़ाते हुए कहा।
"हम भी यही है अनुज भाई!हम अपनी पारूल डार्लिंग को छोड़कर कहाँ जा सकते है"ये बोलकर उसने हमारे नजदीक आकर पारुल को अपनी एक बाजू में कस लिया।
"चलो तुम दोनो को साथ देखकर हमेशा अच्छा लगता है,पारुल तुम तो नाश्ता बनाकर लाओ,तब तक मैं जरा इस रूपेश से कुछ काम की बात कर लूं"मैने पारुल की ओर देखकर बोला।
"इतनी सुबह भी आप काम के वास्ते आये हो"पारुल ये बोलते हुए किचन की तरफ बढ़ गई।
"क्या हुआ गुरू!क्या काम पड़ गया"रुपेश ने हमे सोफे पर बैठने का इशारा करते हुए कहा।
"तीन नम्बरो की कॉल डिटेल चाहिए!जितनी जल्दी हो सके,ये समझ लो कि इस केस में तुम्हारे गुरु की भी गर्दन फंसी हुई है"मैंने रुपेश की ओर देखते हुए बोला।
"ठीक है गुरु!आज दोपहर तक तीनो नंबर की डिटेल मिल जाएगी,आप मुझे तीनो नम्बर लिखवा दो"ये बोलकर रूपेश ने एक दराज से मुझे कागज और पेन निकाल कर दिया। जिसे रागिनी ने पकड़ा और उस पर तान्या,सौम्या,और देवप्रिय के नंबर लिखने लगी।उसके बाद हम नाश्ते में गरमागरम परांठे और चाय पीकर वहां से रोहिणी थाने की ओर निकल गए।

****

थाने में हमारा ही बेसब्री से इंतजार हो रहा था। हम पर नजर पड़ते ही भगवान सिंह ने हमे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया।
"कहाँ रह गए थे अनुज बाबू,कब से तुम्हारा इंतजार कर रहे है"भगवान सिंह ने शिकायती लहजें में बोला।
"सुबह के अत्यंत आवश्यक कार्यो का निष्पादन करने के लिए अपने घर गए थे जनाब,आज पुरी रात जागकर आपके मुजरिम पकड़े है,अभी कुछ देर में इस पूरी साजिश से भी पर्दा उठा देगे"मैने विश्वास भरे लहजे में बोला।
"इलाके में चार चार मर्डर सिर्फ हफ्ते भर में हो गए है,इसलिए एसीपी शर्मा जी खुद आ रहे है,उनके सामने ही अब सब राज के पर्दे उठेंगे"भगवान सिंह ने मेरी ओर देखकर बोला।
भगवान सिंह ने जो खबर मुझें दी थी,वो मेरे लिए ज्यादा सकूं भरी थी,क्योकि शर्मा जी के सामने मै अपनी बात को बिना रोकटोक के और पूरे दमखम के रख सकता था। लेकिन शर्मा जी ने आते आते दोपहर के दो बजा दिये थे।

"माफ करना!किसी अर्जेंट काम से हैडक्वार्टर जाना पड़ गया था,इस वजह से आने में देर हो गई थी। इस वक़्त हम सभी लोग एसएचओ माहेश्वरी जी के रूम में बैठें हुए थे। शर्मा जी ने आते ही सबसे देरी से आने के लिए क्षमा मांगी थी।मैने रागिनी को अभी बाहर भेजा हुआ था,रुपेश ने दोपहर तक काल डिटेल देने का वादा किया हुआ था।
"अनुज!तुम अपनी हरकतों से कब बाज आओगे,इस बार फिर तुम मकतूल के घर मे उसका ताला खोलकर घुसे थे"शर्मा जी को शायद यहाँ की रात की पूरी रिपोर्ट दी जा चुकी थी।
"जहाँपनाह!मै तो अपनी नींद हराम करके वहां उसके फ्लैट
पर नजर रखने के लिए गया था,क्योकि वे दोनो मोहतरमा दो दिन से गायब थी,हम लोग बाहर से ही उस फ्लैट की निगरानी कर रहे थे,की हमे उस फ़्लैट से एक लड़की निकलती हुईं दिखाई दी,इतनी रात को उस लड़की को उस बन्द पड़े हुए फ्लैट से बाहर निकलते हुए देखकर हमने उस लड़की को दबोचा तो वो देविका की पुरानी रूममेट निकली,फिर हम उसे ये देखने के लिए फ्लैट में वापस लेकर गये की ये क्या गड़बड़ करके फ्लैट से निकली है"मै पहले से रागिनी की सुझाई हुई कहानी को रट चुका था।
"फिर जब तुमने फ्लैट में लाश को देख लिया था,तुमने उसी समय पुलिस को सूचना क्यो नही दी"इस बार भगवान सिंह बीच मे ही टपक पड़ा था।
"जनाब अगर उस वक़्त मैं पुलिस को बुलाता तो आपके देवप्रिय बाबू सामने नही आते,जिन पर मुझे पहले से ही शक था कि वो बन्दा भी इन कातिलों की टोली से मिला हुआ था,मैं लड़की को वहां से अपने घर ले गया तो,देवप्रिय के मन में यही उथलपुथल चलती रही कि मैं पता नही तान्या से क्या क्या उगलवा रहा होऊंगा,इसी वजह से देवप्रिय सस्पेंड होने के बावजूद दौड़ता हुआ मेरे घर पहुंचा,और झूठी किडनैप काल की कहानी सुनाकर तान्या को वहां से जबर्दस्ती ले जाने का प्रयास करने लगा"मैने इस बार शर्मा जी की ओर देखते हुए जवाब दिया।
"उसके बाद क्या किया तुमने"शर्मा जी मुझें अपनी बात कहने का पूरा मौका दे रहे थे।
"जैसे ही देवप्रिय सामने आया,मैने उसी वक़्त माहेश्वरी साहब को पूरी बात बताई,साहब ने मुझे बताया कि देवप्रिय बाबू तो दो दिन पहले ही सस्पेंड हो चुके है,उसके बाद तो मेरे सामने पूरी कहानी शीशे की तरह साफ हो चुकी थी"मैंने बताया।
"जब तुम उस लड़की को पहली बार उस फ्लैट में दोबारा लेकर गए थे,तब तुमने दूसरी लड़की की लाश नही देखी"शर्मा जी ने फिर से पूछा।
"सच बताऊं सर!मैं उस वक्त उस लाश को वहां देखकर बहुत घबरा गया था,और मैं ये भी नही चाहता था कि तान्या हमारे पास से भाग जाए,इसलिए उस वक़्त दिमाग मे यही आया कि पहले तान्या को यहां से कहीं और लेकर चलो,तान्या को हमारे साथ देखकर तान्या के

साथी का सामने आना अवश्यम्भावी था,और वैसा ही हुआ भी"मैंने अपनी वाकपटुता का परिचय दिया।
"ये बात कुछ हजम नही हो रही है कि तुम और लाश देखकर डर गए"शर्मा जी मेरी रग रग से वाकिफ थे,मैं जानता था कि शर्मा जी को मेरी उस कहानी पर भी विश्वास नही हुआ होगा,जो मैने तान्या को वापस फ्लैट में ले जाने के बारे में सुनाई थी।
"सर!लाश से तो मैं कम घबराया था,लेकिन इस बात से ज्यादा घबराया था कि अगर लाश के साथ मैं यहां पर पुलिस को मिला तो,इस बार पुलिस मेरा रिमांड लिए बिना नही छोड़ेगी"मैंने सच्चाई बताई।
"अब आये न तुम लाइन पर,अब इस बात से तो इत्तेफाक करोगे न कि जब इस केस में तान्या और देवप्रिय से पूछताछ जितनी जरूरी है,उतनी ही तुमसे भी पूछताछ जरूरी है"शर्मा जी ने मेरी उम्मीदों के बिल्कुल उलट बात की थी।
"सर!इस गरीब पर ये अत्याचार किस लिये"मैने हैरानी से शर्मा जी की ओर देखते हुए बोला।
"क्योकि इतनी देर से तुम सिर्फ बातें कर रहे हो,कोई सबूत नही पेश कर रहे हो,न अपने बचाव में और न उन लोगो के अपराधी होने का"शर्मा जी ने नाराज स्वर में बोला।तभी रागिनी ने कमरे में कदम रखा।
"रागिनी मैडम आप कहाँ लापता थी,आपके गुरूदेव किसी दिन आपकी भी जेलयात्रा करवा देंगे" शर्मा जी आज पता नही किस मूड में आये थे।
"सर! ऐसे कर्म न तो मैं करती हूँ और न गुरु करते है,केस की इन्वेस्टिगेशन में थोड़ी बहुत जो कानून से इतर जाकर हमसे गलतियां होती है,उसमे भी कही न कही सिर्फ कानून की मदद करने की भावना ही छुपी होती है,जिन्हें आप जैसे दयालु अफसर बड़ा दिल रखते हुए माफ भी कर देते है"रागिनी की बात सुनकर शर्मा जी के चेहरे पर एक गहरी मुस्कान ख़िल उठी थी।
"अनुज बाबू!गुरु गुड़ रह गया और शागिर्द शक्कर हो गई है"शर्मा जी ने उसी गहरी मुस्कान के साथ बोला।तभी रागिनी ने मेरे कान में कुछ आकर बोला।
"सर!अब आप तान्या और देवप्रिय को भी यही बुला लीजिये,और उससे पहले इस आदमी को फोन करके यहाँ बुलवा लीजिये या इसे इसके ठिकाने से इसे उठवा लीजिये"मैने एक नंबर टेबल पर शर्मा जी के सामने पड़े एक नोटपैड पर एक नंबर लिखते हुए बोला।
"ये कौन है"शर्मा जी के साथ साथ इस बार माहेश्वरी साहब के मुंह से भी निकला।
"ये वो शख्स है जिसके साथ पिछले तीन दिनों में तान्या ने सबसे ज्यादा बात की,हथियारो की अवैध सप्लाई करता है,जिस पॉइंट 22 कैलिबर की पिस्टल से मेघना के गले मे गोली मारी गई है,वो पिस्टल इसी शख्स से तान्या ने खरीदी थी"मेरे इस बात से वहां एकबारगी तो सन्नाटा छा गया था।

"आप तान्या से इस आदमी का नाम लेकर पूछिये,ये मुकर नही सकती है"इस बार रागिनी ने जोर देकर बोला।
"भगवान सिंह!अब ले आओ उन दोनों को,अब उनसे पूछताछ करने का समय आ गया है"शर्मा जी ने भगवान सिंह को बोला। भगवान सिंह आदेश मिलते ही तुरंत कमरे से बाहर निकल गया।दो तीन मिनट के अंतराल में ही वे दोनो भगवान सिंह के साथ कमरे में प्रवेश कर चुके थे।
"मेघना को जिस पिस्टल से तुमने गोली मारी थी,वो पिस्टल तुमने कहाँ से खरीदी थी"शर्मा जी ने बिना किसी भूमिका के सीधा सवाल पूछकर तान्या के चेहरे पर अपनी नजर जमा दी थी।
"जवाब दो"कोई जवाब न पाकर शर्मा जी ने इस बार हल्के से गुस्से भरे स्वर में पूछा।
"सर!मैंने किसी को कोई गोली नही मारी,मुझे तो पिस्टल चलानी भी नही आती है"तान्या को अब तक सम्हलने का मौका मिल गया था।
"मतलब तुम सिर्फ गला दबा सकती हो,गोली नही मार सकती हो"इस बार मैंने तान्या को घेरा।
"तू क्यो हीरो बन रहा है भाई,साहब पूछताछ कर रहे है न,तो उन्हें ही पूछताछ करने दे"देवप्रिय मेरे सवाल से एकदम भड़कते हुए बोला।
"अगर दोबारा तेरी बिना पूछे आवाज सुनाई दी,तो मुझ से बुरा कोई नही होगा देव"शर्मा जी ने उसे तुरंत डांट लगाते हुए बोला।
"सर! ये सब इसी का किया धरा है,इसने अपनी क्लाइंट के रास्ते का कांटा हमेशा के लिए निकालने के लिए ही मेघना को गोली मार दी है"देवप्रिय अभी भी बोलने से बाज नही आ रहा था।
"कोई सबूत है तुम्हारे पास की ये सब अनुज का किया धरा है,सबूत दो मुझे,अभी इसे जेल भिजवाता हूँ"शर्मा जी ने भड़कते हुए कहा।
"साहब मेघना और देविका की मौत का सबसे ज्यादा फायदा सौम्या को हुआ है"देवप्रिय बिल्कुल वही सोच रहा था,जो सुबह हम लोग भी सोच रहे थे।
"कैसा फायदा,वो तो खुद अरबपति है,और ये दोनो लड़कियां तो खुद उसके यहाँ नौकरियां करती थी,तो जाहिर है कि इनके पास इतनी दौलत तो होगी नही की उन्होंने उस सारी दौलत को सौम्या के नाम कर दिया हो,और फिर सौम्या ने उस दौलत को जल्दी से जल्दी अपने नाम करवाने के लिए इन दोनों को मरवा दिया हो,मैं उस पूरी फैमिली को पिछले तीन सालों से जानता हूँ,इसलिए कुछ भी बोलने से पहले अच्छी तरह से सोच समझ लो"शर्मा जी देवप्रिय पर बुरी तरह से भड़क चुके थे।
"नही सर!मैं दौलत के बारे में बात नही कर रहा हूँ"देवप्रिय हड़बड़ा सा गया था।
"फिर किस बारे में बात कर रहे हो"इस बार शर्मा जी नम्र स्वर में बोले।

"सर!मेघना ने सौम्या को मारने की तीन बार प्लानिंग की थी,हर बार अनुज ने उसको बचा लिया,इस बार अपने सिर के ऊपर लटकती हुई तलवार को हमेशा के लिए ही हटा दिया"देवप्रिय इसी बात को लेकर सुबह मुझ पर इल्जाम लगा चुका था।
"तुम ये कहना चाहते हो कि उस तलवार को हटाने की सुपारी सौम्या ने अनुज को दी थी"शर्मा जी ने मुस्करा कर पूछा।
"जी जनाब!यही हकीकत है"देवप्रिय ने विश्वासपूर्वक बोला।
"लेकिन सौम्या को इस तरह से मरवाने की जरूरत क्या थी,अगर वे फिर से कोई हमला सौम्या पर करती तो क़ानून भी अपनी आत्मरक्षा का अधिकार सौम्या को देता है,सौम्या के साथ उसके निजी हथियारबन्द सुरक्षा गार्ड भी हर वक़्त साथ होते है,वो उनसे गोली मरवा देती"शर्मा जी ने कायदे की बात बोली थी।देवप्रिय ने अजीब सी नजरो से शर्मा जी की ओर देखा।
"सर!जो नंबर अभी आपको अनुज सर ने दिया है,वो एक अवैध हथियार बेचने वाला आदमी है,जिसकी पिछले तीन दिनों में तान्या से सबसे ज्यादा बार हुई है"इस बार रागिनी ने ये बोलते हुए तान्या की ओर नजर घुमाई तो उसने नजर चुराने का प्रयास किया।
"बताओ तान्या,इस आदमी से किस लिए बात की थी"शर्मा जी ने ही इस वक़्त पूरी बातचीत की कमान सम्भाली हुई थी।
"सर!मैं तो ये कहना चाहूंगा कि इस अजीत नाम के आदमी को ही उठवा लीजिये,वो खुद ही बता देगा कि उसने वो पॉइंट 22 कैलिबर की पिस्टल इसे कितने में बेची थी"इस बार मैने भी तान्या को घेरा।
"भगवान सिंह इस नंबर की लोकेशन चेक करो और ये आदमी जहाँ भी मिले इसे उठाकर लाओ,अब वो ही इस पूरे मामले से पर्दा उठाएगा"शर्मा जी के बोलते ही भगवान सिंह ने उस नंबर को लिया और कमरे से बाहर निकल गया।भगवान सिंह के जाते ही तान्या बैचेनी से अपना पहलू बदलने लगी।वो बार बार देवप्रिय की ओर देख रही थी,और देवप्रिय उससे अपनी नजरे बचाने की कोशिश कर रहा था।
"तान्या!वो अब तुम्हारे लिए कुछ नही करेगा,उसकी तो खुद गर्दन फंसी हुई है,वो तुम्हे क्या बचाएगा,उसकी तरफ अब उम्मीद भरी नजरों से देखना बंद करो,और जो भी सच्चाई है उसे बयान कर दो,शर्मा जी बडे दयालु इंसान है,वो तुम पर रहम करके बख्स भी सकते है"मैंने सही मौके को तान्या नाम की इस कमजोर कड़ी की पहचान कर ली थी।
"अनुज सर!मैंने कुछ नही किया,सब किया धरा इसी देव का है,इसी ने देविका को गला घोंट कर मारा था,और मेघना को भी इसी ने गोली मारी थी"तान्या पर मेरा काला जादू चल गया था।लेकिन तभी उसके साथ खड़ा हुआ देवप्रिय उस पर झपट चुका था।उसके झपटते ही मैं भी उस पर झपट चुका था,इससे पहले की माहेश्वरी साहब उठकर आते मै उसको

कब्ज़े में कर चुका था।तभी शर्मा जी ने बेल बजाई और एक साथ चार पांच कॉन्स्टेबल को अंदर बुलाया। उन सभी को देवप्रिय को अपने घेरे में लेने का आदेश दे दिया था।
"तान्या!अब तुम्हे घबराने की कोई जरुरत नही है,इसने अगर फिर से ऐसी हरकत की तो उसकी ऐसी हालत कर देंगे कि ये जिंदगी में कभी कुछ करनें के काबिल ही नही रहेगा"शर्मा जी ने तान्या को आश्वासन दिया।
"सर!जिस दिन संध्या का कत्ल हुआ था,उसी दिन ये उस केस की जाँच करने के लिए मेरे रूम पर आया था,क्योकि संध्या मेरी ही रूममेट थी"ये बोलकर तान्या को एक पल को चुप हुई।
"इन्होंने उस दिन मुझे बहुत बुरी तरह से डराया,यहां तक कि संध्या के कत्ल के केस में मुझे फंसाने की धमकी दी,मैं बहुत बुरी तरह से डर गई थी,इंसान को अगर कोई परेशान करता है तो वो पुलिस के पास जाता है,यहां तो पुलिस वाला ही मुझे डरा धमका रहा था,क्योकि मैं इतने बड़े शहर में यहां अकेली रहती हूँ,जांच के नाम पर ये मेरा मोबाइल भी अपने साथ ले गया,आज तक वो मोबाइल इसी के पास है,संध्या के मर्डर वाले दिन के बाद से जितने भी काल उस फोन से हुए है,वो सब इसी ने किए है,मै तो किसी भी हथियार बेचने वाले को जानती भी नही,इसने ही मेघना को सबसे पहले गोली मारी थी,उसके बाद इसने देविका को वहां बुलाया था,लेकिन इसने देविका को गोली नही मारी,बल्कि जब वो सोफे पर बैठी थी तो अपने रुमाल से उसका गला घोंटा था,उसके बाद देविका की लाश को उसके बैडरूम के नीचे सरका दिया,उसके बाद ये मुझे ये थोड़ी देर में आने के लिए बोलकर गया कि वो उस पिस्टल को नाले में फेंक कर अभी आ रहा है,जैसे ही ये बाहर गया,उसके पांच मिनट के बाद ही अनुज और रागिनी फ्लैट के अंदर आ गए"ये बोलकर तान्या एक बार फिर से चुप हो गई थी।उसकी बात सुनते ही शर्मा जी ने घूर कर मेरी तरफ देखा। मैने क्षमा प्रार्थी मुद्रा में अपने कान को हाथ लगाया,क्योकी तान्या के बयान ने मेरे झूठ की पोल खोल दी थी।
"फिर अनुज और रागिनी ने अंदर आकर क्या किया"शर्मा जी की जगह इस बार माहेश्वरी साहब ने पूछा।
"इनके अंदर आते ही मैं समझ गई थी कि देव की जगह कोई और आया है,इसलिए मैं दरवाजे की तरफ वहां से दौड़ी क्योकि फ्लैट में उस वक़्त दो दो लाशें पड़ी हुई थी,उन लाशो के चक्कर मे मैं न फंस जाऊं,इसलिए मैंने भागना ठीक समझा,लेकिन रागिनी और अनुज ने मुझे पकड़ लिया"एक बार फिर तान्या चुप हुई तो मैने टेबल पर रखा हुआ पानी का गिलास उसकी और बढ़ाया।जिसे लेने में तान्या ने कोई देरी नहीं कि,उसने एक ही सांस में पूरा गिलास खाली किया और मेरी ओर शुक्रिया भरी नजरो से देखा।
"उसके बाद रागिनी मैडम और अनुज मुझ से वहाँ आने का कारण पूछने लगें,मैं उल्टा सीधा जवाब देकर इन्हे घुमाने लगी,तभी रागिनी उस फ्लैट की तलाशी लेने के लिए देविका

के बेडरूम में गई,और वहां तलाशी लेते हुए उनकी नजर बेड के नीचे पड़ते ही उन्होंने आवाज लगाकर अनुज को बुलाया।अनुज ने उस लाश के बारे में मुझ से पूछा तो मैं एकदम से अंजान बन गई,उसके बाद अनुज और रागिनी मुझे वहाँ से अपने फ्लैट पर ले आये,वहाँ भी मैं अनुज और रागिनी को बरगला ही रही थी कि तभी देव वहां पर आ गया,उस समय इसके वहां आने पर इसने खुद को ही एक्सपोज़ कर लिया था"तान्या ने ये बोलकर इस बार देव की तरफ हिक़ारत भरी दृष्टि से देखा।
"उसके बाद की सारी कहानी तो आपको मालूम ही है मालिक साहब"मैंने माहेश्वरी साहब की ओर देखते हुए बोला।
"इस लड़की ने तुम्हे पूरा एक्सपोज़ कर दिया है देवप्रिय,अब तुम ये बताओ कि तुमने मेघना और देविका को क्यो मारा,और ये सारी साजिस किसके इशारे पर तुमने रची थी"शर्मा जी ने कठोर स्वर में देवप्रिय को बोला।देवप्रिय अपनी नजर झुकाये हुए चुपचाप नीचे की ओर ही देखे जा रहा था,ऐसे वक्त में इंसान सोचता है कि इस वक़्त धरती फट जाए और वो उसमे समा जाये।लेकिन ये पापी तमन्ना तो धरती ही फटने की कर रहा होगा,लेकिन उसमें समाने की कामना हमारी कर रहा होगा।
"बोल अब!या तुझ से बुलवाने के लिए तेरा थर्ड डिग्री रिमांड शुरू करवाऊँ"शर्मा जी पहली बार कुर्सी से उठकर उसके पास तक गए थे और उसके सिर के बाल पकड़ कर उसके चेहरे को ऊपर उठाया था।
"साहब गलती हो गई,इस बार बचा लो,फिर जिंदगी में दोबारा ऐसी गलती नही करूँगा"काफी देर के बाद देवप्रिय के मुंह से कोई बोल फूटा था।
"बेटा तुमने किसी को लात घुसे या थप्पड़ नही मारे है,जो तुम्हें माफ़ कर दूं,तुमने कत्ल किये है,वो भी दो दो कत्ल एक साथ,इसलिए माफी तो तुझे अब देश के राष्ट्रपति के अलावा कोई और दे नही सकता,इसलिए अब तेरी भलाई इसी में है कि तू अपनी रामकहानी आराम से सुना दे,तेरे साथ स्टाफ का होने की वजह से बस एक ही शर्म करूँगा की तू हमारी थर्ड डिग्री से बच जाएगा"शर्मा जी उसे तरीके से समझा रहे थे।
"रोहिणी थाने में तैनाती से पहले मेरी तैनाती महिला जेल में थी,वही मेरी मुलाकात मेघना से हुई थी,मेघना ने ही फिर मेरी जान पहचान देविका से भी करवाई थी,दोनो लडकिया गजब की सुंदर थी सर,जिस वजह से मैं उनके मोहपाश में बंधता चला गया,मेरी मेघना और देविका दोनो से ही अंतरंगता बढ़ती चली गई,उसी दौरान मेघना ने सौम्या और अनुज के बारे में बताया था,सौम्या ने बताया था, की सौम्या हमेशा अनुज की वजह से बच जाती हैं,और वो दो बार उसे मारने का प्रयास कर चुकी है,तब मैंने उसे विश्वास दिलवाया की इस बार वो अपने इरादो में सफल नही होगी,और इस बार सौम्या को मारने में जरूर सफल होंगे,हमारे बीच मे पूरा सौदा दो करोड़ रु में हुआ था,योजना के हिसाब से मुझे रोहिणी के उस थाने में अपनी पोस्टिंग करवानी थी,जिस थाने में अनुज का फ्लैट आता हो,मैंने दो

महीने पहले जुगाड़ से अपनी पोस्टिंग रोहिणी थाने में करवा ली थी। इन दो महीने में ही मेघना और देविका की भी जमानत होकर बाहर आ जाना था,जिसकी पूरी जिम्मेदारी एक बहुत बड़े वकील को मेरी मार्फ़त सौंपी गई थी"देवप्रिय सांस लेने के लिये एक पल को रुका,लेकिन उसने तुरंत ही फिर से बोलना शुरू कर दिया था।
"प्लान के मुताबिक देविका को अनुज के घर मे घुसना था और चाहे रात भर अनुज के घर में रहना पड़ता,लेकिन उसकी पिस्टल हर हाल में चुराकर लानी थी,जिसमें देविका कामयाब भी हो गई थी,फिर उसी पिस्टल से उसी रात को संध्या को घर से बाहर बुलाकर गोली मार दी,और उसकी लाश को झाड़ियों मे उस इलाके में लाकर डाला,जो मेरे अंडर में आता था,इस पूरे खेल में मेरा काम था, किसी भी तरह से अनुज को फँसा कर जेल भेजना,अनुज के जेल भेजते ही फिर हम लोग सौम्या को टारगेट करते,इसके लिए मेघना और देविका ने दोबारा से अनुज के साथ ही उसके घर मे जाकर उसकी पिस्टल वहां किचन में प्लांट कर दी,और उसे बरामद भी मैने ही खुद जाकर की थी,हमारा प्लान बिल्कुल ठीक चल रहा था,बस अब मुझे फोरेंसिक रिपॉर्ट का इंतजार था,मुझे पता था की उस रिपोर्ट में क्या आना है,रिपोर्ट आते ही मुझे अनुज को जेल भेज देना था,लेकिन यहां पर अनुज की मदद आपने कर दी,अनुज आपको मेरी नीयत के बारे में समझाने में कामयाब हो गया और मुझे एकाएक उस केस से ही हटवा दिया"ये बोलकर वो फिर से चुप हुआ।सभी लोग उसकी ओर ही टकटकी लगाये हुए देख रहे थे।
"लेकिन मैंने भगवान सिंह को इस बात के लिए सहमत कर लिया था,की ये सारा किया धरा अनुज का ही है"मेरी ओर देखकर देवप्रिय कुटिलता से एक फीकी सी मुस्कान अपने चेहरे पर लाया।
"इसी वजह से भगवान सिंह का भी व्यवहार मेरे साथ अचानक से बदल गया था,लेकिन तुम्हारी यही चाल तुम पर भारी पड़ गई,बातो बातो में भगवान सिंह ने तुम्हारी थाने में ही ड्यूटी के दौरान दारू पीने की आदत के बारे में मुझे बता दिया था,जिसके बाद मैंने तुम्हारी दारू पीते हुए की वीडियो बनाई और उसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दी और उस वीडियो को तुम्हारे कमिश्नर तक मैंने भेज दिया,उसके बाद तो तुम्हे सस्पेंड होने से कोई बचा नही सकता था,इसलिए कल रात को जब तुम मेरे घर मे घुसने की कोशिश कर रहे थें,तब मैंने तुम्हें जानबूझकर नहीं घुसने दिया था,क्योकि मुझें मालूम था कि तुम मेरा कुछ नही उखाड़ सकते थे,इसलिए ही मैने उसी वक़्त माहेश्वरी साहब को भी फोन करके बुला लिया था"मैंने उसकी कुटिल मुस्कान का जवाब पूरी कुटिलता से दिया था।रागिनी ने भी मुरीद नजरो से मेरी ओर देखा,क्योकि इस बात की जानकारी तो रागिनी को भी नही थी।
"मेघना और देविका को मारने की क्या वजह थी"शर्मा जी ने मेरी बात खत्म होते ही पूछा।
"अनुज को जेल नही भिजवा सकने के कारण उसने डील के दो करोड़ देने से मना कर दिया था,ऊपर से रागिनी की वजह से सौम्या को धीरज बवानिया के हाथो से मरवाने का

प्लान भी फेल हो गया था,बल्कि खुद धीरज ही मारा गया था,इतने झमेले में फंसने के बाद भी जब मेघना ने पैसे देने से मना कर दिया तो मेरा दिमाग घूम गया था,बस तभी उन दोनो को मारने का सोच लिया था"देवप्रिय अब कुछ भी बताने से संकोच नही कर रहा था।
"इससे आगे की रब दास्तान मुझ से सुन मेरे जिगर के छल्ले,तेरे इरादो को मैं पहले दिन ही पहचान गया था,जब तुम संध्या के कत्ल की सही से जांच करने की जगह सिर्फ सारी बेटिंग मुझे फ़साने के लिए कर रहा था, इसलिए हमारी एक अंडरकवर एजेंट हर वक़्त तुम्हारे साथ लगी हुई थी,तान्या को हमने ही शर्मा जी के साथ मिलकर तुम्हारे साथ प्लांट किया था,इसलिए तुम्हारे हर कदम की जानकारी हमारे पास रहती थी,अब समझ मे आया कि तू कैसे हमारे जाल में फंसा,आज शर्मा जी भी यहां इत्तेफाक से नही बैठें है,बल्कि तेरे लिए ही खासतौर पर यहां आए है,अब बस एक सवाल का जवाब और चाहिए,कुमार गौरव को किसने मारा था"मैंने सारे रहस्यों पर से पर्दा उठाते हुए पूछा।
"संध्या के कत्ल के वक़्त गौरव देविका के साथ ही था,कल को वो अपना मुंह किस के सामने न खोल दे,इस वजह से देविका और धीरज ने उसे बेहिसाब दारू पिलाकर उसका गला घोंट कर मारा था"मैंने देखा कि ये बात सुनते ही तान्या के चेहरे पर उदासी की काली घटा छा गई थी।
"जिस पॉइंट बाइस कैलिबर की पिस्टल से मेघना को मारा,वो पिस्टल कहाँ छुपाई है"मेरे तरकस में भी अब ये शायद आखिरी सवाल ही बचा था।
"सेक्टर चौबीस के नाले में फेंक दिया था उस पिस्टल को"देवप्रिय ने बेशर्मी से बोला।
"लो साहब!आपका हत्यारा आपके सामने है और बाकी हत्यारे खुद ही आपस मे एक दूसरे के शिकार हो गए"मैने एक हल्की सी मुस्कान के साथ शर्मा जी की ओर देखा।
"ले जाओ इसे,और लॉकअप में डाल दो,कल सुबह इसे कोर्ट में पेश करना है'शर्मा जी ने हिक़ारत भरी निगाहों से उसे देखते हुए बोला।शर्मा जी का आदेश पाते ही वहां मौजूद कॉन्स्टेबल उसे धकेलते हुए कमरे से बाहर ले गए।
कुछ देर बाद ही उस कमरे में कॉफी का दौर चल रहा था,शर्मा जी एक बार फिर से हम दोनों को मुरीद नजरो से देख रहे थे।
"सुनो!अब तुम लोगो को शादी कर लेनी चाहिए"तभी शर्मा जी ने मेरी और रागिनी की शादी का शिगूफा छोड़ दिया था।
"लगता है इस दुनिया में मेरी शादी के अलावा और कोई टॉपिक ही नही बचा है"रागिनी ने बेजार स्वर में बोला।
"रागिनी जल्दी से अनुज सर का हाथ थाम लो,नही तो मैं भी लाइन में लगी हुई हूँ"ये बोलकर तान्या बेबाकी से हँसी। उसकी इस हँसी में सभी ने मिलकर साथ दिया था।
समाप्त